

विज्ञापन ॥

“यह आश्चर्य्य प्रश्न विज्ञान,” जिसके द्वारा प्रति मनुष्य अपना २ भविष्यद्वृत्तान्त अति सुलभतासे जानकर तथा स्वर कार्यों में सावधान हो हानियों से पृथक् रहकर लाभही लाभ प्राप्त करसक्ता है, सम्पूर्ण प्रच्छकों के हितार्थ संस्कृत से भाषानुवाद कर प्रकाश की जाती है, कि इस के द्वारा सम्पूर्ण सज्जन गणा लाभ उठावें इति शम् ॥

२७-१२-६०
दुधेपुर

पं० गंगाप्रसाद शर्मा
दुधेपुर
जि० उन्नाव

॥ अन्तर्गुणश्रविज्ञानकी भूमिका ॥

१६ प्रश्न

१. क्या मेरी इच्छा सिद्ध होगी ।
२. क्या मिसकार्य में मेकटिवद्ध उसमें साफन्यता होगी ।
३. इसकार्य में शुभको हानि या लाभ होगा ।
४. क्या मेरा अमुक स्थान में आस योग्य है ।
५. क्या विदेशी पुनः लौट आवेगा ।
६. क्या चारोपहत द्रव्य पुनः मिल जायगी ।
७. क्या मेरा मित्र अपने समेदिलसे मित्रता करता है ।
८. क्या मेरी यात्रा होगी ।
९. क्या अमुक पुरुष मेरा सन्मान तथा प्रतिष्ठा करता है ।
१०. क्या यह प्याह होगा ।
११. मुझे किसतरहका घर या स्त्री मिलेगी ।
१२. क्या अमुक स्त्री के पुत्र वा कन्या होगी ।
१३. क्या अमुक रोगी रोग से निर्मुक्त होगा ।
१४. क्या अमुक बंदी बंदीघरसे हटेगा ।
१५. मैं भ्रान्त के दिन मसख या अमसख रहूंगा ।
१६. मेरे स्वमका फलादेरा क्या है ।

y'

प्रश्न संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख
२	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ
३	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब
४	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स
५	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द
६	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य
७	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ
८	ह	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग
९	ज	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह
१०	क	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज
११	ल	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क
१२	म	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल
१३	न	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म
१४	प	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न
१५	च	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प
१६	ख	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	प	च
शिंदु	:	-	::	"	"	:::	"	:::	:	:	::	:::	:	-	-	:::

ग	
१	यह मित्रों का शुभ चिन्तक है ।
२	द्रव्य न मिलेगी ।
३	विदेशी अचानक लौट आवेगा ।
४	स्वदेश में ही सर्व क्लेश निवृत्त हो- होजावेंगे ।
५	लाभ न होगा ।
६	ईश्वर सिद्धिदान करेगा ।
७	नहीं ।
८	शीघ्र शत्रुता से ब- चोगे ।
९	आजका दिन तुम को शुभ नहीं है ।
१०	बन्दी न छूटेगा ।
११	नैरोग्य होगा ।
१२	एक कुत्सित कन्या होगी ।
१३	एक सुन्दर युवक पर मिलेगा ।
१४	इसव्याह में क्लेश होगा ।
१५	मित्रता त्याग दो या तुम्हारी प्रतिष्ठा नहीं करता ।
१६	तुम दूर यात्रा न करोगे ।

च

- १ मित्रों में आनन्द होगा ।
- २ आजका दिन शुभ नहीं ।
- ३ प्रकाश में क्लेश है परन्तु परिणाम आनन्ददायी है ।
- ४ नैरोग्यताकी आश त्याग दो ।
- ५ पुत्रोत्पन्न होगा ।
- ६ तुम्हारा वर द्रव्यवान् होगा ।
- ७ इसका व्याह सिद्ध है ।

- ८ यह पुरुष बहुत स्नेह करता है ।
- ९ निर्भय यात्रा करो
- १० इस पुरुषका विश्वासन करो ।
- ११ सुख पूर्वक द्रव्य मिलेगी ।
- १२ विदेशी शीघ्र लौटेगा ।
- १३ अन्य स्थानमें रहना योग्य नहीं है ।
- १४ यात्रामें लाभ होगा
- १५ सिद्धि होगी ।
- १६ उपस्थित ही में सतोष रक्खो ।

- १ पूर्वस्तेह अन्त में
घट आवेगा ।
- २ यात्रा व्यर्थ है ।
- ३ मित्र शुद्ध है ।
- ४ उक्त अन्यद्वारा
मिलेगी ।
- ५ विदेशी सानन्द
भूतिशीघ्रलोटेगा ।
- ६ अन्यदेशमें प्रारब्ध
घड़ेगा ।
- ७ ईश्वरपर भरोसा
रखो सही याचना
फरो ।

- ८ यह आनन्द शी-
घ्रही दुःखदायी
होगी ।
- ९ सिद्धि होगी ।
- १० हानि नहीं है ।
- ११ साधनरही शत्रु
हानि चाह रहा है ।
- १२ शीघ्रही सुकहोगा ।
- १३ नेरोग्यहोगा ।
- १४ सुन्दरीकन्याहोगी ।
- १५ इच्छानुसारही घर
पाओगी ।
- १६ इसव्याहते इच्छा
सफल न होगी ।

- | | | | |
|---|------------------------------------|----|----------------------------------|
| १ | अन्य देश में लाभ होगा । | ६ | पुत्र होगा । |
| २ | यात्रा में लाभ होगा । | १० | वर अत्यन्त स्नेह करेगा । |
| ३ | तुम्हारा प्रारब्ध ईश्वर बढ़ायेगा । | ११ | व्याह सिद्ध होगा । |
| ४ | इच्छा त्यागो अन्यथा क्लेश होगा । | १२ | मित्र स्नेह नहीं करता । |
| ५ | कार्य में विलम्ब है । | १३ | यात्रा सिद्ध होगी । |
| ६ | इच्छा के विरुद्ध ही होगा । | १४ | उसके कथन का विश्वास नहीं । |
| ७ | घन्दी छूट जायगा । | १५ | क्लेश सहन कर द्रव्य मिलेगी । |
| ८ | एकपक्ष में नैरोग्य होगा । | १६ | विदेशी के पुनर्दर्शन दुर्लभ है । |

। न ।	६
१ व्याधिसे मुक्तहोगा किन्तु आयु स्वल्प है ।	९ विदेशी बहुत कालमें आवेगा ।
२ कन्या उत्पन्न होगी	१० यात्रा में कुत्रिये से घबो अन्यथा क्लेश होगा ।
३ तुम्हारा व्याह कुलीनके साथ होगा ।	११ तुम्हारी इच्छा सफल होगी ।
४ इस व्याहमें लाभ होगा ।	१२ सिद्ध होगा ।
५ प्रतीच्छा करो अच्छा मित्र मिलेगा ।	१३ उपस्थित वृत्तिपर सन्तोष करो ।
६ स्थान त्याग न करो ।	१४ क्लेश सहन कर आनन्द होगा ।
७ यह शुद्ध मित्र है ।	१५ आनन्दका समय समीप है ।
८ चोरीकी द्रव्य न मिलेगी ।	१६ घंटी धदीएह में ही मरेगा ।

- | | |
|--|--|
| <p>१ तुम को आज प्र-
सन्नता होगी ।</p> <p>२ घदी शत्रु से पी-
ड़ित है ।</p> <p>३ रोगी नेरोग्य होगा ।</p> <p>४ दो कन्या उत्पन्न
होंगी ।</p> <p>५ द्रव्यवान् घर मि-
लेगा ।</p> <p>६ व्याह में अत्यन्त
आनन्द होगा ।</p> <p>७ मित्रता शुद्ध है ।</p> <p>८ गृहमेंही आनन्द
होगा यात्रा न करो</p> | <p>९ मित्र अत्यन्त हि-
तेच्छू है ।</p> <p>१० चौरापहतद्रव्य न
मिलेगी ।</p> <p>११ विदेशी आलस्य
से नहीं आता ।</p> <p>१२ स्वदेश के व्यापा-
रही को धन्य स-
मझो ।</p> <p>१३ लाभ होगा ।</p> <p>१४ सिद्धि होगी ।</p> <p>१५ इच्छा पूर्ण होगी ।</p> <p>१६ आज सावधान
रहो वड़ी भय है ।</p> |
|--|--|

फ			को उत्तम नहीं ।
१	प्रयत्न से घोरीकी	६	घड़ीमोचित होगी।
	द्रव्य मिलेगी ।	१०	एक सुन्दर पुत्र
२	विदेशी के सामर्थ्य		होगा ।
	से लौटनावाहिर है	११	तुम्हारा घर अत्य-
३	तुमको लाभ अन्य		न्त उत्तम है ।
	स्थान में होगा ।	१२	तुम्हारी इच्छा आ
४	धीर्य धरो तुमको		नन्द नाशक है ।
	मिलेगा ।	१३	संगीकी स्वार्थ में
५	अभीतुनको सिद्धि		सदेष्ट है ।
	होगी ।	१४	उमकी मित्रता शु-
६	अभी तुम्हारी इ-		द्धनहीं त्यागदो ।
	च्छा व्यर्थ है ।	१५	तुम्हारी यात्रा में
७	शोक तथा क्रोध		सन्देह नहीं ।
	आयेगा ।	१६	मित्रता उत्तम नहीं
८	आज का दिन तुम		विश्राम न करो ।

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. तुम्हारी इच्छा की | वहुत प्रसन्न और |
| पूर्णताअन्याधीनहै | लाभवान् होगे । |
| २ अभीस्वेच्छा न कर | १० यह मित्रता स्थायी है |
| ३ किसी अन्यपुरुषसे | ११ यात्रा में ईश्वर स- |
| कृपा प्रकाशित होगी । | हायता करेगा । |
| ४ हानि होगी । | १२ यह मित्र - मिथ्या- |
| ५ अबके अत्यन्त क्ले- | वादी तथा विश्वा- |
| श सहन कर मुक्त | सघाती है । |
| होगी । | १३ अचानक चोरी गई |
| ६ रोगी ससारसे या- | द्रव्य मिलेगी । |
| त्रा करेगा । | १४ अभी विदेशी स्नेह |
| ७ एक बुद्धिमान् पुत्र | वशसे नहीं आसका |
| होगा । | १५ तुम यात्रार्थ कटि- |
| ८ धनी मित्र मिलेगा । | बद्ध हो । |
| ९ इस विवाहसे तुम | १६ तुमको कुछ लाभ |
| | होगा । |

- म
- १ प्रारब्धी पुत्रहोगा।
 - २ तुमको द्रव्यवान् मित्र मिलेगा।
 - ३ व्याह सिद्ध होगा।
 - ४ तुम्हारी मानप्रतिष्ठाकरता है।
 - ५ तुम्हारी यात्रा में वृद्धि कीआश है।
 - ६ इस पुरुषपर विश्वास न करो।
 - ७ चोरीकी द्रव्य मिलजावेगी।
 - ८ विदेशी लम्पटता घश नहीं आताहै।

- ९ तुम अपनी इच्छा से अन्य देश में सिद्ध पास करोगे।
- १० लाभनहीं।
- ११ अत्यन्तानन्दहोगा।
- १२ अतिशीघ्र इच्छा पूरी होगी।
- १३ तुम्हारे व्याह की घाता हो रही है।
- १४ दुःप्रारब्ध के चिह्न हैं।
- १५ घन्दी छूटेगा।
- १६ नैरोग्यता में सन्देह है।

१ विदेशी नहीं लौटें
 २ तुम स्वमित्रता में
 रहें यही उत्तम है ।
 ३ तुम अपने उद्योग
 में लाभ उठावोगे ।
 ४ तुम अपने दु.प्रार-
 ५ वध के सबव ईश्वर
 रसे प्रार्थना करो ।
 ५ तुम्हारी इच्छा मि-
 त्रद्वारा सिद्ध होगी ।
 ६ तेरा शत्रु तेरी हानि करे ।
 ७ सावधान आज ते-
 रा शत्रु तेरी हानि
 चाहता है ।
 ८ धिन्दी क्लेश में है

छुटना दुर्घट है ।
 ९ रोग निरोग हो ।
 १० एक कन्या अस्यन्त
 प्रासब्धवती होगी ।
 ११ तुम्हारा मित्र हित
 चाहता है ।
 १२ यह व्याह तुम को
 क्लेश देगा ।
 १३ तुमसे मित्रता छूटी
 दूसरे से मित्रता है ।
 १४ अभी यात्रा न करो
 समय है ।
 १५ यह पुरुष उत्तम
 दोस्त है ।
 १६ तुम्हारी चोरी की
 द्रव्य न मिलेगी ।

१ । सुंदर पुरुष मिलेगा
 २ । इसका हों में अत्य-
 ३ । न्ति क्लेश, शोक हो ।
 ४ । वह तेरा, मान नहीं
 करेगा, मित्रता
 ५ । चिरस्थायी नहीं ।
 ६ । यात्रा में तुमको ला-
 ७ । भोगेगा ।
 ८ । इसकी मित्रता वि-
 ९ । श्वासनीय है ।
 १० । चौरों पर द्रव्य न
 ११ । मिलेगी परंतु क्लेश
 होगा ।
 १२ । विदेशी सिद्ध व्य-
 १३ । यदि तुम स्वस्थान

में रहो तो सिद्धि हो-
 १४ । स्वल्प लाभ की आ-
 १५ । शक्ति होगी ।
 १६ । असिद्धि होगी शो-
 १७ । कर्तव्य दुःस्वहोर्गा
 १८ । तेरी इच्छानुसार
 १९ । ही सिद्धि होगी ।
 २० । तुम को अव्य-
 २१ । से प्राप्त होगी ।
 २२ । शत्रु के द्वार ही सि-
 २३ । धि होगी ।
 २४ । बन्धी दीर्घ का-
 २५ । लकारावात्त में रहेगा
 २६ । रोगी व्याधि से ह-
 २७ । टेगा ।
 २८ । कन्या उत्पन्न होगी ।

१ घन्दी सहर्ष मुक्त

होगा ।

२ रोगीकी स्वास्थ्यमें
संदेह है ।

३ दीर्घायु पुत्र उत्पन्न
होगा ।

४ तुमको अचानक
द्रव्य मिलेगी ।

५ इस व्याहमें अत्यन्त
आनन्द होगा ।

६ तुमसे कोई स्नेह
नहीं करता ।

७ प्रसन्नता से यात्रा
करो ।

८ यह मित्र शत्रु है ।

९ चोरीगई द्रव्य मि-
लेगी ।

१० विदेशी नहीं लौटे
गा ।

११ किसी स्त्री के द्वारा
वृद्धि होगी ।

१२ सावधान हो इस
उद्योग में हानि है ।

१३ क्लेश दूर होगा त-
था आनन्द होगी ।

१४ तुम्हारी आशा
व्यर्थ है ।

१५ तुमको शीघ्र ही
आनन्द होगा ।

१६ आज दुःखका सा-
मान होगा ।

* इशितहार *

निम्नलिखित पुस्तिका का मूल्य अर्द्ध लिखा जायगा । तथा सम्पूर्ण एक साथ मँगाने में डाक-पग भी न देना पड़ेगा ।

प्रवेश्य अर्द्धमूल्य आगत्य

१ सध्यापात्मनयिधिः सभाष्य

२/॥ ॥॥ ॥॥

२ अग्निहोत्रयिधिः ॥

२/ ॥ ॥

३ धर्तियश्वदेययिधिः ॥

॥ ॥ ॥

४ विद्याद्वगुणसमेलनचक्र, जि

सके द्वारा एक क्षण में पर
बधू के गुण मिला लिये
जा सके हैं ।

॥ ॥॥ ॥॥

५ मुद्रादशाचक्र तथा प्रियायप

य मात्र २ में लगाने का
सफलदेश तथा भाष्य ।

॥ ॥॥ ॥॥

६ प्रश्नयिप्रानपत्रिषा

२/ ॥ ॥

७ आयुर्वेद शब्दार्णव

प्रति अक्षर मूल्य ।

भाष्य बाह्यिक आग्रिम

मूल्य २।१ सहाय्यपत्र

} इसमें सम्पूर्ण वैद्यक सन्यधी
गणों का अथ रसारादि प्र-
माणसार प्रियागया है ॥

॥ श्री ॥

❖ मनमोहनचरित्र ❖

— ❖ ❖ —

जिसको

मुरादाबाद निवासी—

लाला बट्टीलालात्मज—

मुरारीलाल वैश्य ने

बनाया—

और उसीको

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद में

छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथमवार १०००

मूल्य ८)

दोहा ।

श्याम अंग है श्याम रंग, श्यामा अंग है गौर ।
चरित करत इत उत फिरत, मने मोहन चितचोर ॥



काट पीतपट कर लुकुट, उर माला सिर मोर ।
प्रिया संग अधरन धरे, मुरली नन्दकिशोर ॥
कभी चरावत धेनु ब्रज, कभी बजावत वेनु ।
साहित प्रिया मम उर वसहु, मनमोहन दिनरैन ॥

॥ श्रीः ॥

❖ मनमोहनचरित्र ❖

— ❖ ❖ —
जिसको

मुरादाबाद निवासी—
लाला बट्टू लालात्मज—
मुरारीलाल वैश्य ने
बनाया—

और वसीको

श्रीयुत शिवलाल गणेशीलाल के
लक्ष्मीनारायण प्रेस
मुरादाबाद में

छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथमवार १०]

[मूल्य -)



श्रीः ।

❀मनमोहन चरित्र❀

—❀—
दोहा ।

बन्द चरण वारुण वदन, दारुण दहन क्लेश ।
शोक सघन सशय समन, संतन सदन सुभेश ॥
श्रीरमन वारिज नयन, शुभगुण अयन रमेश ।
नमत चरण सिरधर धरण, कृपा करण विशेष ॥
भैं सुमरन करूँ प्रथम आदी अनादी ।
उमा सुत अमर अघ हरण सत्यवादी ॥
गजानन विकटभाल चन्द्र और विनायक ।
विघनराज यकदन्त असुर कष्टनायक ॥

अमोदक अहारी व मूषक सवारी ।
 व गिरजा हैं माता पिता त्रिपुरारी ॥
 मैं फिर इष्टदेव अपना शङ्कर मनाऊ ।
 मैं मनसे अभी पास कैलाश जाऊँ ॥
 जटिल चन्द्र अवतंश भूषण अहीका ।
 उमानाथ ममनाथ ईश्वर महीका ॥
 गरल कण्ठ उर मुण्ड कर शूलधारी ॥
 दहन मैं त्रिनेत्र विषम सवारी ।
 मैं करजोड शङ्कर नमामी नमामी ।
 करु गुण कथन ईश उर अन्तरजामी ॥
 अनघ अज अनामय अजित इन्दुलोचन ।
 अमानुष व अनवद्ध सुर शोक मोचन ॥
 व अविरल व अविगत अगोचर नमामी ।
 व कजाक्ष अरण्य शयन इन्द्र स्वामी ॥

अखण्ड अघहरण आक्ष इन्दु दिनेशा ।
 अयन क्षीरसागर सयन नाग शेषा ॥
 भुजा चार गल कम्बु अवतश चन्दन ।
 पदमनाभ करचक्र कैटभ निकन्दन ॥
 व करचक्र कम्बू गदा पद्मधारी ।
 भुजा वाम कमला की उपमा नियारी ॥
 कुरग कजलोचन व जन ताप मोचन ।
 व चिन्ह उर लता भृगु उरमय अनूपमा ॥
 विजय जयहैं दो पाल द्वारे तुम्हारे ।
 मुकट मस्तकी वाल हैं धुंगरवारे ॥
 लिया तुमने अवतार यमुना किनारे ।
 हुवे मधपुरी में व गोकुल पधारे ॥
 वकासुर वसासुर असुर बहु विदारे ।
 यह सब देख तुमने लडकपन मे मारे ॥

मैं सब गोप ग्वालों को करलू नमामी ।
 कि जिन साथ खेले हों तुम विश्वस्वामी ॥
 उठा गिर बचा ब्रज इन्द्रकोप टाला ।
 गिरी के तले सब रखे गोपवाला
 कुमुद कज कारन व यमुना में जाकर ।
 लिया नाथ काली अही तुमने ह्वाँपर ॥
 व सब फूल अम्बोज उसपर लदाकर ।
 दिये कंसको तुमने मधुपुर में जाकर ॥
 सहीँ गालिया थोड़े माखनके कारन ।
 निरंतर है महिमा तेरी दुख निवारन ॥
 व सब ब्रजवालों का माखन चुराया ।
 व सब दूध दध तुमने ब्रजमें लुटाया ॥
 हरे चीर गुपियन के यमुना किनारे ।
 कदम पर चढ़े आप तुम चीर वारे ॥

मुरारी पुकारी व सब नारी तुमको ।
 विहारी यह सारी हमारी दो हमको ॥
 व वंसी बजाकर कहा मुसकराकर ।
 दिगम्बर लो सब चीर तुम धोरे आकर ॥
 सुनै वैन सुखदैत तेरे गोपाला ॥
 नगन गात यमुनासे निकलीं व वाला ॥
 दिगंबर व आई समी नन्द नन्दन ।
 दिये चीर सब तुमने ऐ मेन मर्दन ॥
 निशा अर्द्ध में तुमने वंसी बजाकर ।
 किया रास सब गोपियों को बुलाकर ॥
 निकट तीर यमुना जहा वंसी बट था ।
 व पहिने खडा साँवरा पीत पट था ॥
 करन मे थे कुण्डल व करमे लकुट था ।

अधरपर धरै मुरली सिर पर मुकुटथा ॥
 सरद चंद आनन्द पूरन था धन मे ।
 अकेले थे नद नद वृज चंद वन मे ॥
 व सोला सहस्र वहा पै थीं वृजनारी ।
 मदन की सहायक ये गोपी थीं सारी ॥
 हुवा युद्ध खट मास उस काम से ।
 नजीता मदन पर अजित श्याम से ॥
 मदन मद किया भंग सेना बिदारी ।
 सराबोर गोपी हुई मद मे सारी ॥
 तुम्हें काम लव लेश व्यापा न स्वामी ।
 तुम्ही काम के ईश होगे अकामी ॥
 विपति मे फसी जब के दुर्पद कुमारी ।
 सभा मे हो निरआस तुमको पुकारी ॥

अपत से है पत जात गिर्धर हमारी ।
 पड़ी दुष्ट फन्दे मे भावज तुमारी ॥
 जुवे मे हरे प्राणपत आज तन को ।
 महल से दुसासन पकड लाया हमको ॥
 पकड केस मेरा नगन तन करे है ।
 विपति ह्यो न कोई हमारी हरे है ॥
 अधम दुष्ट संगी हसोआ करत हैं ।
 पती धर्म को खण्ड करना चाहत हैं ॥
 गुरु द्रोण भीष्म जो हैं धर्म धारी ।
 रिपू अन्न भोजन ने मत उनकी मारी ॥
 सुसर अध ढोऊ नैन मति हीन होगा ।
 विदुर हनि बल दीन आधीन होगा ॥
 तनय पाण्डु के पाचो बन्दी पडे हैं ।

मेरे पास निर्लज्ज पापी खड़े हैं ॥
 ऋतु धर्म प्रथम दिवस आज होगा ।
 यहा आओ स्वामी अवशि काज होगा ॥
 नहीं तात और आत मेरा यहां पर ।
 जो लावे तुम्हें द्वारिका से बुलाकर ॥
 पवन पुत्र ऐ भीम अपने पिता को ।
 सुनादो हमारी विपत की कथा को ॥
 वही लावे ह्या बेग गोपाल जी को ।
 मनोहर मदन मन हरन लाल जी को ॥
 बधू मित्र की तेरे यदुनाथ हुंगी ।
 बिन अपराध स्वामी नगन गात हुगी ॥
 सुदामा के कारज को तुम सिद्ध कीना ।
 वहां मित्र नारी का दारिद्र्य छीना ॥

मेरी बेर क्यों देर की नाथ होगी ।
 सरम आज दासी तेरे हाथ होगी ॥
 नगन तन बिना वस्त्र यमुना का न्हाना ।
 बताया था गोपो को तुम ने बहाना ॥
 भला मैंने अपराध ह्यों क्या किया है ।
 बिन अपराध क्यों कष्ट इतना दिया है ॥
 तुम्हींने यह रीती जगत में प्रचारी ।
 नगन तन सभा में जो होती है नारी ॥
 न तुम तीर यमुना अंगर चीर हरते ।
 नगन गात ये दुष्ट मुझ को न करते ॥
 कुलत गाय की हाथ ह्या होरही है ।
 विकल धेनु रंभाय कर रो रही है ॥
 निबल धेनु को सिंह खा जायगा ।
 वे अर्थ नाम गोपाल हो जायगा ॥

अगर गोकि रक्षा न तू ह्यां करेगा ।
 न फिर कोई गोविन्द तुझ को कहेगा ॥
 हमारा न रक्षक जो रिछपाल होगा ।
 द्वापर में स्वामी कलिकाल होगा ॥
 पतित दीन का गर न तू बधु होगा ।
 जगत में अंधेरा ऐ सुख सिन्धु होगा ॥
 रवी सोम चक्र में आजायेंगे ।
 सुरासुर विमुख तुझ से होजायेंगे ॥
 अनार्यों की वज्रनाथ हतलाज होगी ।
 हँसी आज महाराज बिन काज होगी ॥
 धर्म हीन भंडा जगत में हिलेगा ।
 जो हैं नास्तिक उनको अवसर मिलेगा ॥
 तेरे दासों की मूढ़ निन्दा करेंगे ।

व 'टे दे के तारी यह चर्चा करेंगे ॥
 कमरिया उढैया व बनवन, फिरय्या ।
 जो हे ग्वालिया, कृष्ण गोंवे चरहय्या ॥
 अहीरो के सग, जिसने माखन, चुराया ।
 विरज में छिनाला छलीने सिखाया ॥
 जिसे जाने नंद गोप हैं कासे लाया ।
 जो ह्यां, आके वसुदेव नन्दन-कहाया ॥
 सभा मे उसे डोपदी बहुत टेरी ।
 विपति उसकी उसने न हरगिज निवेरी ॥
 हिया उसका पत्थर का बिधने बनाया ।
 विलकती हुई पर न जो तर्स आया ॥
 पडू कृष्ण प्यारे में पध्यां तुमारे ।
 रखो लाजमेरी ऐ यमुमति दुलारे ॥

तू जा कौन से मद्र मे सो रहा है ।
 सभामे गहन चन्द्र का होरहा है ॥
 परब में सहाये का प्रभु दानदीजे ।
 कहा भैन अपनी का यह मानलीजे ॥
 मेरे भाग इस वक्त फूटे हुवे हैं ।
 जो मुझ से रमानाथ रूठे हुवे हैं ॥
 सकल कर्म वो धर्म भूटे हुवे हैं ।
 पती प्राण प्राणो से छूटे हुवे हैं ॥
 बहुत युद्ध मन बुद्ध मे होरहा है ।
 अधीरज मेरा धैर्य को खोरहा है ॥
 कहत बुद्धि हैगी न सुधपासकेंगे ।
 किसी भाति इस दम न ह्या आसकेंगे ॥
 कठन भूमि कोमल चरण चित हरन हैं ।

वहां कोटिजन ऐसे उनकी सरन हैं ॥
 भयंकर डगर सोला योजन नगर है ।
 दुपहरी बहुत घाम वेढव सफर है ॥
 अयन रुक्मनी में वधन श्याम होगा ।
 छपरखट मे लेटा दिलाराम होगा ॥
 गिर कैलाम पर शिभुउर वासहोगा ।
 यहां उनके आने मे शिवत्रास होगा ॥
 दिया मनने उत्तर जो सुध पायगे ।
 तुरत दौड ह्वसि वह ह्या आयंगे ॥
 चतुर दश भवन का जो ईश्वर कहावे ।
 तिये काज क्या आज मूको छिपावे ॥
 स्वय चढ गरुडपर विठ्ठलभर वह आवे ।
 वहा से यहा आप वो व्याप जावे ॥

कमल हस्त से दुष्ट खण्डन करेंगे ।
 मेरे धर्म धीरज का मंडन करेंगे ॥
 पितामह यतीजी मेरा न्याय कीजें ।
 मेरे प्रश्न का आप उत्तर तो दीजें ॥
 जुयेमे हमें प्राणनायक हमारे ।
 हरे प्रथम या पहिले निजतन को हारे ॥
 अवश्य नन्दनन्दन हो मेरे प्यारे ।
 अहीरो के हो पुत्र यसुमति के वारे ॥
 जो वसुदेव जाये ऐ यदु राज होते ।
 भरीहुई सभामे न मम लाजखोते ॥
 अयन मित्र भारत के बजराज होते ।
 अहल रुक्मनी में न वे वक्त सोते ॥
 भतीजे हमारी जो सासू के होते ।

अवश कष्ट तुम अपनी भावज का खोते ॥
 पितार्जी अगन कुछ न उपदेश कीजे ।
 मेरे तन मे अब आप पिरवेश कीजे ॥
 सहित चीर अब मेरा देहात कीजे ।
 कलंकी जगत मे रमाकात कीजे ॥
 नगन शीस पापी मेराकर चुका है ।
 वसनतनपे भी हाथ अब पड़चुका है ॥
 मेरे त्राम को वेग अब नास कीजे ।
 दुसासन को ऐसा न अवकाश दीजे ॥
 तेरे बिन न कोई यहा है हमारा ।
 अरे मन न आया अगर वो पियारा ॥
 अभी चीर सारा यह खिच जायगा ।
 मेरा प्राण संग चीर डँच जायगा ॥
 अगर फिर व निर्लज्ज ह्या आयगा ।

नगन लोथ को दाह , करजायगा ॥
 सुनी टेर द्रुपद सुता दुख निवारन ।
 धरा रूप अंबर द्रोपदी के कारन ॥
 दुसासन गया हार जब खेंचि सारी ।
 बिदारी विपत नारी तुमने मुरारी ॥
 हुई सर में जब ग्राह गजसे लड़ाई ।
 व जब ग्राह से गज की कुछ बनन आई ॥
 व जो भर रही सूढ जब जल के ऊपर ।
 पुकारा करी तुमको कर कज लेकर ॥
 अयुत नाग बल अर्ध जल हो पुकारा ।
 ऐ जन कष्ट घालक मैं जन हूं तुम्हारा ॥
 अयन जन व ममदीन दुख ताप नाशी ।
 अजित अघ हरण सुर असुर पुर बिनासी ॥

ऐ कमलारमन क्षीर सागर निवासी ।
 भुजंग सैन उर चिन्ह वैकुण्ठ वासी ॥
 अरुण वंस अवतंस कौशल्या नन्दन ।
 दुखित देखि वेदेही कर चाप खण्डन ॥
 महेश चाप कर खण्ड सीता विनायक ।
 रखा प्रण सीता ऐ जन प्रण पालक ॥
 पिताके वचन सुनके वनको सिधारे ।
 चरित कव अकथ कीन्ह वीं तुमने प्यारे ॥
 जटा सीसउर माल कर चाप धारी ।
 अनुज उरविजा सग कानन विहारी ॥
 वरस चार दग कीन्ह कानन में वासा ।
 सहित नुज वहां रहके भव त्रास नासा ॥
 विचित्र चित्र परवतको दर्शन से कीना ।

पुरंदर तनय जयन्त यक आक्ष कीन्हा ॥
 किया दण्डकारन्य का तुमने निस्तारा ।
 किया खर व दूषणसे कानन को न्यारा ॥
 सहस चौदह निशिचर मधुरत में मारे ।
 ऋषी और मुनी ब्रह्मचारी उवारे ॥
 वधन बंधु सुनकर के लकापतीने ।
 किया क्या चरित्र उस निशाचर मतीने ॥
 कुरग अग मारीच उसने बनाया ।
 सुता अविनी विन तेरे कपटी हरलाया ॥
 पवनपुत्र पायक को तुमने पठाया ।
 व इकला अक्षय मार गढ़फूक आया ॥
 खबर पाके पुल बाध परहस्त मारा ।
 रिपू आत सुत-मार भव भार टरा ॥

दनुज नुज को दे राज पुर कोष नारी
 अवध आये रण जीत लेकर दुलारी ।
 अजामेल गणिका व शिघरी उवारन
 धू और प्रह्लाद हरीश्चन्द्र तारन ।
 सुदामा विदुर और गौतम की नारी
 निरग नृप बल और कुवजा भि तारी ॥
 जटायू निपाद और वालीसे बदर ।
 दिया सबको वैकुण्ठ अवधेश चदर ॥
 विराध और कबंध और मारीच आदी ।
 तुम्हीने हैं तारे ऐ आदी अनादी ॥
 दिया भक्त को कष्ट जब वापने ।
 धरा रूप नरसिंह तब आपने ॥
 सुरारी असुर को पछाड़ा तुम्हीने ।

नखों से उदर दुष्ट फाड़ा तुम्हीने ॥
 मधु और कैटभ को मारा तुम्हीने ।
 वहा रूप कच्छप का धारा तुम्हीने ॥
 मगन कष्ट में देख सुर दैत्य सारे ।
 चतुर्दश रतन सिन्धू मथकर उवारे ॥
 किया मंदराचल को निज तनपै धारन ।
 समदर मथन के बने आप कारन ॥
 निरख विष असुर सुर लगे कापने ।
 दिया शिवको वो भाग तब आपने ॥
 तुरग वट व वारुण पुरंदर को दीन्हा ।
 मणी और रमा शंख तुम आप लीन्हा ॥
 दई सुरभी धेनु सब जोगियों को ।
 दिया वैद और त्रिफला रोगियों को ॥

व रंभो को दीना सकल सुर पुरों को ।
 सुरो को अमे और सुरा आसुरो को ॥
 वहा बहुत संग्राम तुमने कराया ।
 सुरो को जिताकर बुरो को हराया ॥
 निरख पाति रुक्मन जो थे विप्र लाये ।
 तुरत रथ पै चढ़कर तुम कुन्दनपुर आये ॥
 जरासंध शिशुपाल सेना विटारी ।
 रुक्म को हरा मान ऐ मान हारी ॥
 दनुज दल को दल और लेकर दुलारी ।
 भवन आये रिपु जीत तुम ऐ मुरारी ॥
 धरा रूप वामन पुरंदर के कारन ।
 लई बल से अवनी तने बन के वामन ॥
 कपीअष्टप संगूर निश्चर उवारे ।

उबारे सभी जो कि थे तुम ने मारे ॥
 दुखित देखि शिव भस्म भस्मासुर कीना ।
 असुर को भी ऐ नाथ सुरपुर ही दीना ॥
 पिता मात बंदी से तुम ने छुड़ाये ।
 पिता नन्द को तुम वरुणपुर से लाये ॥
 व मुष्टक व चाणूर और कंस मारे ।
 तैने जून जड़ से नल कूबर उबारे ॥
 व धर रूप बाराह कनक आस मारे ।
 अनल से बचाये तैने गोप सारे ॥
 छिपे पाण्डु जब आके तेरी सरन मे ।
 सहायक हुवे आप तब उन के रन में ॥
 किया प्रण भारत का भारन में पूरण ।
 किया जयद्रथ का वहा तुम ने चूरन ॥

व रत्ना को दीना सकल सुर पुरों को ।
 सुरों को अर्मे और सुरा आसुरों को ॥
 वहां बहुत संग्राम तुमने कराया ।
 सुरों को जिताकर बुरों को हराया ॥
 निरखे पाति रुक्मन जो थे विप्र लाये ।
 तुरत रथ पै चढ़कर तुम कुन्दनपुर आये ॥
 जरासंध शिशुपाल सेना विदारी ।
 रुक्म को हरा मान ऐ मान हारी ॥
 दनुज दल को दल और लेकर दुलारी ।
 भवन आये रिपु जीत तुम ऐ मुरारी ॥
 धरा रूप वामन पुरंदर के कारन ।
 लई बल से अवनी तनै वन के वामन ॥
 कपीऋष लंगूर निश्चर उबारे ।

अगोचर अलख रूप आरज अकामी ॥
 मेरी वार क्यो वार की दुख विनासी ।
 सुदर्शन से काटो मेरे पग की फांसी ॥
 उबारो मुझे नाथ तुम ग्राह मारो ।
 मेरा हैगा ह्यां कौन जी मे विचारो ॥
 विपत्त में मुझे देख संग छोड़ मेरा ।
 गया छोड़ कुन्वा कि था जो घनेरा ॥
 है जल नेत्र मे और अंभोज कर में ।
 खड़ा रो रहा हू अकेला में सर मे ॥
 अनाथो के ऐ नाथ पालक तुम्हीं हो ।
 कहूं जादा क्या विश्व व्यापक तुम्ही हो ॥
 सुनीं टेर कुजर जो दानव दलन ने ।
 यतन यह किया उस कली मद हरन ने ॥

रवी अस्त सन्ध्या समय नास कीना ।
 सुदर्शन से सूरज का प्रकाश कीना ॥
 दिया छोड़ निज प्रण भीष्म के कारण ।
 व निज जन के कारण किया शस्त्र धारण ॥
 करण द्रोण भीष्म का मथ मान डाला ।
 गदा से कलेजा दुसासन का साला ॥
 हुआ भीत सग्राम अर्जुन करन में ।
 जिताया उसे जो था तेरी सरन मे ॥
 बढैयों के वच्चों को रनमे बचाया ।
 विजय घट के नीचे उनको छिपाया ॥
 धर्म राज से तुम गुरु पुत्र लाये ।
 तेने शोक से जननी और गुरु छुड़ाये ॥
 व मम शोक हरो विश्व व्यापक नमामी ।

मेरी भी सुनो कान दे ताप हारी ॥
स्तुति ।

नमामी गुण आगार संसार, पालक ।
रमाकत राजीव मम कष्ट-घालक ॥
नमो सीता प्रीतम नमो ग्राह नासी ।
नमो श्यामसुदर नमो घटघट वासी ॥
नमस्ते निराकार निर्गुन निरंजन ।
नमस्ते हरी रूप गज दुख निकन्दन ॥
नमो कृष्ण प्यारे नमो नैद दुलारे ।
नमो बसी वारे नमो कारे कारे ॥
नमो भ्रमनासी नमो बृज वासी ।
नमो चंद्र वंसम् व आनन्द रासी ॥
नमो बृज नाथं नमो ज्ञान सागर ।
नमो चौर माखन नमो कृपा आगर ॥

रमा छोड़ ले शस्त्र चढ़ कर उर्ग आरी ।
 चले सुर्ग से जल्द बाके बिहारी ॥
 कमल को निरख कर मेँ कम्मला रमन ने ।
 दिया छोड़ वाहन भी सशय समन ने ॥
 उठाकर वही चक्र फेंका जो सरमें ।
 सुदर्शन लगा जाके नाके के सरमें ॥
 तन त्याग धर रूप सरसे निकलकर ।
 गया स्वर्ग को ग्राह पुष्पक पै चढ़कर ॥
 मगन गजको हरीने नदीसे निकाला ।
 व कर कृपा दी करीको निजकर की माला ॥
 विना पीर भरनीर नैनों में कुंजर ।
 चरन भय हरन मेँ गिरा हस्ति आकर ॥
 लगा अस्तुति करने तेरी वो सुरारी ।

उसी तौर मम लाज रख कृपा कारी ॥
 मेरा हाल गज ग्राह सा हो रहा है ।
 तु आ जल्द किस जगह जा सो रहा है ॥
 यतन गज है मन पग मेरा फस गया है ।
 जगत सर में नाका कली वस गया है ॥
 मुझे लोभ मोह काम घबरा रहा है ।
 क्रोध मध व मतसर भी चपरा रहा है ॥
 उभारो मुझे इस कलीकाल से ।
 छुड़ावो मुझे गम के जजाल से ॥
 पिता मात वंधू न मित्र है वचाता ।
 तुहीं ऐसे वक्तों में है काम आता ॥
 दिखादो मुझे तुम अब उस रूपको ।
 कि छोड़ें में जंजाल भव कूप को ॥

नमो चोर चीरं नमो यमुना तीरं ।
 नमो राधाकतं नमो हलधर वीरं ॥
 नमो मित्र अर्जुन नमो ईश भीषम् ।
 नमो दिनेश वंशं नमो सैन कीशम् ॥
 नमो सृष्टि पालक नमो वन विश्व भर्ता ।
 नमो लयकरंते व उत्पन्न करता ॥
 नमो कौशलेश्वर नमो वन विहारी ।
 नमो ग्रीस ईश्वर नमो चाप धारी ॥
 नमो चक्र पाणी नमो अष्ट रानी ॥
 कथा जिनकी है भागवत में बखानी ॥
 मुरारी के भी दुख टारो मुरारी ।
 मैं करजोड़ दरपर खड़ा हूँ भिखारी ॥
 हरे जिसतरह कष्ट गजके विहारी ।

उसी तौर मम लाज रख कृपा कारी ॥
 मेरा हाल गज ग्राह सा हो रहा है ।
 तुआ जल्द किस जगह जा सो रहा है ॥
 यतन गज है मन पग मेरा फसगया है ।
 जगत सर में नाका कली वसगया है ॥
 मुझे लोभ मोह काम घबरा रहा है ।
 क्रोध मध व मतसर भी चपरा रहा है ॥
 उभारो मुझे इस कलीकाल से ।
 छुड़ावो मुझे गम के जंजाल से ॥
 पिता मात वंधू न मित्र है बचाता ।
 तुहीं ऐसे वक्तों में है काम आता ॥
 दिखादो मुझे तुम अब उस रूपको ।
 कि छोड़ूं मैं जंजाल भव कूप को ॥

(१२)

मुझे आसरा राम तेरा है तेरा ५
तू वस काट दे भव से अब वेड़ा मेरा ॥

आपका दासानुदास—

मुरारीलाल वैश्य अग्रवाल
दीन्दारपुरा, मुरादाबाद

पुस्तक मिलनेका पता—

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद



नाटक जिसको

गाला घनश्याम दास साहूव रईम शह

र कान पुर ने बनावा और वास्ते

फायदे ग्राम के मुशी चिता मणि

शिव चरण लाल वैश्य

बुक सेलर ने

बालाय शहूर फरुखाबाद में छापा

विज्ञापन ।

प्रथम मैं उस परब्रह्म परमेश्वर परमात्मा सखिदानन्द
गदीश्वर ज्योतिस्वरूप सर्वशक्तिमान् के लो
ष्टांग दण्डवत्करके सर्वसज्जन प्रेमीमहाशयोसे निवेदन
हूँ कि इस दास को बालपन ही से भगवत्चरित्र अ
कीर्त्तन भवणका अधिक प्रेम रहा और कईबार उल्ला
सद्भागवत व भाषा रामायण वाल्मीकि आदि का भी
लोकन किया और बहुधा चौपाई दोहा प्रज की शोली
बनाए परन्तु इस समय तक किसी ने इस को टाइप में
छपवाया अब मैंने इस भगवत् कीर्त्तन मनमोहनचरित्र को
भगवत्चित चिन्ताहरण हेतु निरूपण किया है और २ सौ
सज्जन पुरुषोंके दृष्टिगोचर होने और आनन्द उठाने के
निमित्त मेरे छोटे भाई चिरञ्जीव रामरत्नपाल ने
नारायण प्रेस में छपवाकर प्रकाशित किया, अभिलाषा
कि जो शब्द स्वरूपसज्जन अर्थहीन व अधिक न्यून इस
शुद्धीसे बनगया हो तो उसको कृपात्राटि करके क्षमा कीजिए

आपका कृपामिलापी-

मुरारीलाल वैश्य

सुद्धा वस्था विवाह

काटक

जिसको

लाला घनश्यामदास साहब रईस शह

रकानपुर ने बनाया और वास्ते

फायदे ग्राम के मुशीचितामणि

शिवचरण लाल वैश्य

जुक सैलर ने

निज यशालय शहर फर्तुखाबाद में छपा

चिंतामणि प्रेस में छपा

मोल एक आना

स्त्री।

अजी हा इस वान में डर किम का है सभी करते हैं मैं
हमने चोरी की १ पेरी भी यद्वा सना हूँ कि धन तो
रही करना ठीक है।

स्वार्थ०

गच्छा ऐसा ही करोगे १ जल्दी क्या है ॥
(स्वार्थमल उठकर दूकान पर नाते हैं)

पराक्षेप

दूसरा दृश्य

न्याय०

हुस्सू चद्र अपने मित्र न्याय चंद्र के साथ ग
नी दूकान पर बैठे परस्पर बातें लाप कर रहे
थिन अज्ञ उदास क्यों बैठे हो भला कहो तो सही
हान है।

कुस्सू०

भाई क्या कहें कुछ पूछो मन।

याय०

अजी भला कहो तो।

कुस्सू०

क्या भाई सोई बटाय थोड़े ही लेगा कहें क्या।

याय०

भला खैर कहो तो।

हुस्सू०

जब मैं स्त्री का देखान्न होगया तबसे दिल फोचें

नही पढ़ता एत दिन इसी फिकर में जान रहती है मेरा यह विचार है कि दूसरा विवाह करूँ क्योंकि स्त्री बिना बुढ़ापा पार होना बड़ा कठिन होता है ॥

प्रा० मुझसे क्या राय लेते हो मैं तो कभी न कहूँगा क्योंकि आपके दो लड़के हैं उनकी स्त्री हैं तुम्हारा बुढ़ापा इसी तरह आनन्द ही में पार हो जायगा व्याह्र करने से सुख के बच्चे दुःख भोगना पड़ेगा पहिले लड़कें भगड़ा दूसरे यह भी कि अभी लड़के आपके काम आएँ वेगे फिर लड़के भी हाथ खिंच जायेंगे आगे आपकी खुशी ॥

स्व० मेरी तो यही इच्छा है कि विवाह कर दौलत फिर होगा सो देखा जायगा स्त्री बिना घर में कुछ भी सुख नहीं है बुढ़ापे में स्त्री ही सेवा करती है पुत्र कौन करेगा ॥

प्रा० आपकी समझ उलटी है यह तो कदिये आपकी इतनी उमर देखकर कौन ऐसा दूह होगा जो अपनी मवान कन्या तुम्हें व्याह्र देगा जान बूझ कर कौन पाद में धोकेगा ॥

- ३६५० वाह आपजाने ही क्या १ १५ १२ सो १२
 कोइ कैसा ही बुद्धा क्या न हो रुपया चाहिये
 ही सत्तरह व्याद् नो हम करा सके है सो हम नित
 को रुपया देवेगे वह आप करेगा ॥
- वाह साहिब धन्य है आप की बुद्धि को आप नो ते
 पुराने होते जाते है तो २ आप की अकल न
 हा जाती है ओर पार भला तुम्हे धन ही भा
 है तो किसी ऐमे काम मे खर्च १० कि १०
 हो दस आदमी कहें १० १० १० १० १०
 से किसी बिचोर की लटकी कागला फास भी लिये
 नो के दिन जियोगे आरिखर पही होगा कि वह
 दुदेगा नव तुम्हार ही नाम बदनाम होगा वा
 किसी का फिर नय ईश्वर का भी नो डर करे मे
 नो गलम कहने का है आगे आप की दुच्छा ॥
- कुस्य • अनी तुम क्या जानो देखो नो भला क्या होता है
 नो लखे कहा ही करे भला मानती नो मुफ पर है
 आप मोह ही मेरा दुख बना लोगे (नो १२)

देना है और नौकर पुरोहित जी को बुलाने जाना है
(और आप दुकान से उठ कर कपरे में जाते हैं)

पराक्षेप तीसरा दृश्य

रूपचन्द्र कमरे में बैठे सोच विचार करता है इतने
नौकर का पुरोहित को बुला कर खाना और रूप
चन्द्र का हर्ष पूर्वक पुरोहित को स्थान देकर चार्नी के
ना कुचुद्धि सागर पुरोहित का देने हाथ उठा कर आ
गि बोद देकर उत्तर देना ॥

खुद्धि जिजमान की जयर कार हो ! कहिये आज मुझे कि
स कारण बुलाया ।

रूप० दंडवन करके बैराना है

प्ररोहित तो कारना है है बुढ़ापे मे तो है

काम दग होना है।

कुस्तप० अच्छा पुरोहित जी को दे जवान लडकी नलाश
नी चाहिये।

पुरोहि० बहुत अच्छा जिजमान कितनी बडी बात है, ना
अभी कल के लडके है अगूठी २ व्याह जायगी, या
गवानि रजमा रखिये।

कुस्तप० अच्छा तो पुरोहित जी आपकी नजर मे को दे होय
तो बताइये।

पुरोहि० (सोच कर) स्वार्थ पलकी लडकी है - लडकी की
बर्ष की उमर होगी लडकी बडी कचुल सूरन है पप
रुपया ज्यादा लेगा।

कुस्तप० आप रुपया को फिकर न कीजिये जो कुछ खर्च पड़े
गा हम देगे

पटाक्षेप चौथा दृश्य

(रस्ते में सोचना हुआ)

श्रीदत्त

आप ही आप गूढ़ रहस्य है ईश्वर ने बहुत दिनों में
आज यह चिन्तिया हाथ में है अब तो पांच चार मोहा
य लोग म्वाय यल के पास जान चाहिये ईश्वर उस
के हृदय में भी यह बात बैठा देता कार्य सिद्ध है आशा
है तो भी तो बड़ा है पर कल्या की गुराही है इसे हों पे क्या
मतलब है वह मेरी छोड़े हा है अपना तो काम ही है
कोई मेरे या जिये यह ससुर बैसे कोई टके दिखान
नहीं अब हम क्यों चूके मेरे चाहे जिये ॥

पटाक्षेप
पांचवां दृश्य

स्वार्थ भल के पास पुरोहित जी का जाना
की कन्या की बात चीत करना ॥

स्वार्थ० आप ही आप देखो निमिर चंद की लड़की का पि
ह होगया उसके दोनोन हजार रुपये हाथ लग
देवा चाहिये हमारा काम गो ईश्वर के धंहे
न दुकान दारि बड़ी सुस्त है ईश्वर भजे किसी को
(इतने मे पुरोहित जी पधारे)

स्वार्थ० आइये आइये महाराज बडबत २ महाराज
ये हू हू हू आज नो बड़ी रुपा की महाराज ॥

पुरोहित जिजमान शारी चंद देने चला आया हू और कुछ
आपमे कहना भी चाहता हूं ।

स्वार्थ० कहिये २ महाराज बडे भाग्य भला मेरे लायक जे
काम होगा नस्तूर हो जायगा ।

पुरोहित जिजमान शरुंगाण अपनी कन्या की शरीर
य आप भी देखें कि क ज्ञाप्ये और कन्या नो न पने
जाय राने नि की चमर हूई ।

स्वार्थ० पुरोहित जी मुझे भी नो बड़ी फिक लगी रहनी है

कस्तूक्या कोई धरनही पुरोहितजी नजर पडता ॥
 पुरोहित निजमान धरतो स्पच्छा है मैं बतलाऊ जो आप की
 इच्छा हो लाला कुरूपचन्द के साथ आप शरीर
 रदीजिये ।

स्वार्थ० (आप ही आप) बाह ईश्वर खूब भेजों अवमने र्थ पु
 रा होता देख पडता है (प्रगट) पुरोहितजी आप के
 निजमान का व्याह मेरे यहां क्यों होगा इसमें तो ख
 र्च बड़ा भारी है ।

पुरोहित निजमान मेरे निजमान को खर्च का कुछ भी ख्याल
 नहीं है आप धन लाइये तो सही क्या खर्च पड़ेगा ।

स्वार्थ० धीरे से दो हजार से कम तो मैं नहीं लेऊंगा मेरी ल
 डकी भी आपने देखी है या नहीं - दो हजार की तो उ
 सकी एक आरव है ।

पुरोहित दो हजार तो निजमान बढन होते है कुछ कम की
 नियेगा ।

स्वार्थ० कम नहीं ।

पुरोहित (आप ही आप) देखो तो बेशर्मा को कुछ भी शर्म न

हो आती कहो खुला खुला पाने करना है रह भुले
 न्या भी जनेगी कि किसीसे शर्त भी हुई थी (अगर
 खेरे आप का ऐसा मन है तो कुछ चिन्ता नहीं पर ए
 क बात पाहिने हमारी आप की हो जाना चाहिये।

स्वार्थ- कहिये क्या।

पुरोहित हमारी चीथ रहेगी।

स्वार्थ- मैं इसमें से एक कौड़ी देने का नहीं मुमको जो कुछ
 मिले अपने जिजमान से लेव देव-मुझसे आपका
 कोई हक नहीं यो महाराज हमारी खुशी होगी सो
 फूल पत्ती आपके हाथ धरेगे और पैर छुरेगे सही
 वान तो यह है।

पुरोहित अच्छा तो हम अपने जिजमान में २५०० बाई ह
 जार बनायेगे आपसे पूछे नोगमाही आप कहें
 हमारा भला हो जायगा और आप का कोई नुक
 सा नही है।

स्वार्थ- अच्छा पुरोहित जी हम यही कह देंगे मेरा क्या
 हर्ज है ॥

पुरेहित निजमान यह लीजिये २००० का नोट आपकी लड़की की बातचीत पक्की रही व्याह बस न पंचमी को होगा लग्न अच्छी है आप तैयारी कीजिये मै जाता हूँ ।

स्वार्थ० नोट लेकर बहुत अच्छा पुरेहित जी बस न पंचमी का दिन तो बहुत मज् दीक है परन्तु मेरे क्या बस न पंचमी को ही कर दूंगा ॥

(पुरेहित जाने है और स्वार्थ मल की स्त्री का प्रवेश)

अज्ञान आज बहुत खुशी हो रहे हो कहिये तो क्या बान है ।
स्वार्थ० ह ह ह ह अभाग बनी की मा अभाग बनी के व्याह की बातचीत होगई (नोट दिरवाकर) यह दो हजार रुपये का नोट है ।

अज्ञान अह ह किसे क साथ (भपट कर नोट लेती है)

स्वार्थ० क रूप चन् के साथ विवाह बस न पंचमी को ठहरा है

अज्ञान व्याह के दिन बहुत नजदीक है तैयारी कीजिये ।

स्वार्थ० अच्छा मै जाता हूँ पण्डित भानुप्रकाश के यहाँ लग्न पूछ आऊँ और बाजार से कपड़ा लता भी खरीद लाऊँ (गया)

पताक्षेप

छठा दृश्य

कुत्सपचन्द्रकमरेमें (आप ही आप) देखे-
न जी कब तक आवे न जाने कहा चले गये- सुमे-
नो काम धधा ही नही सुहृता रात दिन खटका मे-
जान रहनी है दिना दिन उमर घटनी जानी है (पुरे-
हि न उसी क्षण जा पड़ेचे)

रूप० आये २ बटन दिन लगाये कहिये कार्य सिद्ध हुआ
गोहित निजमान आप के मनाप से एक कार्य क्या पचास का-
र्य तो मैं कर सका हूँ आप के विवाह का सब दीकठा-
क कर आया हूँ ॥

रूप० (बसन्त होकर) पुरे हि न जी कहे लड़की बोझिली है
गोहित निजमान स्वर्ण मल की लड़की का क्या पुंछना है न-
डकी क्या है कमल का फूल एक रंगारंग उसकी ला-
ल २ रुपये की है २५०० रुपये बड़ी मुश्किल से रह-
रि २५०० ४० दे आया हूँ ५०० रुपये बाकी रहे है।

कुस्तू० पुरोहित जी रुपये का क्या डर है आप शादी की जल्दी कीजिये ॥

पुरोहित निज मान व्याह की तो बहुत जल्दी कर आया हूँ व सत पन्चमी को बहारा आया हूँ ।

कुस्तू० अच्छा किया पुरोहित जी अच्छा तो अपनी भी तेयारी करना चाहिये दिन नजदीक है और गुपचुप चलना चाहिये लडके आनेगे तो गहबहमचावेगे ।

पुरोहित एक दो आदमी साथ ले लीजिये और करना ही क्या है अच्छा तो मैं जाना हूँ, (पुरोहित गया)

पटाक्षेप सातवां दृश्य

भानु प्रकाश अपने आप घर में बैठे विचार कर रहे हैं हे । परमात्मा क्या यह पुण्य भूमि भारत बर्ध की यही दशा रहेगी हा । शोक आज कल मेरी ऐसी परिपारी बिगड़ रही है जिसे देख बड़ा क्रोध होता है कौसी दशा इस देश की हो गई है सब तो माने अपने ना कर्म धर्म छोड़ दिया है वही व्यवस्था जन्म से ही मा

मलीउनम आचरण ससारसे उठ गये दिनादिनीच वृत्तों
 सभीको कटिचद्व देखते हैं जिससे सच हनु हानि हो रही है वे
 श सस्कार कृषि मुनियोंने मनुष्य को कह ठनमे से तीन द्वे
 गये सो भी उन तीनमे से एक का भी यथोचित निवाह नहीं करने द
 आवर्तमानमे वान्य विवाह की ऐसी रीति प्रचलित हुई है कि
 जिसके कारण भ्रमों को शान्ति होने है हे ईश्वर नू सहाय
 रय हुरु रीति उद्यमिसे से पुन पुंड्रग को यह देश प्राप्ति है ॥

नतक्षण ही स्वार्थमत्न का प्रवेश

स्वार्थ० पाण्डित जी पालागे

पाण्डित ईश्वर दया करे आदये कार्य कहिये ।

स्वार्थ० पाण्डित जी मेरी बेटी का व्याह चसन पंचमी का रह
 है - दिन तो उत्तम है ॥

पाण्डित सेव बसन पंचमी के दिन का तो विवाह तो अच्छा है
 कहिये आपने किसके लड़के से अपनी कन्या के
 ह की शान चीन पकी की ।

स्वार्थ० पाण्डित जी कुरुचंद्र ।

पाण्डित मग उमर है न डेरी की कुच्छिवा भी है ॥

- स्वार्थे • पांडित जी ठमर होगी कोई ४५०४६ वर्ष के लगभग ।
- गडित • सेठ- इन नी आधु बाले से क्यो किया क्या कोई युवा अ
 वस्था वाला नहीं मिलता था यह तो बड़ा अर्थ है यु
 वा कन्या का वृद्ध पुत्र से ब्याह देना अन्यतलज्जा का वि
 पय है यह सम्मति आप को किसने दी नारायण र धि
 कार है ऐसी समझ को भला कही किसी शास्त्र की
 आज्ञा है भला शास्त्र न सही समाज में आख खोल कर
 र दोखो तो इसका परिणाम क्या होगा हमने ऐसे वि
 वाह की सम्मति कभी न देगे आगे आपकी इच्छा इ
 समे आपका कदाचित भला न होगा ।
- नार्थ • पांडित जी मेरी क्या लाग मुझे तो पुरे हिर्जीने यह स
 म्मति दी नइकारे जगरी है और धन की भी मुझे स
 हायता हो गई मेरा तो कारबार महाराज बन्द था क्या
 करना ।
- गडित • और ना समझ यह न जाना नूने कि कन्या के चना कि
 ना बड़ा गधर्म है और तेरा कैसे भला होगा पुरे हिर्
 जी को धर्म धर्म का विवेक थोड़े ही है उन्होंने भी पंडि

नाई क्या दलाली दह्राए करी है भरे । नादान स
भ गोभला भले आदमी कही द्रव्य लेकर ऊँचा द
करते है भला जो द्रव्य लेकर पुत्री देवे उसमे और भ
ओ मे कुछ फर्क ही स्या रहा देख इसी प्रकार राजा
हाराजा दो चार हजार देकर बेरयाओ की कन्या नि
या करते है तू बड़ा आज्ञान है ईश्वर का भय नहीं
भे नारायण २ छी छी छी ॥

सार्थ० (आप ही आप) यह तो पागल है चलना चाहिये
यहासे थपना काम करे (जाना है)

पटाक्षेप

आतवा दृश्य

दोस्त्रियो का आपस में नाता लापकरना

प० स्त्री श्रीमान तो एक बड़न सुराबान मुनेने मे आद
नूने मुनीया नहीं ।

इ० स्त्री स्या २ गहु गोभला में ने तो नहीं मुनी ।

प० स्त्री यदि । स्वार्थ मतने अर्पण वेदी अभाग रती का प्या

कुस्त्र चन्द से किया बड़ा ही बुरा किया विचारी
 भागवती जो जन्म बुरा किया कर दिया कुस्त्र चन्द
 बूढ़ा है यह विचारी अभी कुच्छ भी दुनिया बारी नहीं
 जानती उसकी कैसे उमर कटेगी । हाय ! उस दुष्ट का
 बुरा हो विचारी का जन्म सत्यानाश कर दिया (आ
 पस में बात करनी हुई जानी है)

पटाक्षेप नवां दृश्य

अभागवती का अपने कमरे में बैठे सोच क
 रना पति के स्मरण में इतने में दूसरी स्त्री सुभा
 गवती का प्रवेश ॥

सुभाष० क्या आज कीसी उदास बैठी हो कहो तो सही ।

अभाग० (हस कर अगत) आगे बैठो यों ही खुशी में बैठी थी
 उदास तो नहीं हू ॥

सुभाष० मुसकर कर बैठ गई श्री ! क्या तो सही ने पति
 तुझ से कैसा प्रेम करता है ॥

प्रभाग० पहिले नूबनला तो मै भी बतलाऊ तेरा पनि कैसे चाहता है ॥

सुभाग० तुम्हें शर्म आती होती मै ही बतलाऊ नूना मोरे के दीवानी हुई जाती है ॥

प्रभाग० (हसकर) अच्छा बता ॥

सुभाग० सुन । मेरा पनि तो नारायण की रूपा से मुझे तो ही अच्छी तरह चाहता है मै तो अपनी जबानी का ख नूदती हूँ अब नू तो बतला ॥

प्रभाग० हा । मै क्या बतलाऊ मै तो वृद्ध से पत्ने पडी जक का मुख कहा नसीब हो । मै मे नो कोई नारायण की चोरी की जिसका फल मुझे मिला है मो के मरविताऊ काम की गान्ध बडी बुधि होती है नारायण न जाने क्या होगा । हा । पनि के घर मे धन तो बहुत धन को क्या चावूं मेरे नो जबानी मुझ ही जाती है न्या नारा हो उस दुष्ट पुण्डित का जिसने मेरा ह किया ॥

सुभाग० प्रजि यह पुंगे निमतो मेला ही किया करने है नारायण

तो मा चापने कुछ भी न विचार ॥

अभाग० हा । धन के लोभ मे कोई बात विचारते है मेरे काहे
के माता पिता हैं माता पिता होने तो क्या ऐसे को सी
प देने हा में तो दुश्मन समझती हूँ । मा चाप का क
टु शब्द बारम्बार कह करेती है । हा । मैं कहा
जाऊँ मुझ से तो यह क्लेश नहीं सहा जाता है । पृ
थ्वी नूँ क्यों नहीं फट जाती है जो मैं मुझ पे समाजा
ऊँ और दुःख से बन्तू ॥

सुभाग० श्री प्यारिधी राज, धरे अब रोने से क्या होगा अब तुम्हे
इसी तरह जन्म विताना है (मिजाती हूँ) (प्रोहता नी
जी आती है) ॥

प्रोहता नी सेतानी जी, आज क्या धन मनी हो कौन ऐसा दुःख तुम
को पड़ा है भला घताओ सही ॥

अभाग० अजी । प्रोहता नी मी हूँ खे किस से कहूँ कोई सुनने
वाला ही नहीं न कोई सुन कर भी दूर जा सकता है ।

प्रोहता नी अजी बतओ सही ऐसा क्या दुःख है ॥

अभाग० मैं अयना दुःख नहीं कटूगी सुन कर कोई पूरा थोड़े

ही करेगा उन्हीं पेरीं ही हसी करेगा ॥

मोहनजी ॥ नही कहिये । मैं पून की कसम खाती हूँ किसी से भी
नो नेरा हाल कहूँ और मुझ से जहाँ तक बनेगा मेरा
दुःख दूर हो करूँगी ॥

प्रभाग ॥ अच्छा मुन मेरा पनि रहूँ ही मेरा मनोर्थ पूरा नही हो
ता है इस का क्या उपाय है बनाओ ॥

मोहन ॥ अरे ! वावरी ऐसी बातों की क्या फिर करनी है
ऐसी कितनी का दुःख दूर किया है जिमसे नूतन
ने काजी फरे मैं मिला दूँगी ॥

प्रभाग ॥ मोहनानी जी ! मेरा मन नो अविवेक चन्द्र से मिलने
का है उनसे पिला रहूँ मेरे मन का भ्रम है पर ये मा
काय कर निससे मेरा काय हो जाय और किसी को मा
नूँ मही ॥

मोहन ॥ अरे ! सेरा ॥ अरे ! अविवेक चन्द्र से मेरे यहा जाना जा
ता है हम दोनों मिलना महज है - मुँदेरी जी के दर्शन
होने के लिये मेरे यहा चलीया मेरा घर देरी जी के
घर है मैं जानती हूँ है और जानतु के अविवेक

- इसे मिलाना जवानी के मजे चरवाऊंगी ॥
- ग. अच्छा जी तुमने खूब बात बिचारी तो कल में शय को न स्तर आऊगी तू उनको बुलार बना ॥
- इ. अच्छा मैं जाती हूँ आप कल आना (जाती है)

पटाक्षेप

दसवां दृश्य

- प्रोह्तानी जी के घर में अविवेक चटनी बि रान मान हैं और प्रोह्तानी जी अविवेक च न्द से हंस २ बातें करती है ॥
१०. हहह आन प्रोह्तानी ती खूब हसती है ॥
१०. अरे मैं क्या हसती हूँ तेरा न सीब हसाना है आन तु फे वह माल दिलाऊंगी ले अब बहुत दिन बाद मेरा भी सुंदर पीठा करना और क्या ॥
१०. प्रोह्तानी जी ! कौन माल भला बतलाओ तो सही ॥
१०. अनी ! कुत्त चन्द की बहू से तु फेमिलनाऊगी आन मेरे यहा आती होगी ॥

- श्रवि० सुनकर फूल गया (मूछे पर हाथ फेरने लगा
हो गया) खुश मान हुआ) कहते हैं
मान हाथ लगा (उसी क्षण अभाग बती का प्रवेश
श्रभाग० (हस कर) ओह तानी जी क्या करती हो ॥
जोह० आइये सेहानी जी मैं मुम्हारे ही काय का चरोपस
रती हूँ - लीजिये यह श्रविने कचनर गेटे में अ
रपाने पर बैठती हूँ कोई आप न जाय ॥
श्रवि० हे प्यारी मन्त्रियों शरमानो हो नुमते यही मिह
नी की जो सुभ गुन्नाम को याद किया अब यह
म मन मच तेरे ऊपर नौछाव रहे तो नेग नी चढ़े
कर मैं तो तेरा तो बयर हूँ ॥
अभाग० गति आप ऐसा नशा कहते हैं मेरा मन तो आप से मि
मे को जे सद्विसेया जब आप की आर मेरे रे बिको
घेले में बार बार खिड़की ॥
श्रवि० (प्रसन्न होकर) अहा तो भला आपने दुनारी
सो कही ॥
अभाग० ये क्या करे अभी न काम करने का कोई मौक़ा

ला था आज नारायण की कृपा से आप से मिलना दुःख
यह भी प्रिय आप ही का है जो खुशी हो सो कीजिये ॥

पृथक् ग्यारहवां दृश्य

दोही लाल धूपनी दूकान पर खड़ा दुःखी
पही आप अविवेक चन्द और प्रभाग बती
की दोस्ती होगई ॥

मोहता नी के घर में राज जाते हैं और अविवेक चन्द में
र दुश्मन है देखो आज मैं की सा फजीहता अविवेक
चन्द का करता हूँ किसी चपरासी से कहकर उन की
फजीहता करना चाहिये ॥

(पीकटान धूली चपरासी का प्रवेश)

दोही ० श्री ॥ आइये हजरत एक सेने की खिडिया बतार
खुश तो न होंगे मेरे लाल में तो नहीं आती नुम लगा
ओ फन्द मगर एह सान मेरा काहे को मानोगे ॥
श्री ॥ मिया बताने भी या एह सान की तरह राय

देही०

लोग देखूँ भी कैसी चिढ़िया या ॥ १७८ ॥
जान बाल की देखी जायगी ॥

ये लो ॥ मैं बनाता हूँ ३२ मन्वर वाले मराने मे जे
वियों के रास्ते मे है प्रोहता नीजी के घर अभाग बरि
और श्रीबेक चन्द दोनों गये है ये जस्तर मुन्दे कु
चढावेगे वस ले लो - नूको मत - उस्ताद भी न
जाओ। खाली बार हर्गिजन जायगा ॥

पीक०

अच्छा तो पार जाता हू खुदा चाहेगा जस्तर फल
ही होगी (गया)

पक्षिप चारुवां दृश्य

पीकदान ग्रनी का छिप कर बैठ रहना ने
उन दोनों का एक साथ निकलना कि न
पगसी का पकड कर खींच लेना ग्योर दे
नोर की ॥

पीक०

(नूता हाथ मे लेकर) नचा बहत दिना मे हाथ मे

जान सब कसर निकालूंगा ॥

बेचेक (हाथ जोड़ कर) प्रिया जी सुश्राफ कीजिये अपने किये का फल पाया अब अगाड़ी ऐसा काम कभी न करूंगा

कदान चचा अब क्या पछितते हो अभी बड़े रमजे चखाऊंगा नही तो जो कुछ माल तुम्हारे पास हो हम को दे दो ॥

बेचेक (जमीर गले से उतार कर देता है, और कहता है कि भाई छोड़ दो लोग सब इकट्ठा हुए जाते हैं।

कदान अच्छा लाइये मैं जाना हू (गया)

नेने में सुहृदों के सब लोग जया हांगये और दोनो को बीच में घेर कर खड़े होगये अब तो अब बेचेक चन्द मन ही मन में सोचना है मैंने अपने किये का फल पाया धन इज्जत सब गया अब यहाँ से चलना चाहिये इसका पति आता होगा (भागता है)

(हल्का गुनकर कुम्हल चन्द आता है और अपनी स्त्री को देख कर कहने लगा) हे ! हत्यारी तूने मेरे कुल को बहलगाया हा ! मेरी इज्जत गई हा ! अब मैं क्या ससार में सुहादिराऊंगा

- हा। गंगा मे जाकर दूध मस्तुका बुतेने मे पाणि दुन भानु प्रकाश
 आकर हाथ पकड़ लिया और समझाने लगा ॥
- भानुप्र० मुन प्रांगे नूने अपने तर्जुनी विचार कियुवा प्रब
 ज्या के साण बिनाह करना हू इसका प्रतिफल
 इसके क्या होगा प्रब पारंगे मे दख और विचार कर
 पादिले नूभा जब नवान था नय नेरी क्या दशा था भ
 ना नूतो मर्द था यह मर्दा हू लिलेया को मर्द से
 काम सताना है नूने धन के मर्द मे आकरा ॥३॥
- फल भाग नूने गच्छो म कहान माना ॥ ३॥
- भोग-अरे। प्रब तो अधर्म किया उमका कल पाया
 प्रब और अधर्म क्यों करना है आत्म धान का पा
 प इसमे भी जुग है ॥
- नय० मरसी तगफगडा से कर रुहने लगा।
 हे। भद्र पुरयो दार्जिय पाणि किंसा नष्ट प्रन निव
 ह किंति मका प्रति फल मनु प्रर रिए पादो है प्रेमा
 सगितियो मे किठनी मनु की हानि होनी है दुम गिति
 मे धन देने जाने और लेने जाने दोना पर जान द मेन

चाहिये - नहीं ना इसी कुरीति पर सब लोग चर्चने लगे तो बड़ी झ
 न होगी जिन नौ कुरीतियों के अन्तर्गत होने से पाप होता है उसके
 अपभागी सम्पूर्ण बांधव गण होने है क्योंकि जिस प्रकार राजा के
 जन्म में प्रजापति की कुरीति को राजा पाप भागी होता है इसी प्रकार द
 न देने से कुटुम्बीजन पाप भागी होते हैं आप लोग ऐसा समझते
 होंगे कि जो करेगा सो फल पायेगा परन्तु यह आप लोगो की बु
 द्धियों का भ्रम है जैसे कि आप सब कुटुम्बीजन एक घर में रहिये
 और एक उनमें गढ़ा खोदें और यह विचार करें कि जो गिरेगा उसी
 के चोर लगेगा परन्तु कदाचित् आप ही गिर पड़े तो क्या आप
 ही मारे जायेंगे आप बचा कर बड़ा चतु राई से चले परन्तु आपका सन्तान
 अवश्य कोढ़ गिरे हीगा उसका फल क्या आपको मिलेगा अव
 श्य आपको फल भोगने पड़ेगा - हे बंधु वर्गो मनुष्य शरीर काय
 ही फल है कि महान्तक बन् पड़े शीघ्र इन कुरीतियों को उखाड़ा
 लना चाहिये ॥ ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ३

कुतुब नाटक

१	छंधेरमणिनारक	७	११	महाभूषेरमणिनारक
२	चोनिस्तनाटक	७	१२	कथतिउत्तम है
३	जयनारसिंहनाटक	७	१३	मतिमभेरमणिनारक
४	भारतजननीनाटक	७	१४	कथहभीउत्तम है
५	भूतनाटक	७	१५	सत्यहरिभन्द्रनाटक
६	काल्यविवाहनाटक	७	१६	विद्यान्वविद्या उपन्या
७	भारतगुर्दशनारक	७	१७	समतिउत्तम है
८	भूतनीलाकारिनीरह	७	१८	विद्यान्वविद्या उपन्या
९	पातद्विचारण	७	१९	समाविनदीर
१०	गदनमन्त्रीनाटक	७	२०	निरुद्धनीरुगिनारक
११	विद्यागुर्दशनारक	७	२१	विन्नीउर्दनाटकदेख
१२	वीरदेवीनाटक	७	२२	वे योग्य है
१३	काल्यनाटकक्याही	७	२३	कन्यासन्धिधर्मीमर
१४	महुतउत्तमकहे	७	२४	कपाहस्ताभाग
१५	कर्पूरमन्त्रीनाटक	७	२५	नयादूसराभाग
			२६	कृष्णकृपादेनाटक
			२७	वीरमणिनाटक

पद्मावती नाटक	५७	३३	सच्चा मित्र (मित्र हो तो ऐसा हो) यह नाटक	३
सन्तोदय नाटक यह नये युग का है	७		कम्प्रवश्य ३ देखिये	
शकुन्तलाना नाटक मये	१४	३४	अनामधरी नाटक यह	३
परदेवत सवीर आदि			हमपातेयारहुआ है	
शकुन्तलाना नाटक ला	७॥		काविल दीर है	
लागणेश प्रसाद सा		३३	नूतन चरित्र नाटक	५॥
फर्रखावादी कृत		३६	तमाशा गार्दिश नाटक	७॥
समुद्र यात्रा नाटक	७५		दीर यानी सन्य हरिश्चन्द्र नाटक	
सती नाटक सफा १६०	७॥			
अति उत्तम श्रीरविल		३७	भ्रम माल नाटक	२७॥
चस्य नाटक है		३८	मुहब्बत हुराम नाटक	७॥
भारत हिम हिमा नाटक	७		अवश्य देखने योग्य है	
क काविल दीर है				

ह० चिन्तायापी शिव चरणालाल बुक सेलर
शहर फर्रखावाद्



श्रीः ॥

❖ चम्पकवरणी ❖

(उपन्यास)

जिसको

रायगढ़ निवासी प० अनिरुद्ध चौवे
हेडमास्टर ने रचा

उसीको

शिवलाल गणेशीलाल ने
मुम्बई टाइप से

अपने 'लक्ष्मीनारायण' यन्त्रालय
में छपाकर प्रकाशित किया

MORADABAD

प्रथमवार]

सन् १९०४

चम्पकवरणी

(काल्पनिक उपन्यास)

प्रथम परिच्छेद.

चन्द्र प्रतापपुरी एक अति रमणीय और शोभा
यमानपुरी बगडकारण्यके ईशान दिशाकी ओर-
सुशोभित थी, पुरी की रम्यता विलेक्षण थी उ-
सके निकटस्थ सघन भाडिया थी और नगरके
समीप कहीं २ अनुपम पुष्प वाटिकाएँ सुशो-
भित थीं तहां वीराशिरोमणि धर्मधुरधर ऐश्वर्य
शाली महाराज विक्रम प्रतापदेव सिंहासनारू-
ढ़ होकर निज अनुपम शासन द्वारा प्रजागणों
को शाशित एवं अप्रतिहत प्रताप से प्रतापित
थे इनके एकही लडका चन्द्रप्रतापदेव नामक
परम चतुर राजनीतिज्ञ और सकल कलाभिज्ञ

ये इन्हें आखेट खेलने का एक ऐसा दुर्व्यसन प
 गया था कि बिना इसके उन्हें कल नहीं पड़ती थी
 एक दिन सवेरे अपने पिता से आज्ञा लेकर अपने
 परम वंशशास्त्री सेनाको साथ ले आखेट निमि
 त्त आरण्य में प्रवेश किया और जङ्गल की परम
 रम्य शोभा देखते-देखते दूर निकल गये और व
 हा अनेक भातिके दिसक पशुओं का घात कर
 पने पुरीको खेलने की सघोंको उत्तेजना दिए
 कि तुम लोग पुरीके निकट किसी स्थान में वा
 स करोगे, मैं कुछ कालोपरान्त तुम लोगों से आभि
 लूंगा ऐसी सम्मति दे आप अपने अट्टपारु
 ढों जंगल की ओर चले उधर से निकगण पुरी
 की ओर चले और एक सरोवर के तट पर उतर
 अपने २ भोजन बनाने के कार्य में उद्यत हुए ।

भव भगवान् शंभुमार्त्तके अन्तर्धान होने

काँधों पर है। भगवान् प्रभाकर अपने प्रफुल्लित
 मुखे वारिन्द्र को शनैः २ छिपाने की चेष्टा कर रहे
 हैं गगन मङ्गल भी रक्तवर्ण भाषता है। विहगगण
 अपने २ विश्रामस्थान को, मानो सन्ध्या हो-
 ने का आँसू हो रहा है ऐसे सम्भाषण कर, क्रम
 शः जा रहे हैं। इसी आँसू पर एक युवक घोड़े पर
 घटतृपासे आतुर हो जलस्थान का राह खोज
 रहा है उसके चेहरे से बोध होता है कि वह तमाम
 विषसुकी कराल धूप सहन किया है और रास्ती
 भी भूल चुका है। निदाने जलस्थान की आशा
 छोड़ एक राह पकड़ उसी पर चलना आरम्भ
 कर दिया है इधर मयक महाराज अपनी शीत
 लप्रकाश से प्रकाशित हो सम्पूर्ण जगत् में प्रका
 श करते हैं तारागणों की ज्योति आकाश में जगम
 गाती है = । (- - - - -)

इस अवसर पर हमारे युवक को एक नई गीचा दिखाई दिया। इसे देख हमारे युवक पिन्ताओं पर हँस दोनों में डोमा डोल हुए।

पर हमारे युवक जैसे साहसी थे वैसे ही बुद्धिमान भी थे। महामहिषी चिन्ता का परि त्याग कर आगे बढ़ने का उत्तेजन प्रपत अश्व को दिया, जो जल सरद काल की शुष्क घट्टी है और पीछे की ओर में मयक महाराज भी निजस्थान जाने में कश वि देरी न करेंगे ऐसे अवसर पर हमारे युवक को एक महल दिखाई दिया जो आति विस्तृत और चहुँधोर सपन वृक्ष तथा लताओं से सुश्रुजित था उसके समीप एक परम मनोहर सरोवर संगमर्मर सिला से घेरी हुई सीढ़ियों के सुनोभित था इसमें उत्तर की ओर एक मनभावनी घाटिका (कुतुम कानन) थी जहाँ जने

क प्रकार के पौधे तथा लताएं अपने २ मद् से
मदान्ब हो लहरा रही थीं हमारे युवक आनन्द
हो निर्मल जल का पान कर और घोड़े को हरि-
याली घास में छोड़ कर आप एक विसाल रसा-
ल वृक्ष के नीचे बैठ सोचने लगे कि इस शुन्य
स्थल पर इतना मत्तोरम्य वन, तथा सरोवर
और इतना विशाल महल, किसीने बनवाया, यह
ततो कोई देवस्थल, और न कोई महर्षिका वास
स्थान है, ऐसे स्रकल्पों में लगे ॥ तभी तब
अब सम्राट, प्रभाकर के आगमन हमारे युवक
को, प्रक्षियों तथा भृंगगण की मधुर झलख द्वारा
गोधर् हो रहा है आकाश का रंग कुछ और ही प्र-
कार की खरहा है इस अवसर पर हमारे युवक
को मधुर स्वर की ध्वनि प्रवण गोचर हुई वे उ-
स माधुर्य आहट की ओर देखने लगे पर कुछ-

इस अवसर पर हमारे युवक को एक बड़ा गीचा दिखाई दिया। इसे देखकर हमारे युवक की नज़रों और हृषीकेशों में बड़ा जोश हुआ।

पर हमारे युवक जैसे साहसी थे वैसे ही बुद्धिमान भी थे। महामहिषी चिन्ता का परित्याग कर आगे बढ़ने का उत्तेजन अपने आपको दिया, जो ज सदैव काल की शुक्ला अष्टमी है और थोड़ी देर में मयक महाराज भी निजस्थान जाने में कदापि देरी न करेंगे ऐसे अवसर पर हमारे युवक को एक महल दिखाई दिया जो अति विस्तार और चहुँ ओर सघन वृक्ष तथा लताओं से सुसज्जित था। उसके समीप एक परम मनोहर सरोवर। संगमर्मर सिला से बँधी हुई सीढ़ियों के सुशोभित था। इसने उत्तर की ओर एक मनभावनी वाटिका (कुसुम कानन) थी जहाँ बने

प्रकार के पौधों तथा लताएं अपने-अपने से
 मदान्बहो लहरा रही थीं हमारे युवक आनन्द
 हो-निर्मल जल का पान कर और घोंघों को हरि-
 याब्धी घास में छोड़ कर आप एक विशाल रसा-
 ल वृक्ष के नीचे बैठ सोचने लगे कि इस शुन्य
 स्थल पर इतनी मत्तोरस्य वन्या, तथा सरोवर
 और इतना विशाल महल, किसने बनवाया, यह
 जतो कोई देव स्थल और न कोई महर्षिकावास
 स्थान है, ऐसे सकल्पों में लगे ॥ तभी तब —
 अब सम्राट प्रभाकर के आगमन हमारे युवक
 को प्रक्षियों तथा भृगुगण की मधुर झलख द्वारा
 बोध हो रहा है, आकाश का रंग कुछ और ही प्र-
 कार दिख रहा है इस अवसर पर हमारे युवक
 को मधुर स्वर की ध्वनि प्रवण गोचर हुई वे उ-
 स माधुर्य आहट की ओर देखने लगे पर कुछ

चक्षु गोचर नहीं हुआ पर शनै र बोध होने ल
 कि यह आवाज किसी सुन्दरी की है ऐसा सो
 ही रहे थे कि वो अनुपम शृंगारवाली तरुणी उ
 के चक्षु गोचर होने लगी जो कि उस सरोवर
 एक घाट में गात्रमार्जन कर, बस्त्र धुलकर उ
 उद्यान में भ्रमण कर रही थीं देखने में उम
 सुंदरी चतुर्दश वर्ष की अवस्था वाली थीं
 तब अव हमारे युवक उनकी लावण्यता की म
 नुत घटा निहार भौंचक सा होगये और मना
 मन कहने लगे कि इन कामिनियों की सौ
 र्यता इन्द्र की प्रियों से न्यून नहीं चक्षु गोच
 होती इसी प्रकार हमारे नव युवक उन दो
 में से एक जो अतीव सुन्दरी थी उस मृगनय
 के कटाक्ष से घोट खा भिचकिया गये तब
 भगवान प्रभाकर के उदय होने का समय ।

रहा है चिड़ियों का चहचहाना, शीतल मन्दसु-
 गन्ध वायु का सनसनाना, देख-उन कामिनियों
 काचित प्रसन्न हो रहा है ऐसे समय पर एक अप-
 रिचित पुरुष देख वे अपनी २-घूँट की वृद्धि
 करने लगीं, हमारे युवक ने उन्हें स्नान करती
 देख पाकेट से सीसपेंसिल और कागज निकाले
 ल उसमें कुछ लिख बाटपर डाल दिया था जि-
 से उनमेंसे एकने उस कागज की उठा अपने
 पास रख लिया था
 अब हमारे वाचकचन्द्र को भी उस चन्द्रकान्ता
 की शोभा देखने की रुचि होगी पर हम तो अभी
 अपने नव युवक की ही खट राग में फसे हैं सम-
 यानुसार उसकी भवित्तीय शोभा का वर्णन कर-
 हम अपने पाठकों को सुतोषित करेंगे:-
 वाचकचन्द्र! आप लोग तो समझ ही गये होंगे।

कि वह कागज का टुकड़ा, कागज का टुकड़ा नहीं
 वह जिहरी सी हुई प्रेम का सुन्दर लता है
 पुरुष की ओर से घोड़े के टाप का शब्द सुना
 दिया और धीरे-धीरे एक अजनबी युवक आन
 पहुँचा उसे देख युवती गणने अपने महल में प्रवेश
 कर महल का द्वार बन्द किया।

द्वितीय परिच्छेद

युवक—महाशय आप इतना दुःख सहन कर
 रहे हैं इस कारण में क्यों कर प्रवेश किया
 अपरिचित पुरुष—महाराज आप की सेवा में
 उपस्थित होना मेरा परम धर्म है अब आप
 मुझे आज्ञा दें कि मैं आप की सेवा में सर्वदा
 वद्यत रहूँ।

युवक—तो महाशय मुझे इस स्थल से बाहर
 निकालने में सहायता कीजिये पीछे पुनः आप

से प्रार्थना और विषय की करूंगा. 107
 अपरिचित—नो अज्ञात आइये मेरे पीछे अपने
 अश्व पर सवार हो चलिये ऐसे स्थान में ठहरना
 आप लोगों को नहीं चाहिये, उस अपरिचित पुरुष
 की बात सुन हमारे युवक घोड़े पर सवार हो उसके
 पीछे होलिये और जगल को मनोरम्य शोभा देखते
 एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ बहुत से सैनि
 क गण उपस्थित थे, हमारे युवक को देख सबोंने
 प्रणाम किया और सब उन्हीं के पीछे चलने
 लगे उस समय सन्ध्याकाल, सत्राट प्रभोकर अ
 स्ता चल की ओर त्रिदा हुये, चन्द्रमा भी धीरे धीरे
 हँसते हँसते अपने प्रकाश से प्रकाशित हुये और
 हमारे युवक अपने वलशाली सेना के साथ अपने
 पुरी को कुशल से पहुँचे हमारे पाठक गण
 समझ ही गये होंगे कि वे युवक कौन थे और अप
 रिचित पुरुष का धोप हमारे आर्चक वृन्द को न

ही होगा " वै हमारे राज कुमार चन्द्रप्रताप के
 उसके मित्र धरुण देवये " जिन्होंने राज कुमार की
 खोज रात्रि ही भरे में की, और उनसे मित्र
 उन्हें जेही आये अब पाठक चन्द्र जान गये होंगे
 कि उनमें और धरुणदेव में कैसी गूढ़ाढी मि
 त्रता थी।
 जो समय शरदकाल, दक्षिण ओर से शीतल
 मन्दा सुगंध वायु प्रवाहित हो रही है, आकाश
 निर्मल चन्द्रमा का विकास चम्पकवरेणी प्रस
 गपर पड़ी है और कुन्द उसके पास खड़ी उसे
 समझ रही है, चम्पकवरेणी एक पत्र को अपने
 वक्षस्थल पर रख ठीक सांस खींच रही है
 १ कुन्द-सखीन्तु मीवरीसी क्यों धनी जाती है ?
 २ चम्पक-बाहिना क्या कहे कलेजा फटा जाता
 है पर रो नहीं सकती।
 ३ कुन्द-कहतो कुछ !

चम्पक—मुझे यही व्यथा व्याकुल कर रही है कि वह माधुर्य मूर्ति कब प्राप्ति हो-
कुन्द—वहिन ! ईश्वर दयामय है क्या एक अनाथ अबला की प्रार्थना नहीं सुनेगा-

चम्पक—हा वहिन मैं भी पुराणों में पढ़ी हू कि ईश्वर दया मय है पर मेरे लिये क्या वह सहायता करेगा-

कुन्द—अवश्य करेगा

तब तो चम्पक ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि हे दयामय परमेश्वर तेरी महिमा को पारोवार पानी दुस्तर है किन्तु जब तेरी अनुग्रह मुझ अमाग्निनी अनाथ बालिका पर होगी तो अवश्य ही मेरा भूतार्थ सिद्ध होगा ऐसा कह-फिर-पत्री का पाठ करने लगी ।

प्राणवल्लभे !

हे-आपके शशिवत् मुख के दर्शन को सर्व
 में चकोर की भांति जो रह रहा है कि मैं क
 वत् मुख के प्रभाव से कण्ठ रजनीवत् चिन्ता
 शीघ्र ही दूर हो जायेगी,
 दोहा ।
 कोमल गोल कपोल अति, अजब गुलाबी रङ्ग ।
 मन मथ वाको भोंह वसि, माख्यो सर मम अङ्ग ।
 चित्त चंचल धीरज नहीं, दहत अग निस काम ।
 शेखर कचन कुम्भ विन, और कहां विश्राम ॥
 भरा सलिल योवन प्रिये, वँक्यो प्रेमकी दोर ।
 सरजी प्यारी वीजिये, गोता खेड हिलोर ॥
 शिम्पकी-पत्रा मढ़कर बहिन प्रिया कहूँ मैं अपना
 तन मन राजकुमार को उसी समय समर्पण कर
 चुकी पर वे मुझे पाकर भी सुख भोगने की
 इच्छा नहीं करते

कुन्द-बहिन! ऐसी अधीर तू न हो, आपत्तिकाल में धैर्य का त्याग न करना चाहिये किन्तु प्रमाद को छोड़ उद्योग का आश्रय लेना ही ठीक है।

चम्पक- किसका

कुन्द-बहिन मैं आज जाती हूँ परसों कोई खबर तुमको अवश्य ही मिल जावेगी, पर जो कुछ तुम्हें उन्हें लिखना हो लिख कर दे।

चम्पक-एक कागज लिख उसे दे दिया इस के उपरांत कुन्द अपने विश्राम स्थल को चली गई, आनन्दवर्धक मयक महाराज निज छवि बढा रहे हैं, स्तब्ध का अटल राज्य जमा है, निद्रा देवी भूल कर भी आज हमारे राजकुमारी के समक्ष नहीं उपस्थित होती

तृतीय परिच्छेद

इधर हमारे राजकुमार चन्द्रप्रतापदेव भी

सब काम काज तृणवति त्याग यही विचार कर रहे हैं कि वह मृगनयनी मुझे क्यों कर प्राप्त हो कामके संचार से हमारे राजकुमार ऐसे वृक्ष में पड़े कि उसे देखकर हमारी लेखनी आम नहीं बढ़ती हायरे कामदेव-सोर्गों को अनायास ही में उपहोस भाजन बना देता है ।

अब तो हमारे राजकुमार की भद्रता का लेश न रहा, धीरे विनय और गाम्भीर्य भी उस मृगनयनी के वश होगये, लज्जा को तो प्रथम ही से हमारे राजकुमार ने उस तरुणी को तिष्ठा जली कर दिया था ॥

ऐसी दशा में हमारे राजकुमार के मुख से बात नहीं निकलती है और उनके प्रियमित्र वरुणदेव घैठे रहे सब वार्ते देख -

॥ वरुण-प्रियमित्र ! यदि अनुग्रह पूर्वक मेरी

प्रार्थनाको श्रवणकरा अंगीकृत करने की सहानु-
भूति प्रकट करें, तो प्रार्थना करूँ।

राजकुमार- कहिये।

वरुण-राजकुमार आप इतनी चिन्ता क्यों
करते हैं, यह नीति है, कि-जो जिसके हृदय में
रहता है अर्थात् जो जिससे प्रेम रखता है वह
र रहने पर भी उसके निकट है और जो जिसके
हृदय में नहीं रहता है वह समीप रहकर भी उसे
र है कामनाओं के चिन्तन से-कामना, कभी
पान्ति नहीं होती सोये-हुए-सिंह-के-मुख में
गे नहीं घुस जाते, कौन बिना उद्योग के तिल
तेल प्राप्त कर सकता है, अतएव-राजकुमार
आप चिन्ता का परित्याग करिये, यदि ईश्वर की
प्राप्त होगी तो आपका मनोर्थ अवश्य ही सफल
होगा और मैं भी प्रण कर-कहता हूँ, कि-भापु

को इस विषय पर पूर्ण सहायता दूंगा, ऐसे वरुणदेव अपने स्वकार्य में उद्यत हुए, पर राजकुमार हमारे क्यों कोई कार्य करते हैं।

अपने ही करतब को ठीक जान फिर उस सुन्दरी की अनुपम छटा की ओर ध्यान करते लगे अब तो यह दुख हमारे राजकुमार को दुःसह हो गया उस चन्द्रकान्ता के अतिरिक्त उन्हें कुछ सूझे ही नहीं पड़ता था।

अब भगवान् प्रभाकर के अन्तर्ध्यान होने का अवसर हो रहा है इस अवसर पर हमारे राजकुमार के मित्र वरुणजी आकर अपने स्थान पर बैठे रहे। वरुण—राजकुमार आप को ऐसा उदास न हो जाना चाहिये इस कार्य के सिद्ध्य मैंने जो यत्न सोची है उससे बोध होता कि अवश्य वह सुन्दरी आपको मिल जावेगी।

राजकुमार—प्रसन्न वदन से, कहिये क्या आ-
ने विचारा है,

वरुण—उसमें कहना क्या है जब श्रीमानको
अभी इस घातका सिलासिला यहीं लों पहुँचा है
कि एकद्वार पाल-आया और कहा महाराज ए-
क औरत बाहर खड़ी है और कहती है कि यह प-
त्र स्वयं मैं राजकुमार के हाथ में दूँगी

राजकुमार—अच्छा तो बुलाओ
द्वारपाल—बुलाकर लाया और आगन्तुक स्त्री
के पत्रको राजकुमार के हाथ में दिया,

पाठकगण—अब तो राजकुमारकी चेष्टा और
ही कुछ दीखने लगी छाती दूनी होने लगी प्रेमा-
लिङ्गन की आशा बढ़ने लगी—

उसमें यही लिखा था —

प्राणनाथ !

मैं अपनेको सब भाँति से आपको सौंप चुकी-

प्यारे ! मैं आपके सन्द मुसकान और प्यार भरी
चितवनको निज नैनोसे कब देखूंगी और इसी
आशासे जंगलकी राह सदैव निहारती हूँ,

हा ! करतार की बुद्धि अल्प है जो कि आपके
राह देखनेमें विघ्न डालनेके हेतु पत्तों बना दी
हैं, आशा करती हूँ कि आप अपने प्रसन्न भरे मुँह
की शोभा को दिखा कर तापको हरेगे,

करि शृंगार नित चितवती, पीतम पथ तुम्हार ।
पत्रि आपकी वसति उर, यथा रत्न की हार ॥
वढत सदा अनुराग हिच, मिलन प्रीति की रीति ।
शेखर प्यारे आपविन, धीर लहै नहि चीत ।

राजकुमार घड़ेवाव से पूछने लगे कि तुम्हारी
स्वामिनी ने और भी कुछ कहा है ?

कुन्द- नहीं इन बातोंसे हमारा प्रयोजन नहीं
भुके भव जाने की आशा हो ।

राजकुमार ने एक कागज दे उसे धिदाकिया
 इधर राजकुमार फुल्ले अग नसमाये, भातिर
 के तर्क वितर्क अपने हृदय में करने लगे कि धन्य
 भाग जो उस कामिनी ने मेरी स्मरण करी ।
 पाठकगण! आज पूर्णिमा है आज भगवान् निशा-
 नाथ अपनी सम्पूर्ण कलाओं से जगतको आनन्द
 करेंगे भगवान् दिवाकरके लाल मण्डल का प्रति
 विम्ब हमारे राजकुमार के चक्षुगोचर हो रहा है,
 वरुणदेव प्रथम ही से चले गये, हमारे राजकुमार भी
 आज आनन्द हृदय से सब काम काज सन्ध्या
 अवसरका निपटा आकाशकी ओर देखते पलंग
 पर लेटे हैं, निशानाथ अपने प्रफुल्लित मुखोर्ध्व से
 सम्पूर्ण जगतको आनन्द कर रहे हैं आज निद्रा
 देवी भी हमारे राजकुमार पर सहसा आक्रमण
 करने को तैयार हैं ।

चतुर्थ परिच्छेद ।

(चम्पकवरणी पलगपेर लेटी है कमला श्रीवल्लोपचार करती है)

चम्पकवरणी—ऐ कलकी मयङ्क तूने ने अपनी दाहककिरणोंसे विरही जनों को जलानेकी निर्वयता किस गुरु से सीखी है ।

कमला—प्यारी धीरज धर ये देख कुन्द भी आगई,

कुन्द के आगमन की खबर सुने भट पलङ्क से उठी कुन्द ने पत्र हाथ में देदिया ।

चम्पक—पत्र पढ़कर प्यारी सखी इस उपकार को बदला तुम्हें मैं देनहीं सकती जो तू ऐसे अगम तथा अनजान जगह से यह कार्य कर लाई, भला बताते राजकुमार ने और भी कुछ कहा है ।

कुन्द—सखी अबतू क्यों नाहक सन्देह के

जाल में पड़ो है अवतरे भाग जगे यह वही राज-
कुमार है, जिसपर तू इतने दिनों से लौ लगाये
थी कल वह अतोखा पाहुना तुझसे आकर मिलें
गे और हम सब लोग भी उनकी पहुँचाई कर
अपना जीवन सफल करेंगे । - 167 -

चम्पक-प्रसन्न-वदन से क्यों सखी कल वे
राजकुमार यहां आवेंगे ?

कुन्द-तो क्या मैं भूठी हूँ ।

चम्पक-नहीं नहीं कह तो कै वज्र आवेंगे

कुन्द-मध्याह्न के समय ।

चम्पक-तो कल सुबह होते ही हमारे जगल
अमण का सब सामान इकट्ठा करना ।

कुन्द-अवश्य करूंगी ।

पाठक-कुन्द अभी आधीरात का अवसर है
मयंक महाराज निज अप्रतिहत प्रतापसे प्रता-

पित हो रहे हैं कुन्दा और चम्पक। अब समय करने को निजस्थान को त्वली गई है ठीक है विधेता की इच्छा जिसे अवश्य होनहार के सुघटित करने का इच्छा है, जिस ओर अपनी भुकावट प्रगट करती है उसी ओर सनुष्य का चित्त भी हवा के झोके से तरुण के समान विवश हो दौड़ जाता है ॥

पाठकगण अब आधी रात्रि बीत गई है वो युवक घोंडे पर बड़े पुरी की नैऋत्य दिशा की ओर जंगल लाघते चले जाते हैं उनके स्वरूप से बोध होता है कि किसी की खोज में जा रहे हैं उन में से पहिला युवक कहता है कि मित्र क्या उस शीतलमूर्ति द्वारा मेरी संतप्त हृदय शांत होगा प्यारे मित्र जो उस तरुणी का चित्र मेरे हृदय में जड़ गया है अब वह मेरे हृदय से कभी अलग नहीं हो सका ।

ऐसे ही अनेक तरह की गायतें करती हमारे
पुष्पगोष्प खिले जा रहे हैं ।

पंचम परिच्छेद ।

घाटककुन्द प्रातःकाल का अवसर है मन्द
सुगन्ध शीतल वायु फैल रही है, कहीं सुन्दर
सुगन्धवाले पुष्प खिले रहे हैं, कहीं सुन्दर मीठे
फल वृक्षों में लटक रहे हैं । कहीं पक्षीगण अनेक
मोला रांग से रीभाते हैं, कहीं सूर्य की किरणों की
अरुणाई सुख दती रही है ।

विष्णुक—प्यारी सखी कुन्द आजतू क्यों ऐसी
बबड़ाहूँसी हो चित्ते दीख उपडती हो ज्वोलने पर
भी नहीं सुनती । राजकुमारों का और कुछ हाल
सुनती है ।

कुन्द—सखी मेरा अपराध क्षमाकर, मैं राज-
कुमार के प्रेम से मग्न थी सखी तू धन्य है जो

तूने अपने उदारगुणोंसे राजकुमार को वशीभूत कर लिया है वे भी तुझपर ऐसेही लवलीन हो रहे हैं अब स्नान करनेका औसर है चल-इस बचन को सुन चम्पक उठ आनन्द हृदयसे बली और उस सरोवर में प्रहुची और सुगन्ध डब-टन लगा स्नान कर अपने गृह में आई।

पाठक वृन्द !-आज-चम्पक का कुछ और ही हाल है शृंगार तो पहिले ही सजगई है और पीतम की मिलने की आशा बढेरही है।

भगवान सूर्यदेव अपने किरणोंसे प्रकाश कर रहे हैं और चम्पक सरोवरके पास बासी कुसुम कानन में अपनी प्रियसखी कुन्द को लेकर भ्रमण कर रही है इतनेमें इनको दो युवक घोड़े बौढ़ाते चले आते हैं ऐसा दीख रहा है। चम्पक सखी देख तो दो युवक घोड़े पर सवार हो चले आ रहे हैं।

कुन्द-वस, वस, मैं जानगई वे वही चित्त-
चोर हैं ।

चम्पक-अपना घघट बढ़ाकर उधरही देख-
रही है धीरे २ वे दोनों युवक उस सरोवर के
किनारे पहुँचे और अपने घोड़ों को एक रसाले
वृक्ष में बांध, सरोवर के किनारे बैठ-अचानक २
रमणी जिन में से एक सवाई सुन्दरी जिसके
घुघुरारी काली रात्रिवत् बालोंपर वामिनीसी
ज्योति मांगमोती तथा उज्ज्वल गोल कपोलपर
ऐसी रक्तमई वर्ण है मानो उष्ण कचनकी आभा
नासिका कीर चक्षुयत् तथा वसन् दाडिम-पक्ति
सदृश तथा कज्जल पूरित नेत्र हरिणवत् देख
युवकगण प्रसन्न होने लगे ।

वाचक-चन्द्र! समझ ही गये होंगे कि वे युवक
कौन हैं और वह चन्द्रकान्ता भी कौन है, प्रिय-

वरो ये भुवक, वही अर्थात् राजकुमार चन्द्र-
 तापदेव और वरुणदेव हैं और वही रमणी है
 जिसकी खोज के लिये आये थे देखकर प्रसन्न
 होने लगे और कुन्द राजकुमार को आत बेल
 कहीं जाछिपी ।

पष्ठम परिच्छेद ।

वाचक वृन्द । इस समय दोघड़ी दिन चढ़ा है
 भगवान् प्रभाकर अपने पुण प्रकाश से प्रका-
 शित हो रहे हैं राजकुमार चम्पक पास जाकर
 राजकुमार—चम्पककी ओर देख व्यक्त चातुरी
 का अनोखा ढंगकर प्रिये । तुम्हारे वियोग में
 मुझे किसी भीति कल नहीं पड़ती जब मैं आप
 की सेवा में उपस्थित होकर यही विनव करता
 हूँ कि आप मुझे अवश्य अपना दास बनावेंगी ।
 चम्पक—स्मर सुन्दरतः कानोंको अमृत के

समान दृष्टि पड़वाने वाली आपकी धाणी सुनने की अभिलाषा मेरी सदैव बनी है, प्यारे आप सरीखे नायक रत्न को ऐसी बाणों कहना नहीं चाहिये कारण मैं तो आपकी दासी हूँ।

राजकुमार—बुद्धिमती ! इन विद्वन्मनाओं से मेरी अभिलाषा कब पूरी होती है पर, उसका तो कुछ उत्तर मिले जिस कारण मैं यहाँ आया हूँ।

चम्पक—राजकुमार आप तो अब हमारे मा-
लिक हैं अब मैं आपको इसका उत्तर दूंगी

राजकुमार—कहिये

चम्पक—मैं आपको तन्मय जीवन से सब भाँति अपने को सोंप चुकी हूँ बात योंही हो रही है कि कुछ घोड़ों के टाप सुनाई देने लगे चम्पक झूट अपने महल में। राजकुमार को कल इसी अवसर पर मिलने का प्रण कर गई और हमारे

युवकगण भी अपने-अडवोंपर चढ़-चलेगये
कुन्द द्वारही पर चम्पक से मिली।

चम्पक—वाह सखी, क्यों न हो! भले मुझे
ही धोखेमें झकेली छोड़कहीं चली गई।

कुन्द—(मुस्कराकर) क्यों झकेली काहेकोरही
भला कहता सही कि सनो कामना सिद्ध हुई
या नहीं।

चम्पक—इसती हुई चल।

कुन्द—अब काहेको ऐसी न कहेंगी अच्छा, औसो
परदेखा जायगा, अब हमारे वरांगणाओं का वो
ढेके टाप टपा टप सुनाई दिये देखतेही बिल
सन्न होगया थांड़ी देरमें एकदल सवारों का उसी
महलके द्वारपर खड़ा होगया कुन्द न देखकर
भट किवाड़ खोल दिये

सवारगण—चम्पक को देख प्रणाम कर एक
पंथी दीं।

चम्पक—उत्सवत्रको पहँकर भट्ट एक ढोली पर सँवारें पूरवादिशा की ओर अपनी प्रिय सखी कुन्दको लेकर सब सवारोंके साथ चली और कुछ देर के बाद एक नगर में पहुँची,

अथ सप्तम परिच्छेद ।

अब हमारे युवक चन्द्रप्रतापदेव तथा वरुणदेव अपने-अपने पर आरुढ़ होचले और उस तालाबके किनारे पहुँचे जहाँ कि चम्पकसे भेंट हुई थी। महल का द्वार बन्द था महल के देखने से रोध होता था कि यह जनहीन है, हमारे राजकुमार अपने मन में धैर्य ला कुछ देर बैठे पर वही तरुणी काहेको निकले राह देखते २ संध्या भी होगई, निराश होकर राजकुमार तथा वरुण उस महल के पास जाकर बैठे संध्या का

शौसर है हमारे राजकुमार-चिन्ता के महा-
ताल में पड़े रात्रि भी बीत गई -वाल्मीकि के
प्रागमन की सूचना भी -इन्हें पक्षियों, द्वारा
मेली तो भी वह तुरुणी, न निकली ।

राजकुमार अवतों घबड़ाकर कहनेलगे कि
यारी ! क्या आप अपनी प्रतिज्ञा, भूल गई
यारी ! आपने यह निठुरपन कबसे ग्रहण किया
या आप नहीं जानती कि आशा देकर विमुख
हो जाने से कितनी ग्लानि आशावाही को
होती है इस लिये अब चन्द्रमा के मुख को
झाँक करने वाली सुंदरी मेरी विरहरूपी मान
सिक वेदना को कटाक्षरूपी कटार से क्यों नहीं
छेदन करती ।

वरुण-मित्र आप धैर्य धरियें जिस भाँति
मैंने पाहिले से आपको बचन दे रक्खा है, वह
कदापि अन्यथा होनेका नहीं ।

ऐसी ही पाशा दे राजकुमार को चंद्रप्रताप
 पूरी लगाए राजकुमार को भूख-प्यास तो रही ही।
 नहीं अपने पिता को दिखाने के लिये कुछ
 भोजन कर अपने साटिका में चित्त बहलाने
 गए पर चित्त क्या बहलाते वही मूर्ति की ध्यान
 उनके हृदय में आया फिर भी व्याकुल ही कहने
 लगे कि हा आज कल नर छैलेगर्ण अपनी र
 रमणी के आर्गसन की आशा करते हैं और
 मिलकर आनन्द प्राप्त करते हैं किन्तु मैं तो स्वयं
 चिर संतापित हूँ दूसरे का सुख वर्धन क्यों कर
 सका हूँ । विधाता ने ये सब आनन्द चखने को
 मुझे प्रगट नहीं किया ।
 उस समय हमारे राजकुमार के चित्त में
 जिस प्रकार वेदना हुई उसका अनुभव हमारे
 पाठकगण ! स्वयं कर सकते हैं, जिन्हें कभी ऐसा

कुन्द उसके समीप बैठ कर पंखा करती है सिर्फ हा १ हा १ की ध्वनि है।

कुन्द—सखी क्यों ऐसी करती है।

चम्पक—सखी मुझ से न बोल तूजा (स्तब्ध) पीछे फिर हटती है कि हाँ एक क्षण सौ युगके समान बिताये नहीं बीतते तो भी वाम विधाता इस यातना का अंत नहीं करता हा १ रमण के वियोग अग्नि की ज्वाला का ताप बढ़ता ही जाता है, हा १ प्राणेश मुझे अपना जान कर भी दर्शन नहीं देते।

कुन्द—प्यारी सखी अब तू इस व्यथा से अलग हो क्यों कि राजकुमार और वरुणदेव इस नगर में आये हैं-

चम्पक—क्या सत्य कहती है।

कुन्द—तेरी सौह जो मैं झूठ कहती हू।

चम्पक—उठकर के वे कहाँ उतरे हैं।

कुन्द—तालाब के किनारे जो महाराज के
बागके समीप है।

चम्पक—तूने कहा सुना।

कुन्द—मैंने अपने आखों से देखा है।

चम्पक—तो आज जा पिताजी से कह कि

चम्पक आज आपका वगीचा देखने जावेगी-

कुन्द—अच्छा जाती हू-

चम्पक—सखी आज मेरी वाई आख भी फरक
रही है—तू जा शीघ्र पूछ कर आ

कुन्द—पूछने की क्या बात है चल अपनी स
हेलियों को लेके इतने में घोड़ों के टाप के शब्द
सुनाई दिये-

कुन्द—भरोखे से देख कर सखी देख तो ये
वही हैं या और कोई,

चम्पक—सखी मैं धन्य हूँ जो मेरे निमित्त राज

हमारे यहाँ की छपी पुस्तकें इन रूपों पर मिलती हैं।

प० नीलकण्ठ-द्वारकाप्रसाद

अमीनाबाद-लखनऊ

मुंशीस्वामीदयाल

ताजरकुतब-निवारघाट

पटना सिधौ

बाबू गोकुलचन्द

ताजरकुतब-अलीगढ़

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद.

“मुझे आज जूरीने यद्यपि अपराधी ठहराया है, तो भी

हो तो वा प्रप्यसि स्वर्गं भित्वा वा मोक्षये महीम ।
तस्मादुत्तिष्ठ कैतेय युद्धाय हत निषय ॥ म गो ॥

तिलक केस.

(संक्षिप्त जीवन और अपील सहित)



रामदेव शर्मा ने 'नागरी प्रेस बम्बई न० ४' में छाप
कर प्रसिद्ध किया ।

मेरे मनने मुझको निर्दोषी पतलाया है, मानव शक्ति कहीं भी जिसके भागे फोड़ खास नही,

पेक्षा ऊँची जाति सदा सदा-सदा ही

तेजस्ये

वन्दे मातम्
ॐ

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत् ।
क्षुरस्य धारा निशितादुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ।

क० नि० व० १ सं०

माधव—हे मनुष्यो ! उस अनापय पदकी मासिके लिये
जागो !! महात्मा आचार्यों के उपदेशद्वारा ज्ञानको बड़ाओ । व
जैसे सानपर चढ़े हुए छूरेकी धार तीक्ष्ण और कठिन होती है,
ही यह श्रेयमार्ग भी बड़ा दुर्गम और कठिन है। इसमें कोई बि
ही मनुष्य (जो शम वमादि साधनों से युक्त है) चलमकता
कठोपनिषद् तृतीय षष्ठी सख्या १, ४ ।

श्रीयुत लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलकका
सक्षिप्त जीवन ।

आप महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं । आपका जन्म स्वामीरिमान्तमें स

१८७७ ई० में हुआ था । आपके जन्मका वर्ष भारतीय इतिहासमें अधिक प्रसिद्ध है । आपके पिता शिक्षाविभागके डिप्टी इंसपेक्टर थे आपको आपके पिताने पूना हाईस्कूल और इकन कॉलिजमें शिक्षा दिलाई थी । बी० ए० की परीक्षामें प्रथमवार - उत्तीर्ण न होकर आप बम्बई को चले गये । और वहां जाकर बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुये और सन् १८७९ में एल० एल० बी० की डिग्री प्राप्त की थी आप इंग्लैण्डमें चकता देने तथा लेम्बर्ट्रिखनेमें एकछात्र संस्कृत विद्यामें भी आप अच्छे निपुण थे । और अपने दो मित्र मि० विपलनकर और मि० एफ्टे की सहायतासे एक मद्रासा " पूना न्यू हाईस्कूल " नामक स्थापित किया । जो कि उत्कृष्टिकरसे २ " इकन एजुकेशन सुसाइटी " होगया । जिसके अधिकारमें आजकल " हाईस्कूल " " और फरगुसन कॉलिज " हैं आप फरगुसन कॉलिज के प्रोफेसर भी रहे थे । इसबीचमें डेवन एजुकेशन सुसाइटीने प्रोसमाचार पत्र " मरहटा " और " केशरी " नामक प्रकाशित किये । जिनके सम्पादकत्वका भार आपही को भिन्ना । इस समय आपने कॉलिजकी प्रोफेसरकी छोड़ दिया । कुछ समयके बाद आप एजिस्ट्रिफ कॉसिलके भवन चुने गये । आपको सन् १८७७ में १८ मासके लिये करारा गृह भेज दिया गया क्योंकि आपन अपने नूनके केशरी पत्रमें कुछ राज बिद्रोहीत्व लिखा था । इस प्रकार

मे मि० फा और मि० हाकर आपके वकील थे । यह वही मि० हाकर हैं जिन्होंने अब जस्टिस हाकर के भेपमें आपको छे सालके लिये देशनिर्वासन करदिया ।

१८ मासका दुःखसहन करके कारागृह से मुक्त होनेके बाद कुछ दिन तक तो आप चुपचाप रहे । हा । मरहटा और केशरी में कभी २ कुछ लेख अवश्य भेजते रहे । वंगविद्रोह और इस आन्दोलनने आपको फिर उसी कार्यमें प्रवृत्त कर दिया । और फिर मरहटा और केशरी के सम्पादन करनेका भार अपने हाथ में लेलिया । आप गरम दलके नेता माने जाते हैं ।

आपके प्रति गत १२ वीं मार्च सन् १९०८ वाले "केशरी" के अंकमें "अपने देशका दुर्दैव" वाले शीर्षक पर लगाया हुआ राजद्रोही और फिन्तूरी लेख लिखनेका और जिस करके भारत वर्षकी नियमानुसार स्थापित सरकारके सम्मुख विरोध फैलाने, प्रजा तथा सरकार के बीच मयकर झड़ता फैलाने अथवा फैलवाने के प्रयत्न करनेका अभियोग चलाया गया है ।

वह लेख निम्नलिखित अभिप्रायका सराठी में है

"देशको दुर्दैव" स्वमाप्ति गणेश और शासप्रिय भारतवर्ष युद्ध के रसियाकी

सिन्धी में पहुँचने उगाई । यह देखकर किसी को भी अस्वस्थता और
 दुःख हुये बिना नहीं रहसकता । जिसपर मुजफ्फरपुर में दो निरपराधी
 गोरी स्त्रियाँ बमगोलेकी बलिहो गई, इससे तो बहुत लोगोंको बलिबाई
 पक्षके लोगोंकी ओर बहुत तिरस्कार होगा । यह निरपराध बात है इस
 प्रकारकी बातें मुख्यफेरसिपायों में बन चुकी हैं और अब भी बनती हैं जो
 इतिहास प्रसिद्ध हैं परंतु भारतवर्षका राजकीय प्रकरण इन सब
 बातों तक पहुँचेगा, हमारे गोरे अधिकारियोंका हठ और दुराग्रह,
 स्वदेशोत्कर्षके लिये सहन करने वाले युवकोंको, पूर्ण हतासकरके
 बलिबाईयों के मार्ग में इतना शीघ्र प्रवृत्त करेंगे यह हमको आलुम नहीं
 होताया । परंतु ईश्वर के धरम नियम कुछ जुदाही है । मुजफ्फरपुरमें
 जो बमगोले उड़ाया गया वह किसी व्यक्ति के लिये द्वेषसे भयवा, एक आध
 बदमाश बुद्धि होनके फलस्वरूप से बनाही, ऐसा अपराध विषय से फटने हुये
 लोगोंकी सार्क्षसे दर्शाई नहीं देता । मि० किंग्सफर्डके बदले मि० केनोडीके
 धरकी दो निरपराधी स्त्रियोंकी बलि चढ़ाई इसके लिये स्वयं बमगोलेके करने
 वाले खुदीयम बोसोंको भी बुरा मान्य हुआ है । तो फिर दूसरोंके
 लिये लिखनाही क्या है । जिसका पुराने एक गुप्त मंडली स्थापित
 करके यह काम उठाया, उमर ऐसे अक्षर फृश्यसे भ्रमज सरफार
 का राज्य इस देश से नष्ट नहीं होसकता, इससे यह पूर्ण

सयामिज्जथा यह बात स्वयं उनके इनहारों से सिद्ध है।
 ऐसी एक आध गुन मन्डली निकली, इतनेसे "जुल्मी" अधिकारी
 वर्गका नाश होगा " ऐसा पक्के हुये लोगोंमें किमीने भी नहीं कहा
 है। कितनेही इंग्लोइंडियन पत्रकारोंने [सौ बन्दूकों अथवा दस लाख
 बमगोलोंके बनानेसे क्या अग्रेज राज चला जायेगा] ऐसी उत्सव
 छत्ता से प्रश्नकरके इन युवाओंकी हँसीकी। परंतु उक्त पत्रकारोंमें
 हमारी नम्रवृत्तिनयह कि यह कोई हँसीका प्रसंग नहीं है।

जो बंगाली गृहस्थ ऐसी भयंकर बातें करनेवाले हैं, वह कुछ चौर
 झपट्टा बदमाश वर्गमेंके नहीं है जो ऐसा होता तो पुलिसके आगे
 वह अब कासा खुल्लम खुल्ला भगवान देते। बंगालके युवाओंके
 गुप्त दुष्टता रूसियाके समान बलवाई लोगोंके अनुसार अधिकारियोंका
 गुप्त खून करनेके लिये कदाचित्त हो। परंतु यह स्वार्थके वास्ते
 नहीं किन्तु अनियंत्रित सत्तापसे हुई है, यह बात उनके इनहारोंमें
 स्पष्ट मालुम होती है। रूसियामें (निहिलिष्ट) लोगोंके यातना
 जो कुछ और बढते होते हैं वह ऐसेही कारण के लिये होते हैं।
 यह समुक्त जानमें हैं और ऐसी घट्टसे चाहिये यानी स्वदेशी अधिकारी
 वर्गके अग्रगण्यसे, रूसियामें जो दशा हुई है वैसीही परदेशी अधिकारि
 योंके अन्यायसे भारतवर्षमें होनेको अब आरम्भ हुआ है। ऐसा फदे
 भिता रहा नहीं जाता। अंगरेज सरकारका मामध्य रूसियन सरकारसे

प्रजाका धर्म मात्र उनसे आसि धारावतके, अनुसार, पालन नहीं कर सकते इतना नहीं किन्तु गैनेमेंमे किसीको भी लाभदायक नहीं है, ऐसा राज्य धर्म शास्त्र कह रहा है धर्म का जहां नाश होता है वहां किसी न किसी समयमें मुजफ्फरपुर संघसे धनार्थ हेतु उत्तम नर्वनता नहीं है इस लिये एसा अनिष्ट घटना, तो बने, यह जो राज्यवर्तकी इच्छा होती। धर्म का वर्तमान राज्य प्रणालीकाही उनको प्रथम रोप देना, चाहिये यह हमारी उनसे सूचना है । और इसी हतुसे आजका व्यवस्था है ।”

आपने उपर हमारा भारत सरकारने इसको रामद्रोह के नामसे १९३ ए और १०४ ए धारा छगई थी । प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट मि० एस्टनके वारंटसे बुधवार ता० २४ वीं जून १९०८ में मेर्या के ६॥ बने सिताराम चिन्मय, के सरदार आश्रम में मिलके महोदय पकड़े गये थे । और ग्वाथर पुलिसकोर्टकी जेलमें रखे गये थे ।

शुक्रवार ता० २५ जून १९०८ ई०

आज दिनक ११ बजे आश्रम निष्क महोदय का पीक प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटके समुख हाजिर किया गया सरकार की ओरके वरतान मि० वापस थे और जमिन्दारके जोरमे मि० दातर आदि कई वकील थे ।

आश्रम लिख्य आश्रम की साधारण पोशाकसे न्यायालयमें उपस्थित हुये थे । इनके वरत जन्मेका समाचार ग्वाथर मरमे धनके की १ घर २

में पहुँच गये थे । और इसी कारण आज इस मुकदमे के सुननेके लिये असंख्य मनुष्य उपस्थित हुये थे । न्यायालयके भीतर स्थान न होनेके कारण सबको एक मैदानमें जो न्यायालयके सामने है खड़ा रहना पड़ा था । उस स्थान पर कुछ मुकदमों का हाल सुननेमें नहीं आता था, किन्तु सब मनुष्य तिलक महोदय के प्रेमके कारण मुकदमेका परिणाम सुननेकी इच्छासे खड़े पुलिस की तरफ से इस मुकदमे को चला देनेवाले सुपिरिटेण्ड मि० स्लेन मुकदमे हुये थे ।

आरम्भमें सरकारी वकील मि० बोयनके पूछने से मि० स्लेनने कहा कि मैं कई की डिपी हुई पुलिस में सुपिरिन्टेण्डेंट की पदवी पर हूँ ।

इस मुकदमे के अभियुक्त मि० बाल्गागाधर तिलक हैं जिनको कि मैं पहिचानता हूँ अधिक दिनोंसे केशरी पत्र खरीदता हूँ गत तारीख १२ मईका केशरी भी मैंने खरीदा था यह राजविद्रोही व्याख्या-नया ।

मि० बोयनने मुकदमा मुलतयी रखनेके लिये विनयकी कि मैं मुकदमा चला देने के लिये तैयार नहीं हूँ । वेरिस्टरदावरने इसका विरोध किया इस पर कुछ देर तक दोनों पक्षों के वेरिस्टरोंकी बहस होती

रही फिर आगामी सोमवार ता० २९ जून तक के वास्ते मुकद्दमा मुदतवी किया गया ।

इसके बाद मि० सिलक के बैरिस्टरने जमानत के वास्ते अर्जी पेश की जिसका विशेष सरकारी वकीलने किया । बहुतसा वर्दानुवाद करनेवाली मजिस्ट्रेट साहिबने जमानतपर छोड़ना स्वीकार न किया ।

ता० २७ जून शनिवार

श्री० सिलक के ९ जूनवाले केशरीके अंकमें निम्न लिखित लेख प्रकाशित हुआ था । जिसपर सरकारकी तरफसे दूसरा अभियोग खड़ा करके आज प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटकी अदालतमें श्री० सिलकके ऊपर दूसरा चार्ज फाउनकी प्रार्थना की गई, जो साहब बहादुरने स्वीकार की । और इस अभियोगकी घाबत गा आपका २९ जूनकोही हाजिर होना पड़ा । वह लेख निम्न लिखित अभिप्रायका मरहट्टी में है ।

“ इस सप्ताहसे सरकायने फिर अनेकी राजनीति आरम्भ की है जिसका भूत हिन्दी सरकारके दिष्टमें हर पांच या दस वर्ष में ममा जता है इस समयका मामला भी उसी प्रकारका रखा है समा वर्द्धका कानून ऑर्ड मॉर्डे हिन्दुस्तानके प्रधान हुए उसके पीछे पास हुआ था तथा अब हिन्दुस्तानी समाचार पत्रोंक सर्पधका कानून पास हुआ है । उन्पर पक्ष इस समय राष्ट्र शासन पर है, मि० मॉर्डे एक ऐसा

बुद्धिमान तथा उदार पक्षके नियमों को तरफदार करवाकर ल्याम रखने वाला है इसीसे जातेकी राजनीतिके हिमायती स्थान स्थान देखनेमें जायें उस पक्षके हमारे पाठक बराबर विचार करेंगी कि शासन फौजोंने अपनी राजनीति स्वयं किस तरह छुटा डाली है जातेकी राजनीतिका क्या अर्थ होता है जातेका अर्थ यहाँ नहीं है कि आगे बढ़ने वाली रोकना बल्कि आगे होनेवाली तरफियोंको भी तोड़ डालना होता है जिनकारणोंने भारतीय प्रजाको उत्पन्न किया है उन्होंने प्रजाकी उत्पत्ति की है। तथा प्रजाके अन्तर्द्वय के लिये प्रजामें अधिक सुखार्थ है। उसीके अधिकारजति रोकनेके लिये हाथ और पैर कुचक कर तोड़ दें, इन कारणोंको पीछे हटानेके कामको छोड़ देने अथवा बाकायदे राजनीतिकी उपमा दीजा सकेगी भाषा तथा अधिकारी संज्ञेति प्रजाको जन्म देती है तथा उसे दत्त करती है, इस कारण भारत में एक प्रजामें उपस्थित होती थी, ऐसा देखकर अधिकारी वर्ग बहुत दिन हुये उन दोनोंको नाश कर देनेकी इच्छा रखते थे और यह छद्म इच्छा व्यवहार में लाने के लिये उनको बंगालमें गोला फेंकने वाली घटना का अवसर हाथ पाया अब यह प्रश्न होता है कि यह मानेके कार्यदों से अधिकारी वर्ग जो इरादा रखते हैं क्या वह पार सकेगा। अधिकारी वर्गकी पहली इच्छा यह है कि भारतमें अमंगोला की घटनायें बन्द करना और दूसरी यह काना कि ऐसे गोले

पर किसीका ध्यान न रह । राज्य करता जो यह उच्छा रखते हैं वह ईश्वरीय नियम ह तथा प्रणसा करनके योग्य भी हैं परंतु जैसे एक मनुष्य जिसको उत्तरकी ओर जाना हो और दक्षिणकी तरफ मार्ग लेता हो । इसीतरह राज्य कर्त्ताजोने अपना विचार पार पाड़नेको मार्ग से बिचकुल उलट मार्ग ग्रहण किया है । इस पातको जिसमनुष्यकी विचार शक्ति श्रेकसोमे दौड़जाय उसी माफिक समझतेहैं मस्तिष्क हम प्रकार घुमनेकी और दौड़ता है यह भविष्यके नाशका संकेत अपनेको कहताहै । सरकारने जो मामेकी राजनीति अख्तियारी है जिसके उपर हमे भारी खर्चके साथ विचार अता है, कि प्रजा तथा शासकोंको अवसे अधिकतर हानिकारक दिन देखने होंगे सरकारकी विचार शक्ति कैसी मूर्खताकी बनाई है यह देखो अधि कभी गोंनि झूठी खबर फैल्यई है कि बंगालियोंकी तरफसे जो गोछे फेंके जायह हैं यह मटलके बेचनका नाश कते पाये हैं मटलके बाँधो वास्तेका नाश करनेके लिये यूरोप तथा बंगालके गोछोंके बीच आकरदा पाताउपा अन्तर है । बंगालमें गोछा फेकनेकी जइ देशके लिये परिश्रमकी है, सब यूरोपमें गोछा फेकनेकी जइ स्वार्थ और छुपानियों से घुणाई है । बंगाली कुछ अनाफिस्ट नहीं है लेकिन बनारसियों के हथियारोंका व्यवहार करते, वस इतना हैहै जिस अनाफिस्टने

फ्रांस के राजाको इसकाग्यकि यह राज करता है पेरिस मे
 मारहाला था । यह एक प्रकार का मनुष्य है, इसी तरह पुर्तगालके
 फिरीदुई बुद्धिके देश हितकारी मनुष्यने वहाँके राजापर इस सबबसे
 कि उसने राज सभाको बंद करदीधी गोला फेंका था वह दूसरी
 किस्मका आदमी है जो अनारकिष्ट अमरीकामें एक लखपती का
 सिर्फ लखपती होनेके कारण खून करता है यह एक किस्मका आदमी
 है और जीवपर आनेवाला रसियन देश हितकारी आदमी जो निराश
 होकर गोला फेंकता है कि रसियन शाहशाहके अधिकारी रसियन
 राज सभाको हक नहीं देते हैं यह और किस्मका आदमी है रसि
 यन राज सभाको अधिकार प्रदान नहीं करते यह दूसरी किस्मका
 आदमी है । किसीको भी यह बात नहीं मूल जानी चाहिये कि वं
 गालमें गोला फेकनेकी घटना पहले वर्गकी नहीं किन्तु दूसरे वर्ग मे
 आती है । पुर्तगालके पैक दुये गोलेसे वहाँके रानकारोवारेक सिल
 सिलमें फेरफार किया था तथा उसके बाद जो लडका राज गर्हापर
 बैठा था उसके प्रधान मन्त्रको अगली जमानेकी राजनीति छोड
 देनी पड़ी थी । और रूसियाके सबसे बलवान महारानाको भी गोलों
 के सामने नमना पडा था और राज सभासे तोडनेकी कोशिशको छोडकर
 अन्त उसके स्थापन करनी पड़ी थी । इससे पुर्तगालसे गोला फेंकना
 बन्द होगया और रूसियामें भी गोले फेंकनेकी घटनायें न बढने पाई इसकी

इज्जत कोई मनुष्य मास्केकी राजनीतिकी नहीं देता । लोगोंमें नई इच्छाओं तथा चाव पैदा होता, और वह दिन पर दिन जोर पकड़ता जाता है। हम गाला केकनेकी घटनाओंके कारणसे बताये हुये कर्मचारियोंने भी यही समझा था तथा उन्होने "राज्य कार्यालय" प्रथममें ऐसा फैसला कियाथा कि निम्नसे लोगोंकी इच्छाओं और चाव रोक नहीं तो थोड़ेही पार पड़ें। जिससे वह एकदम उसपर मारघार के इन्जनोंके क्रमगत नये सरकारका आनेवाली वर्तमानराजनीति से प्रत्यक्षही प्रथमतो गोन्डा बनानेका काम फटिग करदहनेकी है और दूसरे वह खजान धरना चाहता है जिनमें लोग धारुद गाले केकनेकी राफ न जुके ।

जैसे तोतेको विमदेमें बाखर उबरन दवाजा बन्द करा जाताहै वैसेही सरकारने पहले काम यह कियाकि लोगोंके हाथमें हीथियार छिन छीना जिये विजयका तोला विजयमेंही रहने कोहा आनन्दमा ने समझिये जो लोग जानवरोंके शर्मान होते- वेउसको विजयमें मठि पड तथा घने पानी गेरनेका समझ ग्यतेह । लेकिन भरनमारकामने विजय का झरही बन्द नहीं किया बरक मोता विजयमेंमे पावर नहीं मास्के सन्धिसे उससे कम सोडना आरम्भ किया है ।

सोमवार ता० २९ जून
आमेर श्री० तिलक चौक प्रेसीडेन्सी मॅजिस्ट्रेट मि० ए एच
एम्बुनकी आदलतमें हाजिर किये गये ।

आजमी पहलू दिनके माफिक कचेहराके बाहर हजारों मनुष्य
खड़े थे और "तिलक महाराजकी जय वन्देमातरम्" की पुकार कर
रहे थे ३॥ बजे कोर्टकी कार्यवाही आरंभ हुई ।

तिलक महाराज पर नुकसना चलानेके लिये सरकारकी तरफसे मि०
विनिंग बारिस्टर सरकारी सोलिसिटर मि० बोवन और गुप्त प्रोक्सिके
सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्मेल नियत थे । लोकमान्य तिलककी ओर मि०
जहांगीर गीनगाह दावर मि० गाडगील और मि० इन्द्रजीत बारिस्टर,
मि० बोडस मि० कर्डीकर, और मि० खापड़ें उपस्थित थे -

रिपोर्टरोंको चेतावनी ।

मि० दायरने प्रथमही यह कहा कि वर्तमान समाचार पत्रोंमें जो
समाचार प्रकट होते हैं उनमें बहुत हेरफेर कर दिया जाता है, उन्होंने
ऐसे पत्रोंके नाम लिये जैसे बम्बेगजट टाइम्स आफ इण्डिया, एड्योकेट
आफ इण्डिया । पश्चात् कहा कि सम्वाददातागण उतनाही सम्वाद लिये
जो सत्य सत्य हो । विनिंगने भी कहा कि सम्वाददातागण उपर्युक्त
भागोंको ध्यानमें रखें ।

सरकारी वकील मि० विनिंगने कहा कि जो अभियोग एकही

मेरी रायमें अलग अलग कमराही ठीक है । आत्मा पक्षके बर्काएने कहा था कि अलग अलग मुकद्दमा चलावेना कुछ जरूरत नहीं मान्य पड़ती परन्तु मैजिस्ट्रेटने तानों अभियोगोंको क्षत्र्य अत्र्य चयनाहोई स्वीकार किया ।

मि० तिलका डिक्लेरेशन ।

सरकारी बर्काए मि० विनिगने कहा कि मि० तिलक का दाखिल किया हुआ-१ जुलाई सन् १९०७ का केशरी डिक्लेरेशन अथवा प्रिन्टर या प्रकाशक दस्तवेज में पेश करता हूँ

मि० जोशीका घपान ।

देशी भागवतोंके सरकारी अनुवादके प्रधान वर्क भासकर विष्णु जोशीने सरकारी बर्काएके पृष्ठनेपर कहा कि मैं १० वर्षोंसे इस पदपर नियुक्त हूँ । केशरी पत्रके ता० १२ मार्चके अफमें चौथे और पाँचवें पन्नापर जो छाप उछिन्नित हुआ है उसका अन्तरजा अनुवाद पेश करता हूँ ।

सेशनमें मुकद्दमा ।

मैजिस्ट्रेटके पृष्ठनेपर मि० दावरने कहा कि मुकद्दमा सेशनमें भेजने बोल है इसमें गयादोकी मिराह मुल्तर्फी रहता है -

मैजिस्ट्रेट (मि० विनिगने

मेरी रायमें अलग अलग चलनाही ठीक है। औद्योगिक पक्षके वकीलने कहा था कि अलग अलग मुकद्दमा चलानेकी कुछ जरूरत नहीं मालूम पड़ती परन्तु मैजिस्ट्रेटने दोनों अभियोगोंको 'अलग अलग' करानाही स्वीकार किया।

मि० तिलकका डिरेक्शन।

सरकार्ना वकील मि० विनिंगसे कडा कि मि० तिलक का दाखिल किया हुआ १ जुलाई सन् १९०७ का केशरी डिरेक्शन अथवा प्रिन्टर या प्रकाशकका दस्तावेज में पेश करता हूँ।

मि० जोशीका बयान।

देशी भाषाओंके सरकारी अनुवादके प्रधान क्लर्क मासकर विष्णु जोशीने सरकारी वकीलके पृष्ठनेपर कहा कि मैं १० वर्षसे इस पदपर नियुक्त हूँ। केशरी पत्रके ता० १२ मईके अंकमें चोथे और पाचवें पन्नोंपर जो लेख छपिचका हुआ है उसका अङ्गरेजी अनुवाद पेश करता हूँ।

सेशनमें मुकद्दमा।

मैजिस्ट्रेटके पृष्ठनेपर मि० दावरने कहा कि मुकद्दमा सेशनमें आने वाला है इससे गवाहोंकी गिरह मुलतबी रहता है।

मैजिस्ट्रेट (मि० विनिंगसे)

पुब्लिस इन्फरिटेण्डेण्ट मि० डेविड भी साथ थे । असमर्पके घर और एपेलानोकी तलाशी छीलाई ।

सरकारी वकीलने कहा कि पंचनामा सेशनमें पेश किया जावेगा ।

आसामीपक्षके वकीलने कहा कि पंचनामेका यहां कुछ निर्र नहीं होना चाहिये यदि आप यहां इसका कुछ जिक्र करेंगे तो पंचनामा इसी अदालतमें दाखिल करना होगा । सरकारी वकीलने इसके बाद एक पोस्टकार्ड पेश किया कि तलाशीमें यह मिठा था ।

मि० दवरने कहा कि घरमें जो कुछ मिल जावे वह पेश नहीं होना चाहिये । नहीं जानते कि वह कहाँसे मिला और उसमें क्या रखा है ।

मि० मिनिस्त्रने कहा कि यह अभियोगमें काम देनेवाला है और असमर्पके घरमेंसे उसके लिखनेके खानेमेंसे मिला है । मैनिस्त्रने इसके दाखिल करनेकी आज्ञा दी ।

स्वतंत्र पक्षके वकीलने कहा कि यदि आप दाखिल करते हैं तो उत्तरा कारण भी जिस ल्योमिये । मैनिस्त्र (मि० विन्कले) यह जो कुछ बरानता हुए हैं क्या उनके सम्बन्धमें आप कुछ और कहना चाहते हैं ?

मि० विन्कलेने उत्तर बरन देसकत मुजबरी रजना हैं ।

मैनिस्त्रने कहा कि अस्मर्पके ल्योमिये निम्नलिखित १९४

(ज) और १५१ दफाके अनुसार इस अभियोगको हाईकोर्टके सेशनमें भेजता हूँ ।

दूसरा मुकदमा ।

आपके ९ जूनके अकमें जो लेख प्रकाशित हुआ था और जिसकी कार्रवाई गत शनिवार को हुई थी उसकी मायत सरकारी वकीलने कहा कि पहले अभियोगमें डिक्लेरेशन आसामीकी तरफसे दिया हुआ है उसीको इस दूसरे मुकदमेमें पेश करना चाहता हूँ । तत्पश्चात् पहले मुकदमेमें अनुवाद देने वाले भासकर दिण्णु जोषीका बयान लिया गया उसने फिर उसी प्रकार कहा कि ९ जून वाले केसरीके प्रबन्धका अनुवाद मेरा किया हुआ है । सरकारी वकीलन वह भी पढ़कर सुना दिया । फिर उसी नाराज्यण जगन्नाथकी गवाही ली गई । इस बार सब वही बातें कहीं परन्तु ९ जूनके केसरीकी ३००० प्रति मिली थी यह विशेष कह बाख । आसामीने अपने बयानको सेशनके लिये स्वरक्षित रखा । मैजिस्ट्रेटने भी पहले अभियोगकी भांति इसको भी सेशन सिपुर्द कर दिया ।

आसामी पक्षके वकील मि० दाशरने कहा कि मुकदमा सेशनमें चला गया है, इससे आसामीको जमानतपर छोड़नेके लिये बहुत कुछ विचारकी मन्सरत है इस लिये वकीलोंको आसामीसे मिलनेकी आज्ञा दी जावे । मैजिस्ट्रेटने आसामीके वकीलोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ।

हाईकोर्टमें मुकदमेका आरंभ (१)

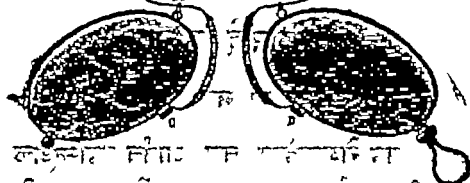
पहला दिवस—

मुकदमा १२ जुलाई को बम्बई हाईकोर्टमें आरंभ हुआ। इसका स्पेशल जुरी सहित मि० अरिटस, दावरको था। सरकारकी ओरसे मि० ट्रेन्सन विनिता और इतबारार्थ पैरवी करते थे और, आयुक्त लिदरकी ओरसे कोई नहीं था। उनके साथ साथ कुछ थे सही किन्तु वह सब केवल सलाह देने के लिये थे। लिदर महादस अपनी पैरवी आप करते थे।

अदालतमें भीड़।

यास अदालत तो ऐसी भीड़ नहीं थी, केवल बेंगलूर के रिस्टर अन्य मुकदमोंवाले और कुछ प्रतिष्ठित दूरकियों यहाँ आकर बाहर में थे। लेकिन अदालतके जाने पानकी सड़कपर बहुतों बड़ी भीड़ थी। हाल में पुलिस और गांधी काली फौजों पर एक पर जमा खड़े थे। केवल हानवी रोड एडन रोडपर मामूली भीड़ थी। लेकिन उनसे मि ली हुई सड़कपर दूरकियों के जमा थे। किन्तु अब तक और अब्दुल रहमान स्ट्रीट पायडोनी, फुल रोड तथा चिचपाकली आदिमें खासी भीड़ थी। लेकिन यह जनसमुह कुछ तो मुकदमेकी खबर सुननेके और कुछ इतनी फौज देखकर जमा हो गया था। कोई ३-४ घंटे

જે લોકો જિજ્ઞાસુ હોય તેઓ જાણે



જાણનાર લોકો જાણે જાણનાર

જિજ્ઞાસુ જિજ્ઞાસુ જિજ્ઞાસુ જિજ્ઞાસુ જિજ્ઞાસુ
 શરણે એન્ડ સન્સ
 એસમા બનાવનારે તથા વેચનારે

જાણનારની કોઈક કોઈ અનુભવ બેસતી નકામો નથી
 મોહકાની ગોલામાં વધારો થાય છે. શુભ પથરના
 ચસમાં, કોલેડોર, આઈગ્લોસો, રંગીન પ્રોટેક્ટરો
 વગેરે દરેક યુકારની સાત્તા, આદીની તમજ તરેહ
 વાર બીજી ફરેમામાં તૈયાર મળે છે. કમ્પાર્ટિડ
 સીલીનટ્રીકલ ગ્લાસો, તમજ વાચવા અન
 બેવનિયાઈકાકલ પેમેલ્સો પણ ચોરડરથી નકરી
 આપવામાં આવે છે.

મોલ ખાત્રીનું અનુભવ કોઈક કોઈક જિજ્ઞાસુ
 જિજ્ઞાસુ જાણનાર. ચોરડર પુરેલી સતોશકા
 રકમની અનુભવવામાં આવશે
 હેન્ડનાં હેન્ડર કાળખાદી રોડ,
 દાઉદભાઈ જરીવાળાની સામે, મુંબઈ

आर्यन इंडस्ट्रियल कम्पनी बम्बई का रोशनाई का सत्त

केशरी तारीख १९ मई १९०८ की राय—

यह रोशनाईका सत्त आर्यन इंडस्ट्रियल
कम्पनी बम्बई का बनाया हुआ है इसमें पानी
मिलाते ही बहुत उमदा रोशनाई बन जाती है
इसकी रोशनाई आसानीसे चलती है और कलमम
चपटती नहीं है और गाढी नहीं होती है

लाला लाजपतरायकी राय
रोशनाईका सत्त और अरडीका तेल जो हिन्दु
स्तानमें बाहरसे आते हैं उनमें यह बहुत उमदा
है मैं आमलोगों को इसके इस्तमाल करने की
सिफारस करता हूँ और चाहता हूँ कि यह कम्पनी
अपने काममें कामयाब होवे

तक यह लोग डटे खड़े रहे और शान्त भावसे उस दिनकी कार्यवाहपर टीका टिप्पणी करते जाते थे कूळ कारखानेवालोंकी मलबरायों बहुत क्षीयतायें थीं । बम्बईकी अन्यान्य कजमें काम करनेवाले कुली मजदूर १२ वजे तक तो अपने कामोंपर मौजूद रहे लेकिन १२ बजेके बाद जब रैली खाने गये तो गैर हानिर होगये । उस दिन फिर वह अपने कामों पर न जाकर तिलक महोदयका मुकद्दमा देखने चले गये । इनके कारण भीड़ और भी बढ गई ।

फौजोंका आगमन ।

अक्सरोंने, मात्सूम होता है, इस मामलेके लिये बड़ी बड़ी तैयारियां फरली थीं । नगरकी पुलिसके सिवा फिल्लेस, बहुतसी फौज भेगाई गई इनके अतिरिक्त देवलखली छावनीसे रायल स्कान्स हार्डलैंडर गोरी, पल्टनकी ९ कम्पनियां स्पेशल ट्रेनद्वारा बुलवाई गई थीं । यह गत शनिवारकोपिह यहां पहुँच गई । फिर सोमवारको २१वा रिसाला और दो गेरी पल्टन और बुलवाई गई । यह सब जिगेडियर अनुरख प्रीनफिल्डके अधीन है ।

अदालतमें ।

ठीक ११॥ बजे जस्टिस दामर अदालतमें उपस्थित होगये । इसके बाद जूरी बैठनेकी बात होने लगी । लेकिन जजके बैठतेही पहले मि० बरानसन सरकारी बैरिस्टरने कहा कि मि० तिलकसर दो छेवोंके लिये

दो अभियोक्त्यामे सुये हैं और यह सज्जन दोनोंमें एकही दिन सेसन सुपुर्द हुए हैं। एक सेस १२-मईके, प्रकटित हुआ था, और दूसरा १-जूनको। लेकिन मैं इन दोनों अभियोक्तोंको एक साथही फिलाना चाहता हूँ। बैरिस्टरने यह भी कहा कि, हममें कुछ सहसरी संशय नहीं है क्योंकि मुझे अविकार प्राप्त है कि दोनों मुकद्दमें एक साथही पेश करूँ।

मि० तिलकने। कुछ कानूनी उच्च पेश करके कहा कि यदि दोनों मुकद्दमें एक साथ सुने जायेंगे तो मुझे बहुत मुदकल पड़ेगी, मैं अकेला आदमी दोनोंका एक साथ अभियोग देनेमें गड़बड़ा जाऊंगा सरकारी बैरिस्टर चाहे इसे संहज समझे किन्तु मेरे लिये घड़ी मुश्किल है।

“जज” अखबारोंमें मुझे यह विनिर्णय हुआ है कि ऐसा उच्च मेरे सामने किया जायगा। इसपर मैं खूब विचार भी कर चुका हूँ। इस मामलेमें मैजिस्ट्रेटके सामने दो मुकद्दमें चलाये गये दोनोंमें अलग अलग जांच हुई और अन्तमें यह सेसन सुपुर्द किये गये अब मैं यह है कि, दोनों मुकद्दमें एक साथ सुने जायें या अलगअलग मेरी रायमें यह बहुत मुनासिब होगा कि दोनों मामले एक साथ एकही ज्यूरीके सामने पेश हों, लेकिन इस मामलेमें चार अलग अलग अभियोक्त हैं। अर्थात् हर मुकद्दमेंके साथ एक एक अभियोक्ता १५१३ खरिफा मो है। सरकारी बैरिस्टर कहता है कि यदि अलग अलग मामले

चेंगे, तो उन्हें और मामलोंको सुलझती रखना पड़ेगा । यह ठीक नहीं है । जो मामला सुलझती रहेगा वह फिलजुल साराजि, समझा जायगा अर्थात् अभियुक्त उन मुकदमोंमें साफ छेद दिया जायगा ।

सरकारी बैरिस्टर—अच्छा मैं पहले मुकदमोंके साथ-साथ — १५३३ का अभियोग अभी नहीं खोलना चाहता ।

मन—तो मैं उस मामलेमें अभियुक्तको छोड़ देता हूँ ।

सरकारी बैरिस्टर—आप मुकदमा सुनकर छोड़ सकते हैं ।

नज—क्या आप चाहते हैं कि पहले, तीन मुकदमों एक साथ चले और उनके समाप्त होनेपर चौथा उठा देनेकी दरखास्त की जाये ?

सरकारी बैरिस्टर—इसपर पढ़े-विचार कर लिया जायगा इसपर समाप्त होने, तीनों मुकदमों, अर्थात् दो राजद्रोहों और तीसरे बरभाव फैलानेका एक साथ सुनना रिपर किया ।

इसके बाद तिलक महोदय स्वयं खड़े हुए और कार्यवाही आरम्भ हुई । उन्हें अभियोग पढ़कर सुनाये गये और पूछा गया कि 'तुम' दोषी हो या निर्दोश ?

इसका ठीक उत्तर न देकर तिलक महोदयने कहा कि 'अभियोग कुछ समयमें नहीं आता' और न उसमें वह प्रगट किया गया कि मेरे कितने शत्रु पर अभियोग चलाया गया है ।

मि० इनवरारिटी—अब तो कुछ देखही शामिल किये जाते हैं।

जज—तब तो कुछ लेख अभियुक्तको पढके सुनाना होंगे और जुरीको भी ।

मि० इन—मैं कुछ लेख दाखिल करता हूँ ।

श्रीयुक्त तिलक—मैं सिर्फ वह शब्द या वाक्य सुनना चाहता हूँ जिनपर अभियोग चले हैं ।

जज—सरकारकी ओरसे तब दोनों लेख पेश होंगे ।

श्रीयुक्त तिलक—यही ठीक होगा ।

जज साहब—बैर तो इसमें कमसे कम आधा दिन खर्च होगा ।

तुमपर १२ मई और ९ जूनके लेखोंपर मुकद्दमा चलाया गया है । दो अभियोग राजबदोहके हैं और एक वैरभाव पैठानेका । इसके बाद पहला लेख पढकर सुनाया गया । दूसरा लेख आधाही पढा गया था । कि तिलक महोदयने कहा, कि बस और पढनेकी जरूरत नहीं है । लेकिन उन्होंने दोनों लेखोंके तर्जुमपर उम्र किया ।

इसके बाद फिर पूछ गया कि तुम दोषी हो या निर्दोष ।

श्रीयुक्त तिलक—मैं निर्दोष हूँ ।

तब खास जुरी बुलाई गई । इसमें ८ अंगरेज थे । तिलक महोदयने इसपर उम्र किया कहा मैं इस जुरीको नहीं मानता । तब

फिर नई जूरी बुलाई गई । इसमें एक हिन्दू और एक पार्सी था । इस बार जजने आपत्तिकी, कहा हम इस जुरीको नहीं स्वीकार करते । इसपर फिर नई जूरी तय्यम हुई । इस जूरीमें ७ अंगरेज और दो पार्सी थे ।

इसको अभियुक्त और जज दोनोंने स्वीकार कर लिया, तब मुकदम-आरम्भ हुआ ।

सरकारी वकील.—

“ केसेसी ” मराठा अखबारके १२ मई और ९ जूनवाले अंकमें यह लेख प्रकाशित हुए थे । अभियुक्त उसके एडीटर व प्रकाशक है । इसके बाद आपने १२४ व राजद्रोहकी धारा पढ़के सुनई कहा कि इस धाराने एडिटोर्को यह अधिकार वेशक दिया है कि वह सरकारी कामोंकी उचित आलोचना करें और उनपर अपनी सम्मति प्रकट करें किन्तु यह अधिकार किसीको नहीं दिया कि वा सरकारकी बदनामी करे या यह कहे कि सरकार अत्याचार करती है अथवा लोगों को पीसती है, ऐसा करनेसे वह सरकारकी ओरसे प्रजाको भड़काता है और घृणा उत्पन्न करता है । १२ मईका लेख सुनाया ।

इसके बाद गवाह पेश होने लगे पहले सरकारी अनुवादकके दफ्तरके भास्कर विष्णु जोशी पेश हुए—। इन्होंने देखोका सर्टिफिकेट करनेकी

गवाही दींगी सरकारी पोरस्टरेनें नर्जुमांवाखिद्रोफकरदिया १५ रु. म.

। शिल्पक महोदयेन ईश्वरे आपत्ति का निवृत्ति ज्ञातायने असे,
दक्षिण करदिया ॥ ६ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

सरकारी अनुयायक मि० जोशीका वयान फिर शुरू हुआ। उन्होंने कहा कुछ लिखोकी तर्जुमा मैंने किया था। पहलके कई लिखोकी भी तर्जुमा किया था।

इसके बाद श्रीयुक्त निष्कर्षने 'मि० जोशीसे' निहर आरम्भ की
निहरमें कहा कि 'कुर्ब खिख मेरे' तर्जुमा- 'तकिये इफानही हैं।' सरकारी
बंकीलने भी 'कुछका' तर्जुमा करके मेरे 'पक्ष' में था । मैंने
उसे 'असली' खिखोंसे भिजा दिया था । मैंने जिस 'ताखिखों' तर्जुमा-
किया यह याद नहीं । मुझे यह भूतानेका अतिशय नहीं है कि सरकारी
बंकीलने मेरे बाद तर्जुमा किया था या पहले । १०

॥ फिर सिद्ध की महाराष्ट्र ने इन देखोको। एकर मुराही शब्दोंके आभारेजी
अर्थपर निराह आहारम की कि जिनपर मुक्तज्ञा खोज्या गयी है पर
पहले आपने "देशका बुद्धि" शीर्षक से सा उठोया और उसके
शब्दोंके अर्थपर बहस करने लगे ।

इसमें मुनफ्फरपुरके यम कांडकी आलोचना करते हुए कहा है कि सरकार अब ऐसी माझिसे हो गई है कि उसका भत्याचार अब किसी नही होसकता । और कहा है कि सरकार केयड स्वार्थी साधनके स्थित

यत्न करती है। उसका प्रयत्न यह है कि प्रजा इस काम
 में होने पाये कि वह कुछ दान फिसाद-सचासके। ऐसा कहकर सरका
 रकी सरासर हवक की गई है और उसपर मिथ्य दोषारोपण किया
 है। किन्तु 'स्वराज्य' शब्द का अर्थ समझते हुए वैरिस्टने कहा कि
 हम शब्द का अर्थ केवल यह है कि 'स्वतन्त्रता' या 'हक्कमत्त' जो
 १२ अनुच्छेदों में अभियुक्तने समझाया है कि प्रजा और सरकार में
 क्या मतभेद है। और यह भी कहा है कि यदि सरकार
 प्रजा की अभिलाषा में पूरी न करेगी तो लोगों को न जाने क्या बुरा
 विचार होगा और यह भी दिखलाया गया है कि लोगों को अधिकार है
 जब चाहें तब राज्य को हटल सकते हैं वह यत्न क्या है सभी समझते
 हैं। अर्थात् लोग मुझसे अपनी अभिलाषा पूरी कर सकते हैं।
 यह भी कहा है कि सरकार के कामों से तीस करोड़ भारतवासी कोषित
 हुए हैं। कहा है कि सरकार अपने देश के आदमियों के कामका स्याल
 रुकती है और स्वेच्छावधि है। वैरिस्टने कहा कि जरीफो-कुल
 देख ध्यानमें रखना चाहिये। अभियुक्तने पहले छेदमें बम बम करने लगे
 को काम बुरा बताया है, लेकिन दूसरा छेदमें यह दिखाया है कि कैसे
 अन्य देशों में लोग अपनी अभिलाषा पूरी करने के लिये 'सदवीर' करते हैं।
 यह भी कहा है कि बम बनाने के लिये कोई बड़ा कारखाना नहीं
 चाहिये कुछ मसालों से वह सहज ही बन सकती है। और कहा है कि

ब्रिटिश सरकार इस देशके लिये बड़ी कठोर स्वरूप बन रही है यदि जो कुछ यहाँवाले मांगते हैं वह नहीं दिया तो लोग रूसकी भाँति गुण सीख जायेंगे । यह भी कहा है कि जबतक सरकार प्रजाके स्वार्थ प्रदान न करेगी तबतक उसका कोई प्रबंध हम फैलानेवालोंको रोकनेके लिये कारगर न होगा ।

श्रीयुक्त तिलक अच्छा इस लेखमें ' दो निरापराधिनी गोरी स्त्रियाँ इसमें 'गोरे' शब्दका अङ्ग्रेजी अनुवाद आपने ' सफेद' white किया है या 'गोरे रङ्गका' ?

मि० जोशी मैने इसका अनुवाद किया है यूरोपियन स्त्रियाँ लेकिन नोटमें ' सफेद ' भी लिख दिया है ।

प्रश्न ' अभिकारी वर्ग ' का क्या अनुवाद किया है ?

उत्तर—Official class अङ्ग्रेजी अभिकारी वर्ग, गोरा अभिकारी वर्ग सरकारी अभिकारी वर्ग का पक्की अर्थ है । Ruling class, white Official class, English Official Class, और English-ruling Class यदि सब उनके अर्थ हो सकते हैं ।

प्र०—महा Bureaucracy का अर्थ अभिकारी वर्ग, हो सकता है कि नहीं ?

उ०—मैं यह नहीं कह सकता लेकिन इस अर्थसे Rule शासन या Ruler शासक का अर्थ नहीं समझा जाता ।

प्र०—अभिकारी वर्ग का अर्थ क्या है ?

उ०—Official, Ruling Class,

प्र०—'बर्ग' क्या है ?

उ०—बर्ग कहते हैं Class, को ।

प्र०—अच्छा यदि अपिहारी बर्ग का कार्य 'अपिहारी बर्ग' करता

होतो कीदृश अङ्गरेज स्वयं उम्ह परहे वाक्यमें क्याना पड़ेगा न ?

उ०—हां क्याना पड़ेगा ।

प्र०—Despotism का अर्थ क्या है ?

उ०—जुस्मी राजपदति ।

प्र०—और Tyranny का ?

उ०—जुस्म

प्र०—Coercion ?

उ०—इसका भी अर्थ है जुस्म ।

प्र०—Repressive का मायान्तर क्या हो सकता है ?

उ०—कोय देखे बिना बताना कठिन है (कोय देखकर) इसका अर्थ दबाने या कुचसनेवाला होसकता है । मधली मायामें इसके लिये क्या शब्द बनाया गया है नहीं तो साधारण अर्थ इसका है 'जुस्मी' ।

प्र०—देयके आईनके सम्बन्धमें despotic क्या क्या अर्थ होगा और Tyrannical का होगा क्या वही उसका भी होगा ?

उ०—Despotic और Tyrannical का सूक्ष्म भेद नहीं जानता । लेकिन मेरी रायमें 'Despotic (स्वशासक) राजा' और Tyrannical (अतिशय) राजामें कोई भेद नहीं है ।

प्र०—अथ A despotic rule need not be tyrannical इसका क्या अनुवाद होगा ?

उ०—'यह आवश्यक नहीं है कि जुस्मा राज्य पदति जुस्म करने वाली हो' ।

प्र०—Tyranny is the perversion of Monarchy इसका क्या अनुवाद करते हो ?

साँचको आँचे नहीं !

घम्बई की सबसे सच्ची और सस्ती

आदत

घडिया-फोनोग्राफ-हारमोनियम और हर
किस्मके चाजे कपडा सौदागरीका सामान, कलें
द्रवाइया, वाइसिकिल वाईसकोप खिलौने सिनेकी
मसीन और हरतरहका सामान भेजी जाते हैं।
छोटेसे छोटा आर्डर भेजकर अजमालीजिये।
आदत खर्च या और कोईभीतः पत्रद्वारा पुछिये

आ भेजनेको पता

माल मंगलिका प्रज्ञा

“आरती” वस्त्रद

श्रीराम कम्पनी

Arti Bombay

वस्त्रद-नम्बर २

उ०—'जुल्मी राज्य परबिही' एक सुधा परबिही उलट पलट है।
 प्र०—अच्छा Autocratic और Absolute का क्या अर्थ है।

उ०—अनियंत्रित।

प्र०—और Arbitrary का अर्थ?

उ०—स्वीधीन, वे कैद।

प्र०—Uncontrolled?

उ०—अनियंत्रित।

प्र०—Irresponsible?

उ०—जो जबाबदार।

प्र०—और Imperialistic?

उ०—बादशाही।

प्र०—Government of India is despotism tempered by public opinion in England इसका क्या अर्थ है?

उ०—हिन्दुस्तान सरकारका राज्य विनियमित बाबोंके लोकमतसे नमो या हुआ जुल्मी राज्य है।

प्र०—मराठी 'मायाकिरू' जिनूनी, (उन्मत्त) और 'आततायी' की प्रेमी क्या हो सकती है?

उ०—'माया किरू' अनुवाद Fanatic वा Gazi (गाजी) होगा आततायी अर्थात् Violent, Furious। आततायी किन लोगों को इ समझे हैं यह मैं नहीं कह सकता। आपसे, के सम्बन्ध कोपमे ६ प्रकार के मन्त्रापी लिखे हैं।

प्र०—मन्त्रतायी माया किरू कया शब्द है।

उ०—मराठी में साधारणतः 'मायाकिरू' अधिक कया शब्द माना जाता है। मन्त्रापी संस्कृत शब्द है, बहुत कम लोग इसके असली अर्थ समझते हैं। (मराराज)

मनुके एक श्लोक में ईश्वर के आश्रय की बत दी है —
 'गुरुं वा बालमुकं वा शिष्यं वा बहुभूतम्' । 100317A । य — ४२
 आश्रय की म मायात इत्यादि विचारण ।

इस श्लोक का योग साधारणतः प्रयोग किया करते हैं कि, नहीं यह मुझे
 पता नहीं । आश्रय की और मायादि में हीन शब्द अधिक कहा है यह मैं नहीं
 जानता । मेरे हिसाब से दोनों बराबर हैं ।

प्र०—अमेरिकी Felon शब्द का 'आश्रय' और Fanatic का
 'मायादि' ऐसा अर्थ हो सकता है कि नहीं ?

उ०—Felon का अर्थ आश्रय ही सकता है । लेकिन, बात यह है कि
 रामकीय पक्ष या उसके संबंधी प्रसंग में अनेक शब्द मध्य में मने गये पड़े
 हैं । उन शब्दों की अगद संस्कृत शब्द उपयोग करने की रीत है ।

प्र०—State, Government, Administration, Rule
 Sway. इन शब्दों के अर्थों में से दिखाने के लिये मराठी में कौन शब्द है ?

उ०—State अर्थात् राज्य या सरकार । Government—सरकार
 या राज्य पदवी । Administration राज्य पदवि, इसका अर्थ 'सरकार'
 नहीं हो सकता । Rule राज्य Sway—अमर्याद ।

जगह प्रश्न के उत्तर में कहा—Manliness का अर्थ है पौरुष, मर्दानगी
 Vigour—सामर्थ्य । Sense of honor—अभिमान उदि ।

प्र०—क्या Sense of honor का अर्थ 'तेज' नहीं हो सकता ?

उ०—मध्यमे ऐसा अर्थ हो सकता है की नहीं यह मैंने कभी नहीं सुना ।

प्र०—क्या 'तेजस्वी' हो सकता है ?

उ०—कदा नहीं सकता । लेकिन मेरा राय में 'तेजस्वी' की जगह—Spirited
 अच्छी होगी ।

अनुवाद काज नहीं बर सक्ता कल बणभोगा । यदि दूर ईंका अनुवाद न्व नहीं है
 इसके बाद अदास्त बठ सई अकरमा दुसरे दिनु मर छ गूमा ।
मंगलवार ता ० १४ जुलाई सन् १९०८
द्वितीय दिवस
 भाग १-१॥ मने जस्टिस, दायर, और स्पेशल जुरीके सामने फिर
 मुकद्दमा पेश हुआ । आज बाहर बहुत मीठपाड न थी जो कुछ ध्या
 वह अदास्तमें, और वह भी कम न थी बकील बैरिस्टरोंकी भी खासी
 भीषी । सीसुक्त, तिलकको, सिर्फ सहाइ देनेके लिये आठ, बकील
 मौजूद थे । यह छोगा जिरहमें सरकारी अनुवादकके मराठी या अंग्रेजी
 अनुवादपर कभी कभी खूब हँसते थे

केसरी प्रेसमें हरज ।
 जजके बैठनेपर पढ़ले श्रीयुक्त तिलकने कहा कि मेरे केसरी प्रेसके
 कई कम्पोजीटर सरकारी गवाह बनाकर बुलाये गये हैं । उनके बिना
 वहाँ काममें बड़ा हरज हो रहा है अदास्त उन्हें जाने की आज्ञा दे दे
 क्योंकि मैं स्वयं उन लेखकों छापने और प्रकाशित करनेका जिम्मा
 लेता हूँ । इससे उनकी गवाही लेना व्यर्थ है ।
 सरकारी बैरिस्टर मि० जेन्सनने इसका प्रतिवाद किया, कहा कि
 युक्तने मजिस्ट्रेटके सामने लेखकों जिम्मेदारीका कुछ जिक्र नहीं किया
 इससे वह अभी यहाँ नहीं कह सकते ।

जम साहबने कहा अभी इन प्रश्नोंके उत्तरका समय नहीं है, लेकिन मैं जानता हूँ कि सरकारी बैरिस्टर कम्पोजिटर्सकी गवाही देनेमें देर नहीं लगावेंगे बल्कि छुटी कर देंगे। (1972-73) 11/11/72

अनुवादककी जिरह।

ए०—इसके बाद नायब सरकारी अनुवादककी जिरह फिर आरम्भ हुई।

श्री युक्त सिलक—अधिकार बांटना इसका अनुवाद *decentralisation of power* हो सकता है।

वि० जोशी—नहीं यह कभी नहीं हो सकता *Apportionment of power*। अर्थवादी हो सकता है।

श्री युक्त सिलकने मुकदमसे अलग एक लेखका हवाला दिया इसपर बैरिस्टर जेन्सन ने उम्र किया कहा, यदि अभियुक्त उन्हें देखेगा तो वह लेखकी शामिल मिसल हो जायगा किन्तु जबने उनका उम्र नमाना और श्री० सिलकको लेख देखने दिया।

आगे सिलक महाशयने प्रश्न किया—१२ मईके लेखमें 'सिद्धांत' और 'द्वेष' का क्या अनुवाद किया है?

वि० जोशी—द्वेष *hatred* या *enmity* 'सिद्धांत' के भी इसी अर्थ हैं। पहला संस्कृत शब्द है दूसरा मराठी। (1973-74) 11/11/74

प्र०—क्या मराठी भाषामें *disgrunt* का अर्थ 'सिद्धांत' नहीं ऐसे

उ०—मैं कह नहीं सकता।

प्र०—इस शब्दके लिये क्या कोय नहीं देखा?

उ०—मुझे याद नहीं।

अधिकृत लिख—अच्छा अब कोय देखकर मतालो।
मि० जोशी (कोप देखकर) हाँ, यह है—*disdain* *disdain* इत्यादि।

प्र०—अच्छा, आगे उसी लक्षमें *Obstinaacy* और *perversity* के क्या मानी?

उ०—*Obstinaacy* हठ *perversity*—दुरमह।

प्र०—‘दुरमह’ का अनुवाद *Stubborn* ही हो सकता है।

उ०—*Stubbornness* से थोड़ा बहुत उसका अर्थ निकलता

ही सही, किन्तु यह ‘दुरमह’ का अनुवाद नहीं कहा जा सकता।

प्र०—*Owing to obstinaacy and Stubbornness* इसके

लिये लक्षमें क्या शब्द है।

उ०—‘हठसे किया दुरमहसे’। सरकारी अनुवादके यही अनुवाद

किया है।

प्र०—*dispensation of God* इसका क्या अर्थ है।

उ०—ईश्वरीय नेमाने। नेम का अर्थ नियम।

nation की नेम और नेमा नेम एक।

प्र० *the ways of God* अर्थ

अधिकृत लिख—

उ०—अधिक नहीं लेकिन पहलेके बराबरही होगा ।

प्र०—As you sow, so you reap इसका क्या अर्थ है ?

उ०—जैसा बोवे वैसा उगाता है ।

प्र०—उगानाही अंगरेजी ?

उ०—Germinate.

प्र०—मराठी और संस्कृतकी यह ओकोकि जानते हो न—यथा बीजम्

तथा क्रूर—इसका अनुवाद करो ।

उ०—As the seed, so is the sprout

प्र०—सिरजोरपना, इसकी क्या अंगरेजी है ?

Recklessness

प्र०—'जह-खी बडी सिरजोर होराई है इसका क्या अनुवाद करोगे ?

उ०—That woman has become turbulent

प्र०—Reckless नहीं है न ?

उ०—नहीं उस अर्थमें नहीं ।

प्र०—अधिकारी सिरजोर होमये हैं, क्या अनुवाद करोगे ?

उ०—The Officials have become reckless

और कई शर्मों पर बहस होने के बाद अदालत जल्लान के लिये

उठाई ।

फिर इजलास आनेके बाद मि० जोशी को जिद्द शुरू हुई। फलकी पेशी में उन्होंने एक अंग्रेजी वाक्यका मराठी अनुवादके आज मतानेको कहा था, इससे सिलक महोदयने पूछा—Error of Judgment के लिये मराठीमें कोई शब्द बता सकते हो ?

उ०—मैंने 'विवेकविधम' यह एक आपही शब्द लिया है, नहीं तो मराठीमें इसके लिये कोई शब्द है नहीं।

और आगे पूछा गया कि क्या मराठी अखबारोंके कई दल हैं ? इसका उत्तर देनेमें मि० जोशी आगा पीछा मोतने लगे। किन्तु अज साहबने कहा कि इसका उत्तर देना होगा। अन्तमें मि० जोशी ने कहा कि हाँ। मराठी अखबारोंके कई दल हैं। लेकिन अन्तमें आपने यह भी बताया कि वह मैं आपसे निजके सौरसे कहता हूँ। इसपर खूब हँसी-हँई।

सम—क्या सरकारी सौरसे कहते हो कुछ और कहते ?

मि० जोशी—नहीं।

इसके बाद सिलक महोदयने कहा कि अब मैं मि० जोशीसे जिद्द नहीं करना चाहता।

तब सरकारी बैरिस्टर खड़े हुए और मि० जोशीसे पूछा—क्या इन छिछोरी साधारण आदमी नहीं पढ़ते ? मि० जोशीने कहा—पढ़ते हैं। इस पर सिलक महोदयने आपत्तिका कहा मेरी जिद्दसे ऐसी

नहीं उठता। लेकिन जब साहबने कहा कि नहीं मेरी रायमें
उठता है।

श्री० तिलक यह अपनी अपनी राय है।

मि० वेन्सन—हिमं लोडिशियन दे चुके हैं।

किर प्रवृत्त, वधु और वृषभ पर बहुत हुई। मि० जोशीने कहा

कि इस छत्रमें 'वध' का अनुवाद Assassination ही ठीक

होगा। अगो कहा कि 'केसरी' गर्म दलका अखबार है। अमियुक्तही

उसके एडिटर और मालिक हैं। यह एक नामी अखबार है।

इसपर श्रीयुक्त तिलकने कहा कि इसके लिये कोई सबूत नहीं

बाहिये मैं तो स्वयं कह रहा हूँ कि 'केसरी' का मालिक एडिटर

एडिटर और प्रकाशक है।

जब साहबने यह बात लिखली इसके बाद मि० जोशी की गवाही

खतम होगी। तिलक महोदयने अदालतका प्यान बम्बई गजट

की एक टिप्पणी की ओर आकर्षित किया जिसमें कहा गया है कि

तिलक महोदय मि० जोशीसे अनुचित रीति से मित्र करते हैं

जब साहबने उसी दम "बम्बई गजट" के प्रतिनिधि को बुलाया

लेकिन वह मौजूद नहीं था। जब साहबने उक्त अखबारको एक केसा-

बनी भेजी है। इसके बाद

नारायण जगन्नाथ दावार

पेश हुआ। उसने कहा—मैं कस्टम आफिसमें जर्क हूँ। ६६ में ऊँ
खुलाई तक 'केसरी' का बम्बईका एजेंट था। दस वर्षोंसे एमेन्सी करता
हूँ। बीचमें कभी कभी छोड़ दी थी। उनमें २००० कापी मंगाता
था और मुझे २०००। बम्बईमें १२९० ग्राहक हैं। बम्बईके
ग्राहक और बाजारमें बेचनेवाले मुझसे अखबार लेते थे। १२ जून और
१२ मईके अंक भी मिले थे।

इसके बाद तुकाराम गवाह बुलाया गया लेकिन वह हाजिर नहीं
था। एक और गवाह बुलाया गया लेकिन वह भी मौजूद नहीं था। तब
पुलिसइन्स्पेक्टर सुलीवान

पेश हुए। उन्होंने कहा—मैं पन्द्रह वर्षोंसे नौकर हूँ। मुझे सि०
सिलकके पूनावाले घर और 'केसरी' प्रेसकी तलाशीके वारण्ट मिले थे।
मैं पूना गया और वहाँ 'प्रेस' दफ्तर और घाफ़ी तलाशी ली। पूनाके
पुलिस सुपरिन्टेण्डेंट भी साथ थे। मैंने पत्रोंके सामने स्वयं तलाशी ली।
(गवाहको एक कपड़े दिखाया गया) हाँ यह कपड़ा मुझे तलाशीमें
अशुक्त तिलककी मेजमेंसे मिला था। मैंने अपने साधियोंको भी यह
कपड़ा दिखाया। मि० कलकरने भी देखा और उसपर दस्तखत कर दिये।
सिलक महोदयने कहा कि मि० कलकर यहाँ मौजूद हैं उनसे पूछ

लिया जाय । सरकारी बैरिस्टरने कहा मैं यह कांड अभियुक्तके विरुद्ध सुबूतमें दाखिल करता हूँ । साथही एक खिलासती मुकदमेका इवाज दिया, जिसमें एक आदमीपर खूनका अभियोरा चलाया और ओ कानून उसके धरसे बरामद हुए उसके खिलाफ सुबूतमें पेश किये गये थे, बैरिस्टरने कहा कि वह खूनका मामला था, लेकिन सामोस्यका यह उतना भयंकर नहीं है (अदालतमें हँसी) ।

मज-छात्रोंमें कांड देखें । जूरीको अभी न सुनना । बैरिस्टर-लेकिन मुझे यह मालूम हो जाना चाहिये कि कांड दाखिल किया जायगा कि नहीं ।

श्री० तिलक-मैं नहीं समझता कि उसका इस मामलेसे क्या सम्बन्ध है । मैं यह नहीं कहता कि यह मेरा नहीं है लेकिन तलाशी मेरे पीछे हुई थी ।

मज-कांड तलाशीमें मिला था इससे मुझे उसे दाखिल करनाही पड़ेगा ।

तब सरकारी बैरिस्टरने वह कांड पढ़कर सुनाया उसमें केवल भक्तसे उठने वाले मसाला संबंधी २ पुस्तकके नाम modern explosives और Hand book on modern explosives लिखे । और दो पुस्तकका नाम भी लिखा था ।

जिरह

उत्तम तिलक महोदयने इन्स्पेक्टर सुदीवान से जिरह आरम्भ की।
इन्स्पेक्टरने कहा पूर्ण से मैं सिम कागज में नहीं ले आया था। केसरी प्रेस,
दफ्तर और तिलक महोदय का घर एक ही मिहाते में है। कागज मेज पर
नहीं था। बल्कि अन्दर कागजों में था। कितने कागजों का सिम लेया
यह याद नहीं।

तिलक महोदयने अदालतसे कहा कि आप वह सत्र कागज
में गाले। मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। कागज अदालतमें मौजूद नहीं थे
इससे मुकदमा उस दिन मुकतमी होगया।

इससे पहले तिलक महोदयने अदालतसे प्रार्थना की कि मुझे हफ्ते
एक पुस्तकालयमें कुछ कानूनी पुस्तकें देखनेकी आज्ञा दी जावे।
मजने कहा यह तो नहीं हो सकती, लेकिन अपने सहायकार बकीरोंकी
मार्फत जो पुस्तक चाहे मिठ सकती है।

बुधवार ता० १५ जुलाई सन् १९०८

तीसरी पेन्नी।

आज ११ बजे फिर मुकदमा शुरू हुआ। आज भी अदालतमें
खुब भीड़ थी। कई यूरोपियन बियाँ भी आज यह 'तमाशा' देखने
आई थी। बकीर और खुरीकी संख्या भी चढ़ी बढ़ी थी। नम और
खुरीके बैठनेके बाद फिर इन्स्पेक्टर सुदीवानकी जिद होने लगी।

आरम्भमें ही सिल्क महोदयने पूछा कि कल जो कागज मैंने मागे थे क्या वे बदल्यतम लाये गये हैं ?

सरकारी बैरिस्टरने कहा हाँ सब मौजूद हैं।

जज-तुम जाही तो देख सकते हो + कामाज, देख भाइयार तिलक
महोदयने कहा कि इसमें सब नहीं है एक विफाता जिसमें कामाज,
सगश बताया गया था वह भी नहीं है जम साहबने सरकारी-मैजिस्ट्रेटसे
इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि और सब कामाज प्रेसीडेन्सी
मजिस्ट्रेटकी अदालतमें हैं। जज साहबने कहा कि ऐसा नहीं होता
चाहिये, मैजिस्ट्रेटके यहासे सब कामाज आने चाहिये। उसीदम एक
जर्क पुलिसकोर्टसे सब कामाज लानेको भेजा गया। इधर तिलक महो-
दयने इन्स्पेक्टरसे जिरह शुरू की। उन्होंने कहा 'मजिस्ट्रेटके चारट
पर मि० तिलकके घरकी तलाशी ली गई थी। चारट में 'केवल' निवास
स्थान लिखा था। मैंने सिंहगढ और 'पूना' दोनों जगहके धरोकी
तलाशी ली थी। सिंहगढमें दो अलमारियां तोड़कर तलाशी ली थी
लेकिन कुंठे मिला नहीं।

“सीलक” महोदय ने अदालत से कहा कि मुझे वह वॉरंट भी मँगवा-
दीजिये मैं इसनेक्टर से निरह करूँगा। जन साहब ने उसके लिये ई।
पुलिस कोर्ट में आदमी दौड़ाया फिर “मि०” मुख्तियार ने निरह दिया।

इसके बाद कोई १॥। मने सिल्लु मृहोदयने जूरीके सामने अपनी घंघूस धारम्भ की। घंघूस क्या की मानो सिद्दीशानुके कानूनकी बड़ा सारगर्भित टीका कर दी। जबतक आपकी मर्दान्ता चलती रही मज, जूरी, वकील, प्रेसिडेंट तथा दर्शक सब एकट्ठा आपकी ओर देखते थे।

अधिक शिक्षा भाषण

६॥ बने आप-बहसके लिये खड़े हुए । आपने कहा—“ जुरीके सज्जन गण । फारियादी सरकारके बैरिस्टर, एडवोकेट जनरलकी भांति मुझमें वृत्त्य शक्ति नहीं है । सरकारी बैरिस्टरने बर्दा योम्यतासे यह मुकद्दमा फज और जुरीके सामने पेश किया है । अपनी वकालत आप करनेवाले अभियुक्तको जुरी जिस उदार दृष्टिसे देखती है मुझे विश्वास है कि मैं भी उससे वञ्चित न किया जाऊँगा । मुझपर जो अभियोग लगाया गया है वह बिल्कुल बेइमानी है, उसका कुछ अर्थही मेरी समझमें नहीं आया क्या आपलोगोंकी समझमें आया ? कुछ खोंपरही मुकद्दमा चलाया गया है, यह नहीं मताया कि लेखमें कौनसी बात सिंटीशनकी है, यह विविध तरीका है । लेख सिंटीशनी नहीं है यह सम्मित करनेका दोष भी मेरेही ऊपर रखा गया है । ” अब मैं लेखके शब्द शब्दका नवाम, वृत्तव कहीं जवाब दिया जा सकता है । सरकारी बैरिस्टरने मुकद्दमा

पेश करते हुए भी यह नहीं बताया कि, लेखने किस किस बातका जवाब देना पड़ेगा। मैं बकौल हूँ लेकिन मुरतसे प्रकाशित छोड़ रखी है, इससे मैं अच्छी तरह बहस नहीं कर सकता। मेरी इस कमजोरीका ह्वाला रखकर आशा है कि जूरी ध्यानसे सुनेगी। अच्छा अब ह्वाला दीजिये कि मुकदमा क्या है। यह कि मैंने 'केसरी' में कुछ लेख छापे। वही लेख आप लोगोंको पढ़के सुनाये गये और यह भी कहा गया कि घस, आप छोडा उनका अर्थ बैसाही समझ लीजिये और मुझे दोषी मानकर दण्ड दिय्या दीजिये। सिद्दीशनमें, तीन बातें देखी जाती हैं—लेख छापकर प्रकाश करना, लेखमें बुरे इशारों और तानाशे काम लेना, और सबसे बढ़कर यह कि शोधपूर्ण विचार या नीयत रखना। छापकर प्रकाश करनेकी निम्नोदधत् तो मैंने लेखी जो इशारे और ताने तथा विचारकी बात अगे कहूंगा। इशारों और तानोंके विषयमें जरा यह बात ध्यानमें रखिये कि, वह मेरे मराठीके शब्दोंसे जूरीको नहीं समझाये गये बल्कि उस तर्जुमेसे जो सरकारने अनुवादकने किया है यदि बहुत मुळस मियतसे कट्टी तो यह कहेंता हूँ कि वह तर्जुमा कदापि इस योग्य नहीं है कि जूरी उसके मरोंस मेरे दोषी होनेपर विचार कर सके। नीयतके विषयमें यह ह्वाला रखिये कि फतेमादी पक्षने उसे प्रमाणित करनेके लिये कोई सबूत नहीं पेश किया। केवल एक पोस्टकार्ड दाखिल

किया है जो मेरे पीठ पीछे तलाशी-लिखत मेरे घरसे बरामद किये जाँ। फॉरवर्ड पक्षका सहारा केवल मुकदमेवाले लेखों तथा चार और लेखों पर है जो नीयत साधित करनेके लिये पेश किये गये हैं। नीयत साधित करना उतना सहम नहीं है जितना कि दिखाया गया है। ऐसे मुकदमेमें नीयत साधित करनेका प्रश्न ही मुख्य और परमावश्यक है शब्दों का असली अर्थ ब्यापार गलत तर्जुमा जुरीके सामने पेश किया है। जिस भाषाको जुरी जानतीही नहीं, उसमें क्या बात किस नीयतसे लिखी गई है यह आप कैसे बता सकते हैं और देखपर कैसे विचार कर सकते हैं ? एक उदाहरण छीमिये । इंग्लैण्डमें यदि कोई लेख फ्रेंच भाषामें लिखा जाय और जुरीसे कहें कि इसपर यह विचार कीजिये कि फ्रेंच लेखके अंगरेजी सहमेका फ्रेंच प्रजापर मान्दमें क्या प्रभाव पड़ेगा, ऐसी दशामें आप क्या विचार कर सकते हैं ? सरकारी अनुयायकने कैसी दिक्कत पैदा करदी है इसका जिक्र मैं आगे करूँगा।

लेख मराठीमें लिखा गया है आपको यह विचारना चाहिये कि मेरे पकड़े जानेसे पहले 'फेसरी' के मछड़े पाठकों पर उनका क्या प्रभाव पड़ सकता था। आपको यह विचार नहीं करना है कि लेखोंका असर मुझपर, आप पर, या इंगलाण्डवालों पर क्या पड़ेगा। आपको विचारना यह है कि केवल 'फेसरी' के पाठकों पर उनका क्या प्रभाव

पड़ेगा।

होनी चाहिये । केवल छेड़ प्रकाश करके अपराध करनेका प्रयत्न
 सिद्ध नहीं होता । (देखो Justinian's Original Law
 of England Vol II, -pp 221)

केवल प्रकाश करनेसे अपराध करनेका हेतु कैसे सिद्ध हो सकता है,
 जो कि छेड़ में प्रकाश किया है वही छेड़ सख्खे-दारने भी अपराध
 पदार्थ सुनाया है, यह भी प्रकाश करना कहा जा सकता है । ऐसी
 सूरतमें तबपर मुकदमा क्यों खड़ा जाय । मेरे मुकदमेका हक
 लिखित हुए अन्य अखबारोंमें भी उसा लिखिको प्रकाश किया है । तबपर
 क्यों मुकदमा में खड़ा जाय । नहीं खड़ानेका कारण यह है कि
 उन लोगोंकी नीयत अपराध करनेकी नहीं है । कोनो मामले में मार्ग
 माननेसे जैसे अपराध नहीं होता इसी लिये अब तक यह साबित न
 हो कि छेड़ सिद्धांशनी नीयतसे लिखा गया है तब तक यह अपराध
 नहीं ठहर सकता । ऐसे मुकदमेमें यह एक सबूत है सही कि छेड़
 प्रकाशित किए गये थे किन्तु यह सबूत केवल हममें एक आना मात्र
 है । मुख्य सबूत लिखककी नीयत है वही देखना चाहिये । पाससे
 एक सोझा अफिम बरामद होने या ताखाममें गिर पड़नेसे यह सिद्ध
 नहीं होता कि अफिम रखनेवाले या मरुमें गिरनेवालेकी नीयत अफिम
 इत्यादि रखेकी थी । पहला अफिम खानेवाला हो सकता है दूसरा केवल
 तैरनेके लिये । अफिम बुरा होता है । आरेषीकी नीयत सिद्ध करनेकी
 बातें लगातार इसी तर्जिह लाना । तब तक तब तक ही

जिम्मेदारी करियादी पर है । बंध? जिम्मेदारी आरोपीके सिव पटकना अनुचित है । जब तक पूरा सबूत न दिया जाय आरोपीको निर्दोष समझना चाहिये । नीयत सिद्ध करनेके लिये करियादी सरकारकी तरफ से इस मुकद्दमेमें कोई सबूत नहीं प्रेश किया गया । आपके सामने मेरे लेख पटक दिये, बस इतनेहीको सरकारी ।

बैरिस्टर नीयतका सबूत समझते हैं । इसी सबूतपर आपसे कहा गया कि मुझे दोषी मान लीजिये ।

आगे कहा—पेनल कोडकी किसी किसी बातके साथ Exceptions होते हैं । सरकारी बैरिस्टरने जिस दफ्ते और जिस प्रकारका सबूत मेरे विरुद्ध प्रेश किया है उससे मेरा अभियोग उन Exceptions या अपवादोंमें बहुत कुछ पड़ता है । इसने अपने आपको निर्दोष साबित करनेका बौद्ध मुझीपर पड़ता है । १२४ अ में अपवाद नहीं है बल्कि अलगा खुलासा किया गया है । इस खुलासेसे मेरा लेख सम्बन्ध रखता है कि नहीं यह साबित करनेका जिम्मा मेरा नहीं है । यह खुलासा उस प्रारम्भिक स्पष्टीकरण मात्र है । यह काम सरकारी बैरिस्टरका है कि वह साबित करे कि मेरे लेख १२४ अ भागमें आते हैं इसके सिवा यह भी उन्हींके हाथमें है कि मुझे उस खुलासेका लाभ उठाने दें या न उठाने दें । किन्तु यह साबित करना भी उन्हींका काम है कि मुझे उस खुलासेका फायदा नहीं मिल सकता । नाम-

कल कहा जाता है कि आरोपीको यह दिखाना चाहिये कि खुलसेका
 काम वह पा सकता है। खुलसेके अनुसार अखबारवालोंको एक हद तक
 सरकारी कामोंकी टीका करनेका अधिकार दिया गया है। यह सीमा
 उल्लंघन नहीं की, यह साबित करना भी आरोपीहिकी सिर-पटका जाता
 है। लेकिन मजा यह कि इसका साबुत देनेके बाद आरोपीका अन्तमें
 जबाब देनेका अधिकार मारा जाता है। अवस्यत मुझसे कह चुकी है
 कि मि० मैन्सन सरकारी बैरिस्टरकी वहसके बाद मैं उत्तर न दे सकूँगा
 । सरकारी बैरिस्टर कहते हैं कि मैंने अखबार और कामान पत्र सुबूतमें
 दाखिल किये हैं वह यदि कोई नई बात पैदा करनेके लिये नहीं है
 तो उनका दाखिल करना अनुचित है। मेरी रूयमें यह विचार गलत
 है। मैंने सीमा उल्लंघनकी, इसका खूब स्पष्ट और पूरा पूरा सुबूत
 फोरियानीको देना जरूरी है। यह खुलसा जो १२४ अ के साथ
 ख्याता गया है वास्तवमें अखबारोंकी रक्षाके लिये ख्याता गया
 था। वास्तवमें जुरीहीका यह कर्त्तव्य है कि वह अपने सामनेके सुबूतके
 अनुसार यह स्पष्ट करे कि किस नियतसे देख लिख गये थे। नियत
 मालूम करना जुरीही का काम है मैंने खुलसेका उल्लंघन किया या नहीं
 इसका साबुत अुरीके सामने पेश होना चाहिये। नहीं तो, जुरी कुछ
 स्थिर नहीं कर सकती। यह मुझे कबूल है कि नीयत अनुमान हीसे
 हो सकती है। यह अनुमान देख पढ़के बहुत कम हो सकता

है, पूरा अनुमान तभी होसकता है जत्र आस पासकी सब बातोंका
 लख्य किया जाय । केवल रानद्रोही से नीयतका अनुमान नहीं
 हो सकता । यदि ऐसा हो तो सबसे पहले कोश संग्रह करने वालोंको
 जेल भेजना चाहिये क्यों कि उन्होंने अपने कोशोंमें सभी राजद्रोह
 सूचक शब्द लिखे हैं । यदि आपकी राय हो कि लेखकीसे लेखकी
 नीयतका अनुमान हो सकता और लेखकी उसकी नीयत का साबूत है
 तो बस, कोई लेखक भी इंडियन पेनलकोडके दण्डसे नहीं बच
 सकता । एस्किन साहबकी Speeches on Sedition नामक
 पुस्तकमें यह एक उदाहरण दिया है—राजधर्म शास्त्र लिखते
 बक्त एक साहबने राजाकी तुलना पुलिस कान्स्टेबलसे की । इससे
 राजाकी हक्क होती है । किन्तु इङ्ग्लैण्डमें यह गुनाह नहीं समझा
 गया । सरकारने जिसको दोषी कहा उसको जुरी भी दोषी नही
 यह कानूनका मतलब नहीं है

२ १-२४ अ में Existed शब्द है । राजद्रोह उत्पन्न करनेका मुझपर
 आरोप नहीं है बल्कि यह है कि मैंने उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया । जब
 पहलेहीसे प्रनामें राजद्रोह हो तो उसे प्रकट करनेसे मैं किसी प्रकार
 दोषी नहीं होसकता । मैंने कोई नया राजद्रोह पैदा नहीं किया चरित्र

कल कहा जाता है कि आरोपीको यह प्ताना चाहिये कि खुलासा
 यम वह पा सकता है। खुलासेके अनुसार अखबारवालोंको एक हदतक
 सरकारी कामोंकी टीका करनेका अधिकार दिया गया है। वह सीमा
 उल्लंघन नहीं की, यह साधित करना भी आरोपीहीके सिर पटका जाता
 है। लेकिन मजा यह कि इसका साबुत देनेके बाद आरोपीका अन्तमें
 जबाब देनेका अधिकार मारा जाता है। अदालत मुमते कह चुकी है
 कि मि० ब्रैन्सन सरकारी बैरिस्टरकी बहसके बाद में उत्तर न दे सकूँगा
 । सरकारी बैरिस्टर कहते हैं कि मैंने अखबार और फामाज पत्र मुन्तमें
 दाखिल किये हैं यह यदि कोई नई बात पैदा करनेके लिये नहीं है
 तो उनका दाखिल करना अनुचित है। मेरी रायमें यह विचार गलत
 है। मैंने सीमा उल्लंघनकी, इसका खूब स्पष्ट और पूरा पूरा सबूत
 परियानीको देना जम्मी है। यह खुलासा जो १२४ अ के साथ
 ख्याता गया है वास्तवमें अखबारकी रक्षाके लिये ख्याता गया
 था। वास्तवमें जुरीहीका यह कर्तव्य है कि वह अपने सामनेके सबूतके
 अनुसार यह स्थिर करे कि कितना नियतसे देख लिख गये थे। नियत
 मालूम करना जुरीही का काम है मैंने खुलासेका उल्लंघन किया या नहीं
 इसका साबुत जुरीके सामने पेश होना चाहिये। नहीं तो जुरी कुछ
 स्थिर नहीं कर सकती। यह मुझे कबूत है कि नीयत अनुमान हीसे
 हो सकती है। यह अनुमान देख पक्षके बहुत कम हो सकता

है, पूरा अनुमान तभी होसकता है जिन आस पासकी सब बातोंका
 छल्य किया जाय । केवल राजद्रोही इन्हेंसे नीयतका अनुमान नहीं
 हो सकता । यदि ऐसा हो तो सबसे पहले कोश समझ करने वालोंको
 जेल भेजना चाहिये क्यों कि उन्होंने अपने कोशोंमें सभी राजद्रोह
 सूचक शब्द लिखे हैं । यदि आपकी राय हो कि देखहीसे देखककी
 नीयतका अनुमान हो सकता और देखही उसकी नीयत का समूत है
 तो बस, कोई देखक भी इण्डियन पेनलकोडके दण्डसे नहीं बच
 सकता । एल्किन साहबकी Speeches on Sedition नामक
 पुस्तकमें यह एक उदाहरण दिया है—राजधर्म शास्त्र लिखते
 वक्त डाक साहबने राजाकी तुलना पुलिस कान्स्टेबलसे की । इससे
 राजाकी हतक होती है । किन्तु इंग्लैण्डमें यह गुनाह नहीं समझा
 गया । सरकारने जिसको दोषी कहा उसको नूरी भी दोषी कहे
 यह कानूनका मतलब नहीं है -

१-२४ अ में Existed शब्द है । राजद्रोह उत्पन्न करनेका मुझपर
 आरोप नहीं है बल्कि यह है कि मैने उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया । जब
 पहलेहीसे प्राममें राजद्रोह हो तो उसे प्रकट करनेसे मैं किसी प्रकार
 दोषी नहीं होसकता । मैने कोई नया राजद्रोह पैदा नहीं किया बरंच

जो पहलेसे मौजूद था उसे ही प्रगट किया है। मेरे लेखोंसे यदि यह मालूम हो कि मैंने कोई नया राजद्रोह पैदा किया है या पहलेवालोंकी मदकाया है तब मैं दोषी होसकता हूँ। यदि किसीके विरुद्ध कुछ लिखा गया तो यह जरूर है कि वह नाराज हो। 'सरकारी कामोंसे जो नागमी पहलेसे पैदा रही है जब यह हद दर्जेतक पहुँच गईतब वह लेख द्वारा सरकारपर जाहिर की गई। अब यदि यह कहा जाय कि मैंने लेख 'लिखकर' पहलेसे मौजूद राजद्रोहकी उत्तेजित किया तो यह मूल है मैं उसका किसी प्रकार टीपा नहीं कहा ना सकता। यों लेखों द्वारा सब बातें जाहिर न की जायें तो राज्य प्रकृतिका सुधार कैसे हो सकता है। राजद्रोहकी व्याख्या न इंग्लैण्डमें 'और' न 'यहाँ' स्पष्ट शब्दोंमें की गई है, यह धेराक कहा जाता है कि '२४' की धारा स्पष्ट है सही, परन्तु उससे अखबार वालोंकी स्वतन्त्रतामें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पड़ती। यह बात उस धाराके छुलासेहीके नीचे पर कहा जाती है क्योंकि छुल्लेसेमें सरकारी कामोंकी टीका करनेकी परवानगी दीगई है, लेकिन यह परवानगी वहीतक है कि जहाँसे सरकारके साथ पाठकोंकी प्रीतिमें फरक न पड़े। किन्तु मुद्रिक यह है कि सरकारी कामोंके विरुद्ध लिखनेसे नापसन्दी पैदा हुए बिना नहीं रह

— ५५५ — ५५५ (५५५) ५५५ ५५५ ५५५ ५५५

सकती सरकारके विरुद्ध जो कुछ लिखा जायगा उससे अवश्य ऐसा ख्याल पैदा होगा। इस लिये धाराका छुलसा होनेपर भी वह निरर्थक बनी रही। किन्तु मेरी रायमें यह छुलसा निरर्थक नहीं है इसके द्वारा समाचार पत्रोंको स्वतन्त्रता देनेका मतलब रखा गया है। किसी हदतक अगर नापसन्दी उत्पन्न होजाय तो भी कुछ हरज नहीं इस छुलसेका यही उद्देश्य है इस खलसमें हद क्या सुकरर कीगई है इसके विषयमें एसीकिन जज कहते हैं कि लेखकही उस हदको बता सकता है। उनका कहन है कि लेखक समझमेंसे सुनी हुई जूरीही यह बता सकती है कि लेखक ने हद उलघन की या नहीं। आप जूरीमेंसे जिस लेखको १२ आदमी पढ़ दें कि यह लेख हदसे निकालकर लिखा नया है तो वही लेख विद्रोहपूर्ण माना जायगा। राजद्रोहकी यह साधारण व्याख्या है। इसीके कारण इंग्लैण्डमें अखबारोंकी रक्षा होती है। सरकारके कर्मोंमें सरकारकी पाटिसीका भी समावेश होता है। सरकारी पाटिसीपर कोई टीका करना हतक नहीं है। १२४ अ. में “गवर्नमेंट स्टेम्पिड्ड। धई ला” अर्थात् कानूनसे स्थापित की हुई सरकार। पेनलकोडमें केवल ‘सरकार’ शब्द दिया है किन्तु उसमें सरकारी अधिकारियोंका भी समावेश होता है। उसका अर्थ यह नहीं होसकता वही, सरकारका अर्थ वह सत्ता है जो अधिकारी वर्गसे पृथक है। वर्तमान कर्मचारी य,

तो बदले जा सकते हैं या मर जी सकते हैं लेकिन ब्रिटिश सरकारजी यह दशा नहीं हो सकती इसीसे वह कर्मचारी दल अलग सत्ता नहीं माँगी है । सरकारी नौकर यह समझ सकते हैं कि हमी सरकार हैं ऐसा सोचना स्वाभाविक बात है । लेकिन यह स्पष्ट है कि अधिकारी वर्ग १९२४ अ. में कहीं हुई सरकार नहीं है । उनके कामकी टीका भी इस धारामें नहीं पढ़ सकती अपनी हार्दिक आकांक्षामें परबहस करना भी इस धारामें नहीं आसकता । यदि ऐसी बात होती तो आज किसी देशकी उन्नति न हो सकती । अपने मनको प्रकट करनेका स्वातंत्र्य हर एकको होना चाहिये । इसी स्वातंत्र्यताके कारणही संसारकी उन्नति दिनपर दिन हो रही है । 'भाटा' के मामलेमें जस्टिस बर्टीने ऐसीही विवेचना की थी । यदि ऐसा न होता तो संसारके समस्त तथ्यका जेयखाने बड़े-जते । मोर्ले साहबने भी इसी तथ्यको प्रगट किया है मरठे पाठकोंपर इस लेखका क्या असर होगा यह देखना चाहिये । लेकिन यह देखनेके लिये फर्सियादी पसने आपके सामने कोई मसाला नहीं पेश किया ।

अब मरा १९२५ अ. धाराकी ओर दृष्टि कीजिये भारतमें कई प्रकारकी जातियाँ बसती हैं, कई प्रकारके समाज मौजूद हैं अभीतक एक राष्ट्र नहीं बना । ऐसी दशामें लेखका अलग अलग जाति पर क्या कसर पड़ेगा, यह जूरियोंको बिना सूत्रत किये मालूम हो-सकता है । १९२५ अ.

केन्द्रीय सेमें Malicious intention अर्थात् द्वेषमूलक विचार—, राश्ट्र रक्षा में गया है । द्वेषमूलक विचार या नीयत केवल अनुमान से नहीं साधित हो सकती उसके लिये स्पष्ट और पूरा/पूरा सुबूत चाहिये । अब तक जैसा सुबूत आपके सामने न पेश किया गया आपको यही कहना उचित है कि बिना सुबूत हम नीयत के द्वेषपूर्ण होनेका निर्णय नहीं कर सकते । समयकी दशा और देखको मिलाकर नीयतका निर्णय हो सकता है मेरे लेख और मेरे मत आपको या सरकारको चाहे पसन्द न हों पर यहां अदालतमें आप पसन्दी या आपसन्दीका फैसला करने नहीं आये आप आये हैं, केवल यह बताने कि मैंने लेख लिखकर १९४ अ या १९३ अ के अपराधोंका कृत्य पूरा किया या नहीं ।

चाहे मैं सचको न पसन्द हूँ लेकिन मेरे साथ न्याय जरूर होना चाहिये । मैं आज आपके सामने न्यायकी प्रार्थना करने को खड़ा हूँ यह मैं नहीं कहता कि दया कीजिये, मैं केवल न्याय चाहता हूँ । न्याय से यदि आप मुझे दोषी ठहराते तो मैं अपने कियका दण्ड भुगतनेको तैयार हूँ । मेरे विषयमें सरकारका क्या मत है उसे न देखकर आपको अपना स्पष्ट मत प्रकट करना चाहिये सरकारी पालिसी अलग चीज है, न्यायकी अदालत अलग । यहां आप न्यायकी रक्षाके लिये आये हैं सरकारकी पालिसीकी रक्षाके लिये नहीं । इस घानको यदि आप ध्यानमें रखेंगे तो सरकारकी ओरसे चाहे किननीही धूल

अपकी छाँखमें सोंकी जाय, उसका कुछ भी असर आपकी न्याय छिपर न होगा । एरिफन जजने-कई जगह इस बातपर चोर दिया है कि अपराध करनेके लिये नीयतका होना आवश्यक है । घोडा ले, लेन होते चोरिका अपराध हुआ, यह ठीक नहीं है । कड़े लेख लिखना दूसरी बात है, दण्डा फसन्दकी नीयतमें भिन्नता दूसरी बात । इंग्लैण्डकी जूरिका लश्च सदा इसी सूत्रपर रहता है, उसीका यह फल है कि आज पिउत्यनी अवधारिका स्वातन्त्र्य भरीजाति रक्षित है । एरिफन साहबने भी ऐसाही निद किया है ।

इतनी बहस होनेके बाद उस दिन अटव्यट' उठ गई ।

बृहस्पतिवार ता० १६ जुलाई

चतुर्थ दिवस ।

आज ११॥ वजे फिर मुकदमा पेश हुआ जज और-चुरीके बैचने पर धीयुक्त निलक महाशयने अत्यंतसे पार्थनाः कि इस सुफुल्लमें मेरे दफतरमें पकड़े हुये जिन कर्मानातकी सरकारी बैरिस्टर जजचु न समझें क्याकर उन्हें लौटा दें, क्योंकि उनके बिना 'वेसरी' के दफतरमें हारा हो रहा है । सरकारी बैरिस्टरने शापर कर्षः आपसि न की इसमें जज सहयने बेकार कागजोंको दँव्य देनेका हुक्म दे दिया ।

इसके बाद आपसी बहस फिर आरम्भ हुई । आनेने कहा—“ श्री

सम्य गण ! आप जानते हैं कि सरकारी बैरिस्टरकी बहसके बाद मुझे बोलनेका अधिकार नहीं दिया गया है । मेरे रूपायमें सरकारी बैरिस्टर जो कुछ बहसमें कहेंगे उसका अनुमान करके मैं बहस कर रहा हूँ । वास्तवमें वह बहसमें क्या कहेंगे यह मैं नहीं जानता । मेरे शब्दोंमें जो बातें वह कह सकते हैं उर्दूका मैं पढ़नेत जाव दे रहा हूँ । वास्तवमें देखा जावे तो यह मेरे लिये बहुत बड़ी अङ्गुची है । इसी अङ्गुचीमेंसे मुझे अपने लिये कोई रास्ता निकालना है ।

कल मैं आपसे कह चुका हूँ कि Attempt अर्थात् प्रयत्न शब्द इस मामलेमें मुख्य समझना चाहिये । साधारण म्याल यउ है कि ऐसे मामलोंमें नीयत परदा मुकदमेंका निर्णय होना निर्भर है । लेकिन राजद्रोहकी व्याख्या में जो प्रयत्न शब्द है उसका निर्णय केयड आरोपीकी बुद्धिके अनुसार किया जा सकता है । अपराधकी नीयत और प्रयत्न करके अपराध करना अपराध कहलता है । जो काम मूल या लापरवाहीसे होजाय उसके विषयमें यह नहीं कह सकते कि यह नीयत रखकर प्रयत्न करनेने दाद किया गया । अपराध करनेकी कुछ तैयारीके बाद यदि अपराध किसी ऐसे कारणने रुक जाये या निष्फल हो तो यह बेशक कानूनके अनुसार अपराध करनेका प्रयत्न कहा मायगा । इस बातका आपके सामने वे ई सबूत नहीं है कि मैंने प्रजामें अभीप्ति लयश्न करनेका प्रयत्न किया और वह प्रयत्न सरकारके किसी यत्नसे रुक गया

मुझपर दो बातोंका अलगव लगाया गया है। एक यह कि मैंने सरकारके विरुद्ध अप्रीति फैलाई या फैलानेका उद्योग किया। यह आरोप निराकार है। यदि मैंने अप्रीति फैलाई तो फिर उद्योगका अपराध क्या जडा गया? इससे स्पष्ट है कि करियारी अभी यही निश्चय नहीं कर सके कि मैंने अप्रीति फैलाई या उसका केवल उद्योग किया। कोई सुवृत्त पेश नहीं हुआ कि मैंने अप्रीति फैलाई। जब यह साबित नहीं हो सका तो कहा गया है कि मैंने अप्रीतिका प्रयत्न किया। यों पेश दरपेश आरोप लगाकर मुझे जकड़ दिया गया है। यदि मेरे लखोंसे अप्रीति या द्वेषबुद्धि उत्पन्न होती तो मुझपर सीधा अप्रीति फैलानेका दोष आरोप होता। नहीं फैली तभी मुझपर प्रयत्न करनेका दोष लगाया गया है। इससे स्पष्ट है कि मैंने कोई अप्रीति नहीं फैलाई। विचार और नीयतमें बहुत भेद है। अपराधका निर्णय करते हुए नीयतकी ओर लक्ष्य रखना उचित नहीं है। किन्तु जब के ल प्रयत्न करनेकी आरोप हो तब अलवृत्ता नीयत और विचारोंपर लक्ष्य रखना चाहिये। जो काम किया जाता है उसकी नीयतमें कामके परिणामका ग्याल भी समाविष्ट है। यह कानून कहता है सही, किन्तु इसका उपयोग प्रयत्न के मामलोंमें तैरासे न करना चाहिये इसका विस्तृत अर्थ लगाना चाहिये। पेनलकोडकी ५११ धारामें जिस प्रयत्नका जिक्र है वह और बात है। १२४ अ के प्रयत्नसे उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है। १२४

अ के अनुसार दण्ड पानेके लिये प्रयत्न पूर्ण रूपसे होना चाहिये। सुसप्त ११ वाराका अभियोग नहीं चलाया गया है। राजद्रोहके मामलेमें इसी हाईकोर्टके चीफ जस्टिस जेम्किंस और जस्टिस वाटी फैसला दे चुके हैं कि जबतक पूर्ण रूपसे सोच विचार कर प्रयत्न न किया जाय और वह प्रयत्न अन्तमें अपराधीकी शक्तिके बाहर किसी कारणसे निष्कल हो, तभी वह प्रयत्न अपराध करनेका प्रयत्न कहा जा सकता है। अर्थात् प्रयत्न प्रमाणित करनेके लिये पूर्वोक्त बातोंका सूत्र पढ़ना बहुत जरूरी है।

अखबारोंकी स्वतन्त्रताके रक्षक आप जूरीही हैं। कानूनके मतलबमें अपनी रायके अनुसार जैसे जजको फेर बदल करनेका अधिकार है उसी तरह जूरीको भी है। आप हर अवसरपर अपनी स्वतन्त्र राय प्रकट कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि जैसे-जैसे फेर उसीके अनुसार आप भी राय दें। जजके आदेशानुसार राय न देनेके लिये इंग्लैंडमें जूरियोंपर फौजदारी मुकद्दमे भी चले हैं। अनियंत्रित राजसत्ता और व्यक्ति विशेषकी स्वतन्त्रताकी छद्ममें यही जूरी पद्धतिही आचारस्मर है। अखबारों और व्यक्ति विशेषकी स्वतन्त्रताकी रक्षा आपके सिवा दूसरा नहीं करता। आप जानते हैं कि इंग्लैंड नरेण द्वितीय जम्सके शासनकालमें जूरिने अपनी न्याय पद्धति

तिका कैसे मर्यादा रखी थी । राजने प्रवान् धर्माभ्युक्त आर्कविशेष
 पर अपना अज्ञाका दृष्टान करनेके अपराधमें मुकद्दमा चलाया । राजाके
 मुकद्दमा चलाने और नजके गोपी बतानेपर जूरीने कुछ ध्यान न दिया,
 उन्होंने मुकद्दमा सुनकर आरोपी पादरीको साफ छोड़ दिया । सन्
 १७९० के समयसे भी आप परिचित हैं । उस समय इंग्लैंड और कुछ
 यूरोपमें बड़ी अगान्ति फैला हुई थी । अशान्ति फैलानेवाले विचार मूल
 जल्द समस्त देशोंमें घुसते जाते थे । उस समय हर देशकी सरकारको
 यही भय लगा हुआ था कि यहीं वैसे विचारोंका प्रचार उसके देशमें
 न होनाय । भारत में आजकल जैसे अवधारों और वक्तव्यों पर मुकद्दमे
 चले रहे हैं, ठीक इसी तरह उस समय इंग्लैंडमें भी चलाये गये थे ।
 सन् १७९२ और १८०० के बीचमें इंग्लैंडमें अनेक अवधारों तथा
 वक्तव्योंपर रामद्वेष्टके मुकद्दमे चले । उस समयमें जोन्स नोमक एक
 अङ्गरेजने एक थ्रिटीसी पुस्तिका प्रकाशित की । उसमें एक सम्य नगर
 नियासी और एक देहाती अङ्गरेजका संवाद लिखाथा उसमें कहागयाथा
 कि अब पार्लियमेंटमें लोकमतका दिग्दर्शन नहीं होता । इसलिये पार्लिय
 टका सुधार होना चाहिये । सुधारके लिये एक सभा भी स्थापित कीगई
 । किन्तु अधिकारी वर्गको यह पुस्तक राजद्वेष्ट पूर्ण मालूम हुई ।
 इससे लेखकपर मुकद्दमा चलाया गया । मुकद्दमा मुलर नजके समनेपेश
 हुआ । अभियुक्तकी तरफसे मि० एस्किन्ग्वैरकी करते थे । जूरीको

मुकद्दमा समक्षाने वरुं जनने जुरीय कहा कि लेबेकती नीयत ऐजशेहकी
 थी या नहीं थी, अर्थात् उसे लेख रानेब्रोह सूचक है या नहीं है, यह
 निर्णय कनिष्ठ काम मेरा है । अन्तर्गत जुरीने नीयत के विषयमें कोई
 राय न देकर लेबेकती केवल छेड़ प्रकाश करनेका दोषो ठहराया ।
 जनने तब उसे सिद्धान्तता ठण्ड दे दिया । लड़ मैमस्की के मामलेमें
 आरोह हुई । उन्हें निम्नो संजा बहाल रख किन्तु इन दोहूका समाधान
 न हुआ कि नीयत पर विचार करनेवाला कौन है । अतएव मायला
 पॉलीमेंटमें गया । वहाँ लर्ड मैसकः ड और मि० एर्रिकने वस होनेके बाद
 यह स्थिर हुआ कि नीयत के विषयमें राय देनेका अधिकार मनको
 नहीं बल्कि जुरीको प्राप्त है । इसी अनुसार कानून भी बन गया ।
 इसीके अनुसार नीयतता फैसला जुरीपोंक हाथमें फौजा गया है ।
 सर्वल सत्ताओं और निर्व्यक्त छेड़ पक्षमें नय मुलवर्ग पड़ती है तो
 उसमें न्यायकी छेड़ी सीधी रखनेका भार जुरीपर होता है । जन चाहें
 कितनाही उदार हों, वह नियमों और नैतिकोंसे जतना जकड़ों हुआ
 होता है कि वह अपनी रायके अनुसार बहुत कम मानेऊँके फैसले कर
 सकना है । लेकिन जुरी किये प्रकारके नियमों या नैतिकोंसे नहीं
 जकड़ी हुई है । उसे हर हालमें स्वतन्त्र राय देना चाहिये । जैसे
 कानून निर्माण करनेवाली कोल्लिजोंको कानूनों के बदल करनेका
 अधिकार है वैसेही जुरीको भी अधिकार है कि कानूनों को दोषी

मत मालूम हो उसे निकाल दे । विद्यार्थी राजा- और पार्लियमेंटकी एकही राय थी इससे पृथोक्त सन् १७९२ कायदा कानून पास कर दिया गया । अतएव वही कानून जारी है और भारतमें भी सम्बन्ध रखता है । इसी हाईकोर्टमें कानून जुरीके स्थिर करनेकी है, और कौन कौनसे स्थिर करनेकी इसका पैमिछा उसी कानून के अनुसार हो चुका है ।

चीफ प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट यदि मेरे मुकदमे का विचार करते तो मैंता उनके दिलमें आता फैसला करके रखदेते । मजिस्ट्रेट राजद्रोह के मामलेका विचार करे, यह विधि नियम भारतमें देखा जाता है यहाँ के कानूनमें यह बड़ा भारी दोष है । १७९२ का कानून पास हो जानेके बाद सन् १७९६ में लेम्बर और यरी नामके दो एडिटरो पर राजद्रोहका मुकदमा चलाया गया । अपराधों का कहना था कि उस समयकी क्रांति और बेचैनी के समय, ऐसे देख प्रकाशित करन राजद्रोहमें द्राखित है । मुकदमेमें जुरीने कहा कि उन दोनोंने देख प्रकाशित किया यह ठीक है लेकिन हमारी रायमें देख किसी बुरतीमें तसे नहीं लिखे गये, जजने जुरीका यह कहना न माना इससे जुरीने आरोपीको एकदम निर्दोष बताया । फिर सन् १७९६ में जज प्रीक्स नामक अंग्रेज पर ऐसाही अभियोग चलाया गया (See State Trials—pp 508) प्रीक्सने फैसला भी कहा था कि पार्लियमेंट अब किसी कामकी न रही । इससे विद्यार्थीमें एक तीव्र राग-हानि

चाहिये। मुकदमेमें जुरीने कहा कि 'हरे अमेज' को अपनी सम्ति प्रकाश करनेका पूरा अधिकार है इससे उन्होंने आरोपीको बिल्कुल निर्दोष बताया। उनी वर्ष गिल नामक वक्तापर मुकदमा चला। उसने एक जगह कहा था कि यदि कर्मचारीवर्ग 'अनुचित प्रणाली ग्रहण करनेका दृढ करें तो समस्त अमेज रणस्थलमें उतरनेको तैयार है। यह व्यक्ति भी जुरी द्वारा निर्दोष ठहराया गया क्योंकि उसकी नीयत बुरी नहीं थी।

यही इंग्लैण्डके राजद्रोही मुकदमोंका इतिहास है इनमें कई आरोपियोंको दण्ड भी हुआ यह मैं आपसे छियाता नहीं। लेकिन इनमें यह आप देख चुके हैं कि मली बुरी नीयतका निश्चय करना आपहीका काम है। केवल मत और विचारस्वातन्त्र्यहीका यह फल है जो इंग्लैंड आज इतनी उन्नतिपर है। मेरे प्रकाश किये विचार आपको पसन्द हैं या नहीं इसके विचार करनेका यह जगह नहीं है। हर व्यक्तिकी राय सबको पसन्द हो यह सम्भव नहीं किन्तु चेष्टा सचकी यही रहती है कि मेरीही राय मानी जाय। मेरे विचार सरकारको पसन्द नहीं हैं इसीलिये आज मैं इस पित्रेमें खड़ा हूँ। कल आपके विचार यदि सरकारको ना पसन्द हों तो आपमें से भी कोई इसी पित्रेमें खड़ा हो सकता है। इसीसे-याद रखिये कि यदि आज मुझे कुछ विचार स्वातन्त्र्य है तो कल आप और अन्य लोग भी उससे लाभ उठा सकेंगे।

लेकिन आज मैं इस स्वातन्त्र्यमे अधिकतर रूढ़िवादी तो कुछ गति है। यह उचित जायगा। व्यक्तिके विचारका यश, प्रभ नहीं, प्रभ यह है कि हिन्दुस्तानमें विचार स्वातन्त्र्य प्राप्त है कि नहीं। इसका निर्णय आपको करना चाहिये। इंग्लैंडमें यह स्वातन्त्र्य पूर्णरूपसे प्राप्त है, इसी लिये हम भारतवासी आपकी प्रशंसा करते हैं और आप उसने कुछ भी छोड़ा है। किन्तु जब हम भी आपका अनुकरण करते हैं तब आपकी वह बुराई उत्पन्न होता है—क्या ऐसी बात आप संसार पर प्रगट किया चाहते हैं? मुझे आज जेठ भेजें चाहु-कहे पानी में जन्न कैदका दंड दें, मेरा बर्हाते छोड़ आना सम्मय है, लेकिन यह पान रखिये कि इससे-समस्त संसारमें इन बातका उदाहरण न जायगा कि आपने विचारस्वातन्त्र्य नष्ट कर दिया।

सन १८८६-६७ ई. हिन्दु-भारत के मुसलमानों में भी जुलूस यही रायदी थी कि, केवल खेद देखकर रामचंद्र सिद्ध नहीं होता। आप पापकी दशा परभी विचार करना चाहिये और उससे बड़ी बात यह कि राजद्रोह करने की नीयत सिद्ध होना चाहिये। वही हमन साहब आमकल भरी दखमें हैं। प्रयाग विखनेके लिये फरियादी-जिन्ने सबूत पेश करे उन्हेंसे प्रयाग की हत्या देखना चाहिये। १९०२ में अमेरिका में भी एक-ऐतही मुसलमान मारा था। उसमें-मो-पैदी बल निरुद्ध है कि केवल प्रकाश करनेसे कोई अनराध सिद्ध नहीं होता। उस

मुकदमेका मेरे मुकदमेसे बहुत कुछ सम्बन्ध है। लेख प्रसिद्ध करना और सरकारकी निन्दा करना दो अलग बातें हैं। जूरीकोही यह स्थिर करना है कि निन्दा कहीं तक सी जा सकती है और अखबारोंकी स्वतंत्रता कहीं तक है। हमीलिये यह कहा जाता है कि अखबारोंकी स्वातन्त्र्य आपकी मुठ्ठीमें है।

इसके बाद अदालत जलपान करनेको उठाई। जलपानके बाद फिर तिलक महोदयने कहना शुरू किया,—१२४ अमें जो प्रयत्न शब्द है इसके होनेका समूत तथा लेख लिखे जानेके समय देशकी दशाका समूत फरियादीनों अवश्य आपके सामने पेश करना चाहिये। १८९७ में “वेस्टर्ली” के मुकदमेके बाद राजद्रोहकी ध्यास्या जिसप्रकार बदली गई थायद अबभी ऐसाही हो। किन्तु जमतक ने बदलीजाने तथातक आस पानकी दशाका भी ध्यान रखना चाहिये। इसदशाका कोई समूत सरकारने तो पेश किया नहीं। लेकिन जब मैं पेश करने लगा तो मुझे भी रोका गया और मेरे कागजात दाखिल करने पर रफ किया गया। इसके सिवा अन्तमें मेरा मन्त्र देनेका अधिकार भी मांगया है। फरियादी पक्षके इस अनुचित व्यवहारसे मुझे अपना हक जयर्दस्ती छोड़ना पड़ा है। लेख किस्त उद्देशसे लिखा गया था कि प्रसंगगत लेख लिखा गया है वह लेखहीमें बता दिया गया है।

“देशका दुर्दशा” इस लेखमें केवल यह बताया है कि सरकारको किस्त

नीतिक्रम अवलम्बन करना चाहिये । यह भी कहा है कि, 'सरकारें
 एज़बो इण्डियन प्रश्नों की बात न माने बल्कि जो हम कहते हैं उसकी
 ओर लक्ष्य करें । ऐसा उद्देश्य देखते प्रगट होनेपर भी कहा गया है
 कि मैंने राजद्रोह की नीयतसे लेख लिखा, किन्तु इसका कोई संबंध
 नहीं पेश किया गया । छोकमत क्या है और कैसे वह उसे निवृत्त
 हो सकता है कि जिससे सब बातें सरकारको मालूम हों यही हम
 अखबार लेखकोंका कर्तव्य है । वम गोलेकी घटना के बाद यदि
 उसकी चर्चा न करते तो और क्या करते ? यह ठीक है कि ऐसे
 समय अखबार वालोंका मार्ग धोकेसे भरा रहता है लेकिन जिसे अपने
 कर्तव्यका ध्यान है वह उस समयभी उसके करनेसे न धुकेगा ।
 हां जिसे दूर-दगता हो वह अलमल अखबार लिखना छोड़कर अलग-
 भैठ जाय, उसके लिये यही अच्छा है ।

- बादविवादसे ही सत्यवात प्रगट होती है । वम घटने के बाद
 जो विवाद अखबारों में शुरू हुआ तो हमारा भी कर्तव्य हुआ कि
 विवादमें शारीक होकर कहस करें और उत्तर दें । यह विवाद क्या था,
 किसने आरम्भ किया और किसने किसका क्या उत्तर दिया इन सब बातों
 पर नज़रको विचार करना चाहिये । देशमें जब कोई असाधारण बात
 होती है तो उसके लिये अलग अलग दखलतरह सरहके विविध कारमें
 लगते हैं । किन्तु पक्षों के निमित्त नीयतसे क्या बात कही गई बात नज़रों

बिना सबके लेख पूरे नहीं विरचित हो सकती। मुजफ्फरपुर में — बमकाट
 होसेही देशमें सभी जगह इसकी चर्चा होने लगी। एंग्लो-इंडियन
 अखबारोंने कहा कि बम हिन्दुस्तानियोंके आन्दोलनसे उत्पन्न हुआ।
 “पायोनियर” ने इसी विषयको लेकर Cult of the Bomb (बमवालोंका
 सम्प्रदाय) शीर्षक लेख लिखा। कैम्पबेल ने भी “बमगोलिका रहस्य”
 शीर्षक लेख प्रकाशित किया। घटना के सम्बन्धमें मन साधारणका क्या
 मत है यह प्रगट करना हमरा कर्तव्य है। यह कर्तव्य चाहे मर्यकार हो तो
 भी इसका करना मेरे लिये आवश्यक था। “देशका दुर्दैव” इसी शीर्षकसे
 प्रगट है। कि मेरे लेखमें बम घटनाओंको देगके लिये हानिकारक बताया
 गया है। बम क्या चला इसीकी मीमांसा करना मेरे लेखका खास
 उद्देश्य है। हिन्दुस्तानियोंके आन्दोलनसे बम उत्पन्न हुआ यह एंग्लो-
 इंडियनोंका कहना है त्रिआयती “टाइम्स” यहांके “पायोनियर”
 “इंक्विजैमैन” और “टाइम्स आफ इंडिया” ने कहा है कि कांग्रेस
 और कांग्रेसवालोंकी बर्तुल्लत बम भारतमें आया। नर्म गर्मदलके नेताओं
 तथा कौन्सिलोंके मेम्बरों आदि मन्त्रको इन पत्रोंने इसका जिम्मेदार
 बताया है। क्या इन बातोंका मुझे खण्डन नहीं करना चाहिये था ?
 चाहे मेरा मत आपको पसन्द न हो, पर थोड़ी देरके लिये अपनेको
 मेरी स्थितिमें समझकर विचारिये कि क्या आप इन बातोंका उत्तर

देना अपना कर्त्तव्य न समझते । इस महस में मैंने कोई नई बात नहीं छेड़ी जो वार्ता उन अधिकारों ने पेचीदगी से छिगाकर प्रगट की । उन्होंने वास्तविक अर्थ मैंने सबको सामने प्रगट कर दिया । राजद्रोहकी चर्चा करने वक्त यह अधिकारी कौन अपनेको नहीं गिनते हमें ही गिननेके लिये तैयार रहते हैं । ऐसी सूरतमें मुझे अधिकारी वर्गका जिज्ञासु भी उत्तर था । हमारा कहना यह है कि हम घटना अधिकारी वर्गके आपसे ही हुई इसको मिट्ट कर देनेका मोक्ष हमारे ही सिर है । यह सिवाध अभीष्टक समाप्त नहीं हुआ बरज कुछ दिनों तक घटता ही रहेगा, इसके सिवा एङ्ग्लो इण्डियन पत्रोंने ओ आरोप हमपर किये उनके मजबूत करनेका चोख भी हमारे ही सिर पड़ा ।

आगे सिलेक महोदयन “ देशका दुर्दैव उग्र लेखन उसके ओपजी अनुवादकी पुत्रोक्त मूलोंपर बहसनी कहा मेरे असाध्य मराठी दान्तेका तोड़ मोड़कर अर्थ किया है मराठीके लेखोंकी एक एक कापी जूरको दी गई और कहा गया कि जहाँ इनमें त्रुटि बनाने गये हैं अनुवादकी सुलोंपर विचार पड़िये जर्जसहसने भी कहा कि सिलेक महोदयको अधिकार है कि सर्वमेकी भूल त्रुटिों भलीमाली समझावे । अन्तमें सिलेक महोदयने कहा कि फल किंर मैं इन भुंठोंको लेकर बहस करूँगा । इसके बाद अखिल लठ गई ।

ता० १७ जुलाई शुक्रवार सन् १९९८

पञ्चम दिवस ।

आज अदायत बैठनेपर श्रीयुक्त तिलकजी, बहस आगे बढ़ी—
 रंग । कुछ मैं कह चुका हूँ कि वर्तमान रामनीतिक धर्मा ऐसे
 हमें चल रही थी कि मेरा ना कुछ न कुछ कहना परतय हो गर
 एलेइडियन अखबारोंने इस सम्बन्धमें जो कुछ लिखाया उसीका उत्तर
 नेकें लिये मेरे रेख लिख गये । इस विवादमें अप दोनों पक्षोंके
 दस्तयकी ओर दृष्टि काजिय । इन देखोंका असर मराठी बोदने वालों
 र कैसा पड़ेगा यहभी अपको देखना चाहिये । एलेइडियन पत्रोंने
 जो कुछ लिखा था वह हमारे समाज और देशके हित था । जैसा
 भाषामें उहोंने वह लब्ध लिखे ओर मसे कटोर शब्द वह व्यवहारमें
 छात्र दर के र मने मरे र का भाषा लिखुट पानी भी है । उहोंने
 गाजा गलेम काम लिया मने मुख्यमियतसे उत्तर दिया । उन्होंने
 औष र्म क के हमरी और हमारे समाज की निन्दाकी है मैं उनके देख
 जुरीको पद पर सुन ऊता । ऐसे लेनाका उत्तर देना मेरा क्या सम्मत
 हि हुता की अवधारोंका कार्य था । इन प्रकारकी बहसमें यदि यह
 कहा जय कि चर्चा नहिमे परपर द्वेषभाव फैलाया गया तो यह कहना
 मूर्ख है । एलेइडियन और हिन्दुतानी दो पक्ष थे इन्होंने वादाविवाद

चलता था।" श्री तो एंग्लोइण्डियन लोगोंमें से भी बड़े आदमी का प्रसक्त भी पड़ जाती हैं ! ऐसी बातों से कोई देव के अंग्रेजी नीयत नहीं थी बल्कि दो विरोधी हिस्सोंकी छड़ई थी ।

—आगे कहा—मेरे "दाहरा इशारा" भी बाँटे लेखमें इन्हीं दोनों पक्षोंकी ओर इशारा किया गया है । सभीके अखबार पढ़कर कुछ न कुछ रस्य देना पड़ती है । मेरे "केसरी" दफ्तरमें हर सप्ताह कोई दो ढाई सौ समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ आती हैं । इन सबपर समयानुसार हमें कुछ न कुछ रस्य देना पड़ती है । एंग्लोइण्डियन पत्र भी आते हैं उनका यात्रोंका उत्तर देनेमें हमें भी कुछ कड़ी भाषा व्यवहारमें लाना पड़ती है । मेरे विचार चाहे सही हों या नहीं लेकिन यह जरूर है कि ऐसी स्वतन्त्रता उन अखबारोंको आने विचार प्रगट करनेकी है वैसी ही मुझे भी है । अपने अपने विचारोंके अनुसार वर्तमान वैचरनीको दूर करनेका कोई कुछ उपाय बताता था, कोई कुछ ! अफ्रीकाई वर्गके हिमायती एक उपाय बताते थे, अपनी समझके अनुसार हम दूसरे ब्रह्माने थे, मेरे स्थानपर आप होने तो ऐसाही करते । जब तक हमें अखबार लिखनेको स्वतन्त्रता है तबतक अपने विचार प्रगट किये बिना मैं न रहूँगा हाँ यह स्वातन्त्र्य चीन लिया जाय तो और बात है ।

— मुम्बईपुरकी बम घटनाके बाद एक सप्ताह तक मैंने कुछ न

बादशाही याकूती

राजवंशी तथा भनिकोंके लिये

चाहे किसी कारणसे यलहानि हुई हो, उसको नये शिरसे लाती है। पुरुषार्थको स्थिर रखती है। धातुविकारसे होनेवाले सभी रोगोंको नाश करती है। संसारके सुखभोगके लिये देशी तथा यूनानी दवाओंमें सर्वोत्तम औषधकी भावश्यकता हो तो यही "भनक बिलास याकूती" है इस दवामें "यथानाम तथा गुण" है। राज रजवाड़ा तथा श्रीमन्तोमें इसका अधिक प्रचार है। यथार्थ युवावस्थाको रानेवाली तथा निर्बलोंको पूर्ण युवावस्थाका बल देनेवाली यह औषध प्रत्येक मनुष्य ले यह हमारी सिकारिश है। इसके सेवनमें किसी पदार्थके परहेजकी भावश्यकता नहीं है। बल दुस्त्रिकारक अनेक औषधोंके सेवनसे निराश हुए मनुष्योंको चाहिये कि एक बार रजवाड़ोंमें सेवन की जाती इस 'याकूती' का सेवन करें इससे स्वयं उनको अनुभव होजायगा कि देशी और यूनानी दवाओंकी याकूतीमें पुरुषार्थ बढ़ानेकी कैसी अपूर्व शक्ति है।

४० पोलियोंकी १ डिब्बियाका दाम रुपये १०)

डॉक्टर कालीदास मोतीराम, राजकोट काठीयावाड

लिखा । इसी धीमे कई प्रकारके मूर्तोंके, अखबार, मेरी मेजपर रहे
 गये । पायोनियर, 'सिबिल' मिलिट्री गैजट, 'वीइंस' आर इण्डिया,
 इंग्लिशमैन स्टेट्समैन, इन्प्रायर आदि एन्ग्लो इण्डियन पत्रोंका मत एक
 प्रकारका था, और बंगाली, पंजाबी, पत्रिका, हिन्दू, ट्रिब्यून आदि देशी
 अंग्रेजी पत्रोंका दूसरे प्रकार था । इसी बीचमें कुछ विद्यार्थी अखबार
 भी मिले । इनके मतभी विभिन्न थे । इन सबके, उद्योग, व्यापार, खेती
 और वर्तमान राजनीय स्थितियों और, यद्यपि उनके अपने स्वतन्त्र
 प्रकाश किया था । यहां लिखक महोदय तो इन सब अखबारों तथा
 लेखों को समूहमें पेश किया कुल ७०० पत्रोंमें से थे इनमें से कई
 जूरियोंको पढ़कर सुनने लगे पहले टुकड़े को पायोनियरका "Call
 of the Bomb" अर्थात् बमसभ्यता वाला लेख (पृष्ठ) देखिये पायो-
 नियरके इस लेखमें हमारी फीनिक्सके मेम्बर्स को प्रोत्साहित और अन्य
 प्रतिष्ठित देशवासियों तथा बम फेंकनेवालोंको एक ही पैलीके चले
 बताया गया है । यह भी आगे कहा है और अधिकारीवर्गको सलाह
 दी है कि यदि एक गोरेको बाढ़ भी बाँका हो तो उसको, जिसे १०
 हिन्दुस्तानियोंको गोली मार देना चाहिये । मेरा नाम भी उसमें सिर्फ
 दिया गया है । ऐसी सूरतमें आप क्या समझते हैं कि मैं उनका
 उत्तर न देता हूँ नही, मेरा कर्तव्य ही उत्तर देनेका था और वही दिया ।
 अब कलकत्तेके "एशियन" गोरे अखबारकी तरफ सुनिये । उसने कहा

या कि बगालमें अब खूब कड़ाई होना चाहिये । उसने किंग्सफर्द साहबको यह भी सलाह दी थी कि हर समय अपने पास भरी हुई पिस्तौल रखा करो, जहाँ कोई 'काळा आदमी' बगलेके आसपास दिखाई दे फौरन बिना पूछे उसे गोली मार दो । ऐसा ही शैतानी उपदेश इस गोर फज़ने दिया था । "इम्पायर" ने भी कुछ ऐसीही बातें लिखी थीं बिलम्बतसे एक अफ़्रीजने यहाँके एक एंग्लोइंडियन पत्रके सम्पादकको निजकी चिट्ठीमें लिखा था कि हिन्दुस्थानी नेताओंको नगरके चौकमें खड़ाकर भीगपोंपे कोड़े लगाना चाहिये या छातूसे पिटवाना चाहिये तभी उन का अभिमान दूर होगा और आन्दोलन भी दब जयगा ।

(तिब्बत महाराजने इसके बाद पायेनि र स्टेट्समैन आदि के और कई लेख सुनाये) एडवोकेट आफ इंडियाके एक अंकका हवाला देकर कहा कि उसने सरकारको खून अत्याचार, फरतेकी सलाह दी थी । कहा था कि, कड़ाई सरकारने नहीं की इसीसे ऐसे अत्याचार होते हैं । क्या कोई कह सकता है कि यह बातें बुद्ध बुद्धिसे नहीं लिखी गई थीं ? क्या इन गोर, अश्वत्थारोंकी भाषा, कठोर, और द्वेष फैलानेवाली तथा भारतवासियोंके हृदयमें अग्नि भड़कानेवाली नहीं है ? ऐसे नहरीले लेखोंको पढ़वार कुछ गुस्सेसे यदि हमने भी उनका उत्तर दिया तो क्या यह राजद्रोह कहा जायगा ? (ब्रह्माजी, मार्डन रिप्यू, इन्दुप्रकाश, ज्ञानप्रकाश, गुजराती, हिन्दू और इण्डियन स्पेक्टेटर, अखबारोंके

कई लेख पेज करके कहा—) इस महसूस इन देशी अखबारों में जो प्रकाश किया है वही मेरा मत भी है। 'गोखले' महोदय 'कौन्सिल' एक स्पीच में भी ऐसीही बातें कह चुके हैं। १९०६ सालवाली कांग्रेस में डॉक्टर रासबिहारी घोष भी कह चुके हैं कि यदि सरकार भारतवासियोंकी अभिलाषायें पूरी होनेका योग्य उपाय न करेगी तो भारत भी दूसरा आयरलैण्ड हो जायगा। स्वयं पायोनियर भी १९०६ में उसमें बम चलनेके विषयमें लिख चुका है कि, अत्याचार और कड़ाईसे बम कभी बन्द नहीं हो सकता।

अगे कहा—मोर्ले साहब भी सिविल सर्विस भोजके समय खिलायतमें कह चुके हैं कि, केवल कड़ाई करनेसेही आन्दोलन या बेचैनी नहीं दब सकती। हिन्दुस्तानियोंके हृदयमें जो यह महत्वाकांक्षा उत्पन्न हुई है यह अंगरेजी शिक्षाकाही फल है। यदि उस आकांक्षाको हमने पूरा न किया अथवा उसे दबाना चाह तो उनमें असन्तोष सहजही फैल सकता है। इस असन्तोष फैलानेके दोषी हिन्दुस्तानी नहीं बल्कि अंगरेज समझे जायेंगे। इतने बड़े राज्याधिकारीमें जो बात कही है वही मैंने भी कही। क्या इसके लिये मैंही राजद्रोही माना जाऊंगा ?

और कई लेख और वक्तूतायें उद्धृत करके लिख महोदयने कहा कि इन सबको पढ़कर सुनानेसे मेरा मतलब यह है कि लेख लिखनेके समय मेरे विचारोंकी स्थिति क्या थी। एंग्लो-इण्डियन पत्रोंमें किसी

विषम और फटार बातें कह, बाली हैं यदि आप लोगों को ऐसी बातें
कही जातीं तो 'केसरी' की भांति मुलायमियत से आप कभी
जवान न देख सकते। बमघटना के बाद पहले एंग्लोइंडियन पत्रोंने ही
बहस छेदी। उन्होंने हिन्दू समाज पर क्या क्या आरोप नहीं किये,
सरकारको कैसे कैसे जुल्म करनेकी सलाहें नहीं दी, ऐसी सूरतमें हमें
उनको उत्तर देनेका अधिकार न हो यह कहाँ का न्याय है? ऐसी बात
सुनकर कोई चुप बैठारहे यह मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध है। यदि हम
चुप रहते तो अपने कर्तव्यसे विमुख होने के दोषी कहलते।

देशमें दो दल है एंग्लो इंडियन अखबार तथा अधिकारी वर्ग, और देशी
अखबार, सब अपना अपना मत प्रगट करते हैं और उसको सब
समझते हैं-। हमलोग अपने शासनके काममें बराबर कुछ माग चाहते
हैं और इसी तरह धीरे धीरे सेल्फ गवर्नमेंट बर्थात् स्वराज्य प्राप्त करना
चाहते हैं। यह स्वाभाविक बात है। अधिकारी वर्ग यह कहते हैं कि
यदि उनकी मीठ भारतकी ओर फिरेगी, तो भारत एकदम हूबहू बेगा
ऐसी ही बातोंके खंडनमंढनमें दोनों पक्ष सदा लेख लिखते आये हैं।
बहस आजकी तबों केई ३० वर्षोंकी पुरानी है। हमारी तरफ कुछ
अंगरेज हैं, एंग्लो इंडियनोंकी ओर कुछ भारतीय हैं। इससे जातिगत
भेदका यह नहीं कहा जा सकता। मैंने भी अपने लेखोंमें कोई नई बात
नहीं निकाली सही पुरानी बातें जो ३० वर्षोंसे कह रहे हैं उन लेखोंमें

(१) अविगे वौर रसालनमें अरु कोकिल
 डारिन में विहरेंगे । एक दिना ननु एक दिना
 यहि भारतके दिन फेरि फिरेंगे ॥

भारतका भी भाग्योदय होगा ।

व्यापार ही एक ऐसा उत्तम उपाय है जिससे आदमी धनवा-
 ना होकर अपने जीवन का मार्ग सुगम कर सकता है । वड़े दुः-
 खकी बात है कि हमारे देशमें ऐसा कोई समाचार पत्र नहीं है
 जो व्यापारियोंको उनके व्यापारोन्नतिमें सहायता दे, यद्यपि यूरोप
 आदि देशोंमें ऐसे बहुत से समाचारपत्र निकलते हैं । इस लिये
 हिन्दी भाषामें प्रतिसाह हमने एक ऐसा समाचारपत्र निकालनेका
 विचार किया है । इसमें यूरोप अमरीका आदि देशों से निकलने
 वाले व्यापार सम्बन्धी समाचार पत्रों कि० आधार पर लेख लिखे
 जायेंगे । रुई—गुला—चांदी—सोना—हुंदा—नेट अफाम—मिल व
 बैंक के हिस्से सूत—कर्पस—किराना—आदि व्यापारियोंको
 इन चीजों की पैदावार [जो यहाँ और दूसरे देशों में होती है]
 तथा भाव आदि मुख्य मुख्य बातें लिखी जायेंगी । मि० एस
 आर० एल्हेन्सकी सम्मति से (जिनको व्यापारिक धर्म में अच्छा
 अनुभव है) अच्छे २ पोशिता तरीका व्यापार में उन्नति करने के

भी कही गई हैं। (सरकारी धकीछने कहा 'केसरी' के हर अंक में ऐसीही बातें छपती हैं) तिरुक् महोदयने कहा—हाँ ठीक है, पुरानी बातोंकाही हर फेर नये प्रसंगोंमें होता है ऐसी पुरानी बातोंका पाठकोंपर नया असर क्या पड़ सकता है।

इसके बाद अदालत उस दिन उठ गई। मुकदमा 'सोमवार २० जुलाई तक मुलतवी हो गया।

सोमवार' तो० २० जुलाई सन १९०८ ई०

छठवां दिवस

इस सुप्रसिद्ध और चर्चात्मक मुकदमेका आरम्भ आज फिर साढ़े ग्यारह बजे हुआ। इस मुकदमेने गगनभरमें एक प्रकारके नवीन विचारों का प्रसार कर दिया है। हाई कोर्ट सेशनमें पैर रखनेकी भी आज जगह नहीं थी यकील, बैरिस्टर तथा दूसरे प्रतिष्ठित सम्य पुरुष और रिपोर्टर सबकी बड़ी भीड़ थी। बहुत सी अङ्गरेज और पारसी रमणियाँ भी कोर्टमें उपस्थित थीं। करीब ९ बजेमेही लोगोंके झुंडके झुंड हाईकोर्टकी तरफ जाते हुए नजर आते थे। पुलिसका बंदोबस्त रोमकी तरह आज भी था। साढ़े ग्यारहमें जय पांच मिनट थे तब, तिलक, महोदय कोर्टमें उपस्थित हुए तदनन्तर जुरी हाजिर हुई और सबके बाद जन साहब आये। ठीक इसी समय श्री० तिलकने अपने भाषणको फिरसे प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा—फलमेंने अपने विचार आपके सम्मुख प्रगट

किये ही हैं अधिकारी वर्गकी तरफ़दारी करनेवाले लोग सरकारको इशारा करते हैं कि देशमें लस्करी कायना अमलमें लाकर बढ़ाई जाए असन्तोषको दबाही देना उचित है । सर्वसधारण लोकमत प्रवर्तन मण्डलकी ऐसी सूचना है कि लोगोंको कुछ अधिक हक दिये जाए यह बढ़ता हुआ असन्तोष मिटना असम्भव है । यह लोकमत कुछ आमका नहीं बल्कि यह मत सन् १८९० ई० से देशमें फैल रहा है अर्थात् यह पुरातन मत है । इसके बाद तिलकने मेजर इवान्स बेल्लकी एङ्ग्लो इण्डियन नामक पुस्तकमेंसे एक अवतरण पढ़कर सुनाया । इसका अभिप्राय यह था कि “हम लोग हिन्दुस्तानके दृष्टी नहीं हैं परन्तु जीतनेवाले हैं । हम लोग हिन्दुस्तानियोंका हित करनेके लिये व्यवस्थापक होकर यहाँ आये हैं ऐसा कहना मुख्यतः काम है । अगर हमको हिन्दुस्तान अपने सबमें बहुत दिन रखना हो तो यहाँके लोगोंको अधिक हक देकर उनको खुश रखनेके सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं ” । मेजर इवान्स बेल्लने इस पुस्तकको ४०-९० वर्ष पूर्व लिखा है । । ।

- जितने छेखोंपरसे मुझपर मुकद्दमा किया गया है उसमें यह नहीं दिखाया गया कि अमुक अमुक वाक्य शान्द्रोही हैं इस लिये मुझे अपने सब छेख आपको समझना होंगे । पर तब्यदरते जो सारांश विचार्यतमें भेजा है उस सारांशमेंके शक्यही विशेषतः दोषों-समझे गये हैं, ऐसी

कल्पना कर लेनेमें कुछ हरज नहीं तथापि मैं सब देख आपकी समझ देता हूँ

प्रत्येक जूरीके हाथमें छया हुआ भाषांतर था श्री० तिलक भी उसी छये हुए भाषांतर परसे अपने लेखका स्पष्टीकरण करके जूरीको समझा रहे थे, आपने कहा,—भाषांतरकी ९ पक्षीमें *Obstinaoy* और *Perversity* शब्द हैं उसमेंसे *Perversity* शब्द गलत है उस शब्दके बजाय मैंने *Stubbornness* शब्दका उपयोग किया है । “ और ऐसा करनेसे यद्यपि बदाली नौजवानोंका गुतदल खड़ी गुत मण्डलीकी तरह खूनही करनेके लिये कर्षो न उत्पन्न हुआ हो तथापि इनका जन्म स्वार्थ साधनेके लिये नहीं हुआ है किन्तु बलवान अधिकारियोंके अनियंत्रित सत्ताको अमलमें लानेसे लोगोंमें एक प्रकारका श्रेव उत्पन्न होगया और उसीका फल यह गुत मण्डली है । ”

केसरीके १२ वीं मईके लेखमेंसे उपरोक्त वाक्य पढ़कर श्री० तिलक कहने लगे इस वाक्यमें “ खून ” शब्दकी अपेक्षा *Assassination* शब्द भाषांतरमें अच्छा होगा, परन्तु “ राष्ट्रीय वध ” शब्दोंसे “ वध ” शब्दका भाषांतर “ असातिनेशन ” शब्दकी बजाय *killing* शब्द भाषांतर करनेके समय ध्यानमें लाना चाहिये, बण्डक भाषांतर “ म्युटिनी ” और *Revolt* को जगह *Disturbance* शब्द उपयोगमें लाना चाहिये ।

सन् १९०६ ई० में पायोनियरने कहा है कि जुलुमने इसमें
 धर्मके अत्याचार उत्पन्न किये पायोनियरका किया हुआ तर्क उसे इस
 समय न सुझा १९०७ में वह कहता है कि आन्दोलनवादिनेही
 वम उत्पन्न किये, यह क्यों ? पायोनियरने ऐ वी भईकी सख्यमें
 "वम सम्प्रदाय" पर एक लेख लिखा है उसमें आनरेबल समा
 सदसे लेकर वम फँकनेवाले तकफा नाम इस सम्प्रदायमें शामिल कर
 दिया है इस कारण पायोनियरके उत्तरके तार पर १२ मईके अंकमें
 लेख लिखा है।

“मनुष्यमात्रकी सहनशीलताकी भी कुछ हद है” यह बात
 अनियंत्रित सत्ता चलनेवाले अधिकारियोंके ध्यानमें रखने योग्य है।
 इसे वाक्यकी पदोंकर शिल्प कहने उगे कि हिन्दुस्तानके लोग
 विशेषतः बङ्गाली लोग बहुतही सहनशील, निरुपद्रवी और शीत स्वभा
 वक हैं यह सब मानते हैं छान्द मेकोलेने तो उनको बिल्कुलही
 नम्रदर्द कहा है ऐसे नम्रदर्द लोगतक चि वात अ
 रियोंकी नजरसे छानेके लिये मैंने उपरोक्त कि
 लोगतक अधिकारियोंके हुनमकी तामील कि
 सहनशीलताकी मर्यादा माफगी गद्य
 दर्शाई है “पण्डित बड़े
 हैं परन्तु हैं।

लिखे जायेंगे अर्थात् इसमें व्यापारियों के वास्ते ऐसी सलाहें लिखी जायेंगी जिनके अनुसार कार्य करनेसे हम दावेके साथ कह सकते हैं कि—हमारा देश अन्य-सब देशों से व्यापारमें बढ़ आयागा ।

(२) हमारे इस अभागो देशमें बहुतरे आदमी बिना उद्योग मारे रह फिरे हैं जिनके लाभके लिये भी हम कर्म २ इसमें ऐसी सलाह लिखते रहेंगे कि जिसके काममें लानेसे वह अपना ही पालन नहीं बल्कि दूसरोंको भी फायदा पहुंचा सकते ।

(३) अखबारों के प्रेमियोंकेलिये भी यह एक नये ढंगका अवधार होगा (भारत में अतक कोई ऐसा अखबार नहीं है, इसमें चुनी हुई नई २ खबरें भारत तथा अन्य देशोंकी होंगी ।

(४) इसका आग्रिम वार्षिक मूल्य २) होगा परंतु उन ५०० ग्राहकोंसे जो सबसे पहले अपना नाम हमारे रजिष्ट्र में दर्ज करा देंगे प्रथम वर्ष के लिये सिर्फ २॥) रक्याही लिया जायेगा और १ प्रति लाला लाजपतरायका जीवनचरित्रकी [जो हिंदीमें तयार होरही है] उपहारमें दीजायेगा ।

अखबार सम्पत्ती छिठी पत्री तथा उपर्युक्त निम्न लिखित पत्रों से भेजना चाहिये ।

पता—श्रीरामकम्पनी

२८० कालकादेवी पोस्ट यम्बा

सत्यं नास्ति भयं क्वचित् ।

अवला हितकारक चूर्ण—

स्त्रियोंके लिये हमने बड़े परिश्रमसे बनाया है—इसके सेवनसे सर्व प्रकारके प्रदर रोग व्यापन गर्भमें क्षान्ति पट्टिखाने वाले सम्पूर्ण दोष नष्ट होजाते हैं औषधि क्या है अमृत है दाम १५ दिनकी मासिका (१) ४० डाकब्यय अलग ।

धातु वर्धक—पौष्टिक क्षीर्य स्तम्भक—रक्त शोधक—मनोत्साह—
कांति बुद्धि वर्धक कस्तूरी व अनेक घनस्पती मिश्रित—

अद्भुत चूर्ण ।

इसके सेवनसे ७ दिनमें रग बदलता है मगाकर मज्जाइये वाम ही, क्या है सिर्फ १॥) सो भी १५ खुराकका इसपर भी महमूल माफ ।

मकरध्वज, चूर्ण ।

१ रस्ती पानमें डालकर जामेसे मुसकीं दुर्गंध जाँका मिचलाँका खाँसी अजीर्ण अक्षी व स्वप्न दोष दीर्य्य दोष निर्मलता सर्व प्रकारक दोष दूर होजाते हैं हमने बहुत परिश्रमसे इस चूर्ण को रसिक जनों के हितार्थ बनाया है ॥

एक तोले का दाम सिर्फ ॥॥) श्री जी डी कव्यम सुवा

पता—रामदेव तिवारी ९ चर्चोद फोर्ट बम्बई

“ अधिकार मदसे उन्मत्त बने हुए आधिकारियोंके सिवाय ”
 इत्यादि वाक्यमें भाषान्तरमें *Inebriated by insolence* यह शब्द
 सरकारी भाषांतरमें डाले गये हैं इसमें *Insolence* शब्द अनुवाद-
 करने अपने गिरहसे डाला है । *Insolence* शब्दके लिये मूलमें
 कोई शब्दही नहीं है । इसके सिवाय “ अधिकारमदसे उन्मत्त ”
 यह शब्द मेरे नहीं हैं किन्तु यह बर्कके हैं । सर डब्ल्यु वेबरबर्नने
 भी सन् १८८४ की १९ मईके बम्बई गजटमें अपने एक लेखमें
 यही लिखा है उपरोक्त शब्दोंका भाषांतर *Blinded by the intoxication of authority* ऐसा होना चाहिये ।

छेमाँके शांत होनेपर भी पायोनिपरने आन्दोलनवालोंको असंतोषका
 उत्पादक कहा है, इस कारण उसके मतका मुझे खण्डन करना अवश्यही
 था । मि० गोखले रासविहारी घोष वगैरा गृहस्थोंके विचार कई भेगह
 इसी प्रकारके प्रसिद्ध हुए हैं ।

“ एक देशके दूसरे देशपर राज्य करनेका हेतु केवल एक स्वार्थ होता-
 है ” मेरे इस वाक्यके समान कई एक अङ्गरेजोंने भी अपने लेख और स्पी-
 चोंमें लिखे और कहे हैं । श्रीयुक्त सिङ्गने इसके उदाहरणार्थ मिस्टर
 एस एस थोरबर्न पंजाबके मूलपूर्व माली कमिश्नरका एक वाक्य पढ़
 सुनाया जिसका आशय यह है कि “ हिन्दुस्तानपर हम लोग स्वार्थके
 लिये राज्य करते हैं ” । परराष्ट्रोंके साथ लिखापट्टी करनेके समय

सत्यं नास्ति भयंकचित् ।

अवला हितकारक चूर्ण—

स्त्रियोंके लिये हमने यद्ये परिश्रमसे बनाया है—इसके सेवनसे सर्घ्य प्रकारके प्रदर रोग पंथ्यापन गर्भमें हानि पहुंचाने वाले सम्पूर्ण दोष नष्ट होजाते हैं औषधि क्या है अमृत है दाम १५दिनकी मात्रा का १) रु० शतकप्यय मलय ।

धातु वर्धक—पौष्टिक शीर्य रतम्मक—रक्तशोधक—मनोरसाह कांति युधि वर्धक कस्तूरी घ अनेक वनस्पती मिश्रित—

अद्भुत चूर्ण ।

इसके सेवनसे ७ दिनमें रग बदलता है मगोकर अजमाइये दाम ही क्या है सिर्फ १॥) सो भी १५ छुरकका इमपर भी सहमूल माफ ।

मकरध्वज चूर्ण ।

१ रसी पानमें डालकर खानेस मुखकी दुर्गंध औका मिचेलाना खांसी अजीर्ण अक्षि-स्वप्न दोष पीय्य दोष निर्यलता सर्घ्य प्रकारके दोषदूर होजाते हैं हमने बहुत परिश्रमसे इस चूर्ण के रसिक जनों के हितार्थ बनाया है ॥

एक तोले का दाम (सिर्फ ॥॥) मोगी शिकप्यय सुवा पता—रामदेय तियारा, ९, चर्चगेट, फोर्ट प्रम्पट

“ अधिकार मदसे उन्मत्त बने हुए अधिकारियोंके सिवाय ”
 इत्यादि वाक्यमें भाषान्तरमें Inebriated by insolence यह शब्द
 सरकारी भाषांतरमें डाले गये हैं इसमें Insolence शब्द अनुवाद-
 करने अपने गिरहसे बाधा है । Insolence शब्दके लिये मूलमें
 कोई शब्दही नहीं है । इसके सिवाय “ अधिकारमदसे उन्मत्त ”
 यह शब्द भरे नहीं हैं किन्तु यह बर्कके हैं । सर डब्ल्यु वेबरबर्नने
 भी सन् १८८४ की १९ मईके बम्बई गजटमें अपने एक लेखमें
 यही लिखा है उपरोक्त शब्दोंका भाषांतर Blinded by the into-
 xication of authority ऐसा होना चाहिये ।

लोगोंके शांत होनेपर भी पार्लियामेन्टने आन्दोलनवालोंको अस्तोपका
 उत्पादक कहा है, इस कारण उसके मतका मुझे खण्डन करना अवश्यही
 था । मि० गोखले रासबिहारी घोष वगैरा गृहस्थोंके विचार कई जगह
 इसी प्रकारके प्रसिद्ध हुए हैं ।

“ एक देशके दूसरे देशपर राज्य करनेका हेतु केवल एक स्वार्थ होता-
 है ” भरे इस वाक्यके समान कई एक अंग्लेजोंने भी अपने लेख और स्पी-
 चोंमें लिखे और कहे हैं । धीरुक्त सिल्वेने इसके उदाहरणार्थ मिस्टर
 एस एस थोरवर्न पंजाबके भूतपूर्व माजी कमिश्नरका एक वाक्य पढ़
 सुनाया जिसका आशय यह है कि “ हिन्दुस्तानपर हम लोग स्वार्थके
 लिये राज्य करते हैं । परराष्ट्रोंके साथ लिखापट्टी करनेके समय

हिन्दुस्तान देशको अपनी इच्छानुसार कुट बालके, समान प्रतिपाते हैं। यह बात छिपा नहीं सकते। इसी प्रकारके मेरे वक्तव्य हैं।

हिन्दुस्तानकी राज्यप्रणालीके नियममें तीन प्रकारके गुण हैं।

(१) केवल हिन्दुस्तानियोंके लिये हिन्दुस्तानका राज्य व्यवस्था जाये।

(२) इंग्लैण्डके बितके लिये हिन्दुस्तानमेंसे चाहे जिस प्रकारकी सम्पत्ति पैदा की जाये।

(३) अङ्गरेजोंका स्वार्थबुद्धि होने हुए भी जवाबदारी बने बहातक यह स्वार्थ कुछ सुधरा हुआ होना चाहिये।

इन तीनों मतोंमेंसे गुप्त तत्सरा मत प्रसिद्ध है। मैंने अपने लेखमें यही कहा है कि हमारे हाथमें अधिक सत्ता होना चाहिये निर्यातके बैरिस्टर भी मेरे साथे यही दोन मढते हैं मैंने खुद, वादशाही कमिशन के आगे अपना इसी प्रकारसे मत प्रतिपादन किया है कि लोगोंको राज्यमें अधिक अधिकार होना चाहिये और यही मैंने लिखा है मेरा यहाँका कथन तो राजद्रोही हुआ नहीं परन्तु खूब ठहराया गया। यह क्या कम आश्चर्यकी बात है।

‘अधिकारियोंकी राज्यप्रणाली सदेव होनेसे लोगोंको असह्य बुझ उठने पड़े जिसका परिणाम यह हुआ कि बम सफल आयाचार होने लगे। उपरोक्त वाक्य केवल कहनेसे राजद्रोह नहीं हो सकता। पहले

पहले कर्मचारीवर्गसे देशका हित हुआ होगा परंतु अब उस पद्धतीसे लोगोंको अत्यन्त दुःख उठाना पड़ता है। लोगोंकी अब यह इच्छा है कि इस पद्धतीमें फेर बदलकर दिया जाये। यह बादबिनाद आज ३०-४० वर्षसे चर रहा है 'पाश्चिमात्य शिक्षणके प्रसादके कारण देशमें जो आज दशा है वह आगे कायम रहना असम्भव है" इसके सप्रमाण कारण देकर मैंने उपरोक्त बात अपने लेखमें सिद्ध की है और यही बात मैं यहां भी स्पष्ट तौरसे कहता हूँ। जो यह महत्वाकांक्षा राजद्रोही हो और ऐसी महत्वाकांक्षा मनमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य दोषी होता हो तो मैंने उदाहरणार्थ अनेक पुस्तकोंके द्वारा आपके सामने पढ़कर सुनाये हैं। वह सब पुस्तकें सरफारको जस्त करके जला देना चाहिये।

मार्च सन् १९०८ में बजटपर बाद विवादके समयमें और कांग्रेसमें १९०६ सालमें आनरेबल गोखले और डाक्टर रासबिहारी घोषने जानी स्वागत वाली स्पीचोंमें भी इसी मतका समर्थन किया है। "लोकानुष्ठानों राज्य कार्यमें यदि अधिक अधिकार न दिये जायेंगे तो हिन्दुस्तानमें रूप और अत्यल्पके समान परिस्थिति उत्पन्न होजावेगी" डाक्टर रासबिहारी घोषके इनही शब्दोंपर इंग्लिशमें लिखा था कि उनका सम्भव गुप्त दलसे होना चाहिये। उनको अपनी स्वीचता खुलासा करना चाहिये ऐसा भी उस पत्रने लिखकर डाक्टर घोषको छलकाया

छेखोंपर टीका करते हुए कहा कि Martial Law and damned non sense ऐसी जो उन्होंने सलाह दी है सो वह आमुषी है । मुत्सदी गृहस्थोंके योग्य यह उपाय नहीं हैं । यह बात मैंने कोटिक्मके साथ बड़ी शांतिके साथ सिद्ध कर दिखार्द है । मेरा कोटिक्म कुछ नवीन और अभुतपूर्व नहीं है जो बात ६०—४० वर्षसे कहते चले आये हैं यही नैक सलाह बमके व्यापारके बाद मैंने अपने पेरके मदियेसे सरकारको दी है । लोगोंके मनोपर जो परिणाम आज २६ वर्षमें हुआ है उससे भयंकर राजद्रोहका परिणाम आगही उत्पन्न होनेका कारण कुछ अभुतपूर्व हुआ होगा जिनको सरकारके पक्षने अवगत नहीं दिसलाया ।

“ बड़ेबड़े ओमजों अधिकारियोंका खून करनेसे क्षेमजी राज्यकी इमारत एकवारगी न भिर पड़ेगी ” ऐसा मैंने स्पष्ट लिखा है और बम फेंकनेवालोंके कृत्यपर “ छाचारीके दर्जे प्राणा ” मैंने अपना मत दिया है ।

प्राताका मतलब.

“ प्राणा ” शब्द मूलमें गुजराती भाषाका है उस भाषामेंसे मराठीमें या शब्द रूढ़ हुआ है । इसका अर्थ यह है कि बलवान पक्षको अपना सत्ताधारी पक्षको अर्जियां करनेसे भयाना विनती करनेसे दुर्बल प्रजापक्ष अशक्त होनेपर अपनी दाद किर्याद छानेके लिये वह खुदको तकलीफ पहुंचाता है । बलवानके दर्शने पर जान देदेना, शरीरपर चोट मारना या घायल करना वगैरह उपाय निर्वाणके हैं, निराशा होनेपर प्राणा होता है ।

फैककर प्रगा करके पगल लोग अपनेही नाराको करणीमृत होते हैं
ऐसा भी मैंने स्पष्ट दिखा है ।

“इस समयकी राज्यपद्धती जैसे बने उतनी मर्दी सुधारनाही हितकारक
हेगा ऐसा हम जोरके साथ कहनेके हकदार हैं ” धर्मके समान इतर
अन्त्याचारोंको जड़पेठसे नष्ट करना हो तो राज्यपद्धतिमें सुधार करनाही
हेगा ऐसा मैंने कहा है सिविल सर्विस डिनर (भोजन) के
समय छार्ड मॉरेले जो विचार प्रगट किये हैं वही विचार मैंने
एक महीने पहले जाहिर किये थे उसमें अन्तर इतनाही है कि छार्ड
मोरेले जो सुधारणा करनेवाले हैं उनसे कहें। बढ़कर सुधारणा हमको
चाहिये । छार्ड मोरेले साहबके विचारोंसे मिलते जुलते विचारोंको पहलेही
प्रतिद करना सम्भवोहकरक मही है यह मैं स्पष्टतासे कहनेका साहस
करता हूँ । पायोनियरकी शक्तसी सूचनायें होमें तो भी हमारी सूचना
ऑफी और सरकारका ध्यान माने यह हमारा और हमारे देशका दुर्दैव है
ऐसा मैंने प्रतिपादन किया है ।

देशी भाषामें निकलने वाले वर्तमानपत्रोंको जो सरकार मंद करना
चाहती हो तो निराली बात है परन्तु जो वे जारी रखे जायें तो उन्हें
अनापक्षीय मतकोही सरकार के कानोंतक पहुंचाना चाहिये । कर्मचारी दल
यंत्रोंको यथासमय योग्य उत्तर देनाही उनका काम है

“पायोनियरके बाही तवाही लेखाफे प्रमिद होतही उस पत्रपर तुम-
 को फौजदारी मुकद्दमा कोरनेमें करेना था” ऐसा जो बात कहें उसको मे-
 रा यह उत्तर है कि पत्रोंपर किर्याद दायर करनेके लिये संस्कारकी
 पहले भेजनी लेना पड़ती है। पायोनियर किया सिविल मि० गजन्पर फ-
 र्याद दायर करनेके लिये सरकारी पत्रवांगी मांगी गईथी पर सरकारने
 नहीं दी। एंग्लो इंडियन पत्रने कितनीही नुष्ट बुद्धिसे क्यों न लेख-लिख
 हों परंतु उत्तर फौजदारी करनेकी सम्मतिसे सम्मति मिलती ही नहीं
 ऐसा अनुभव हाजिरा है। थोड़े दिनहुए एक एंग्लो इंडियन पत्रने लिख
 था कि, मंगलसके हिन्दू रईस स्कूलके हेड मास्टरको नेव देखा न-
 चाहिये, उन विचारोंका अपराध केवल यही था कि वह हिन्दुस्तानि-
 योंसे सहानुभूति रखते हैं। इस पत्रपर फौजदारी क्यों नहीं कीगई
 क्या इस लिये कि यह अज्ञेय है? ऐसा प्रश्न मि० ओवेंडने पार्समें
 पत्रमें पूछा था परन्तु इसका उत्तरही न मिला। एंग्लो इंडियन पत्रोंपर
 फौजदारी बात जादूसा असर रखती है और यह यह है कि कुछ
 वर्षके पूर्व बाकटर हर्सेके बारेमें पायोनियरने एक अपमानकारक लेख
 लिखा था। इसपर बाकटर साहब पायोनियरके आफिसमें पधारे और
 उसके सम्पादकको घाँटके चानुफस उधेड़ दिया मगर वह फौजदारी
 फौस करनेकी प्रार्थनामें न पड़े, परन्तु जो जर्म आया सोही अष्ट
 सप्त बहने लगे। पत्रकारोंको उमाय सौम्य उत्तरही हमारे मल पत्रका

सर्वाधिकृत है। यदि ऐसे पत्रकारोंको नो देशी भाषाके पत्रोंपर हमेशा बुरी आलोचना करते हैं हम योग्य उत्तर न देंगे तो हमारे पत्रोंका अस्तित्वही काहको होना चाहिये। कर्मचारी दलके पत्रोंको योग्य उत्तर देकर संस्कारको लोकपक्षार्थ मते निर्वहण करनाही हम देशी श्रेष्ठमान-पत्रोंका कर्तव्य है।

बीचकी छुट्टीके बाद ३॥ बजे फिरसे कोर्टके कामका आरम्भ हुआ और श्रीयुक्त तिलकने अपनी स्पीच शुरू की। उन्होंने कहा— १२ मई और ९ जूनके लेखोंपर फिरयाद कीगई है। तां० १९ व २४ मई और २ जूनके लेख फिरपादीकी संरफसे मेरा बुरा हेतु दिखलानेके लिये कोर्टमें पेश किये गये हैं, जिसमें १९ मई वाले शंकेमें जो हैलेख संमल इशारों के नामसे लिखागया है वह खुशामदी लोगोंने ज्वोत्समापे इस गड़बड़से नफ्तत दिखलानेके लियेकी है उसके सम्बन्धमें लिखागया है। मेरा लेख उन प्रस्तावोंके जवाबमें था जो ऐसी सभाओंमें पास किये गये थे। मेरे लेखका आशय भारतसरकारसे यह कहनेका था कि वह इस गड़बड़को जिस तरह हो बंद करदे लोकित शासन प्रणालीमें कुछ सुधार जरूर पड़े। मेरा यह लेख राजपत्रोंही नहीं है और इससे भला प्रकार मेरा इरादा जाहिर होता है। १९ मईका लेख मैंने जम लिखा था कि कुछ गैरे अखबारों की सम्मति पढ़वकाया,

इनमेंसे कुछ सम्मतियाँ मेरी सम्मतिसे मिलती हुई हैं और कुछ सरकारी अधिकारियोंसे छार्ड महोदयने यह स्वयं कहा है कि मैं उन सुधारों को जिनका करनेका विचार मेरा था इस अशांतिके कारण रोकूँगा नहीं । इंगरेजों की राय दो प्रकारकी थी। जिनमेंसे एक हिंदुस्तानियों की रायसे मिलती थी और दूसरी मि० रीस अदिकारी थी, जो कि कहते हैं कि इस अशांतिके दबाने के लिये इससेभी ज्यादा सत्ता के उपाय कानूनमें लाना चाहिये मेरे यह विचार कुछ नये नहीं थे बल्कि ऐजिस्ट्रेटिव कौंसिलके मेम्बरोंने भी यही विचार प्रकाश किये हैं ।

है। अगर कोई कार्रवाई येजतकी गई थी तो सरकारके उसके दबानेका अधिकार था लेकिन इन दबानेके उपायोंपर सम्मति प्रकाश करनेका मितना अंगरेजी मन्त्रियोंको अधिकार था उतनाही हिन्दी मन्त्रियोंको भी अधिकार था । श्री० तिलकने अपने २ और ९ जूनवाले भेदोंको पढ़कर और कहा यह उन आरोपों के अवाकमें हैं जो राजनैतिक सुधार चाहने वालों पर लगाये गये थे, वह यह है कि यद्यपि यह लोग बमके कामसे घृणा करते हैं परंतु सापही साथ सरकारके इन जुल्मी कायदे के मददगार भी नहीं थे अर्थात् बमसे बनाई गई घृणा बख्तोबे मैनेमी अपने छत्रमें बम फैलनेसे घृणा, दिखलाई है और सत्ताके उपायसेभी ।

श्री० तिलकने अभी अपना भाषण समाप्त नहीं किया था कि इतने में अदालत उठ गई

मंगलवार सा० २१ जुलाई सन् १९०८

सातवां दिवस.

आम फिर ११॥ बने श्रीयुक्त बाल गंगाधर तिलकने उठकर न्यायासनके समुख कहा कि "न्यायमूर्ती साहब और जुरी साहिबान् ! ९ जूनके आर्टिकलके मैं कथपद कर सुना चुका हूँ, इसमेंके लेख पहले लेखोंसे भिन्न हैं इन लेखोंमें स्फोटक द्रव्यका कायदा और प्रेस ऐक्टके ऊपर टीका की गई यह दोनों कायदे एकही बैठकमें पास कर दिये गये हैं, इन लेखोंपर टीकाक्रमक मैं दूसरे अवतरण पढ़कर सुनाऊंगा ।

जैसा १८८५ में इंग्लैंडके स्फोटकद्रव्योंका कायदा पास हुआ था वैसाही यह कायदा है ऐसा कहा गया है, ८ जूनके स्फोटक द्रव्यका कायदा Explosive Act पास हुआ वह त्रासे मिला, उस घोड़ेसे सारंगशके आधारपर ९ जूनका आर्टिकल मैंने लिखा है ।

प्रेस ऐक्ट पास होनेके बत्त हिन्दी समासदोंने कौन्सिलमें उसके पास होनेमें अपनी माखुशी दिखलाई है । यद्यपि अपना विरुद्ध मत नहीं दिया हिन्दी समासदोंका बहुमत होना अशक्य है लेकिन उन्होंने

फीसिलके सामने उसपर अपनी दलील पेशकी हैं उन्हें यह भी
 कहा है कि लोगोंको जिसे स्कोटिक ट्रिपके कायदेके पास होनेसे तक
 छीफ उठनी पड़े ऐसा कायदा पास करना ठीक नहीं है । यह कायदा
 १८८२ ई० के कायदेके गुनाविक नहीं है और इसके पास होनेपर
 अत्याचारोंका वन्द होना भी सम्भव नहीं है यह दलील नवाब सय्यद
 मोहम्मद साहब मद्रासके समासदने पेशकी थी यहाँ देखी पत्रोंने
 भी लिखा है ।

यह उपायही नहीं है ऐसा मैं नहीं कहता परन्तु यह उपाय चुल
 नैमाल्य नहीं है ऐसा मेरा मत है । (इसके बाद सन् १८९७ में जो
 खल्लस किये गये उनका यहाँ उल्लेख किया गया है ।)
 ५. मुद्रणस्वातंत्र्यकी यदि कहीं आवश्यकता है तो वह हिन्दुस्तानमें
 ही है । क्योंकि यहाँके लोग जाहिल हैं । जुलमी राज्यपद्धतीको ये
 नके लिये मुद्रण स्वातंत्र्यकी अम्बरत है ऐसा नार्टनका मत है बुद्धिभ्रम
 के माने Error of Judgment होना चाहिये । A corruption of
 intellect यह अनुवाद गलत है ।

“ मापण स्वातंत्र्य और मुद्रण स्वातंत्र्यही तो राष्ट्रके जनक और
 पोषक हैं । इस वाक्यको समर्थन करनेके लिये Malcolm's Govt
 of India पुस्तकके पेज १३८ मेंसे कुछ भाग उद्धृत पढ़कर
 सुनाया । सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्टके फैसले वर्तमानप्रति प्रसिद्ध

हन्नेसे राज्यशासनमें सकलीफ पैदा होती है इस लिये पेपरमें न छपे
मात्र ऐसी अविकारियोंकी इच्छा थी। नटिनके प्रत्येकसे जो सन् १८९८
ई० में छपा था, कुछ भाग पढ़कर सुन लिया गया। सरकारके विरुद्ध
छेगोंमें अप्रीति व द्वेष उत्पन्न किये जानेकी शिकसित सन् १८९९
में भी कि गई थी।

“जुलमी पिशाचोंका सभार हो” इत्यादि ‘भूत’ यह शब्द प्रथम
आनेसे भूत पिशाचका रूपक कायम रखकर यह लेख लिखा गया है।
जुलमी पिशाचोंसे मतलब उपायकों हैं इन उपायोंका छान्द मोल्लेको अपने
कवचमें रखना चाहिये छान्द मोल्लेको मात्रिक कहा है परन्तु भाषांतरमें
मराठी वाक्यका अर्थ नष्ट हो गया है। राष्ट्रकी उन्नतिको कुचल बाजना
बरन इतनाही नहीं किन्तु उसे पीछे ढकेलनेको “दण्डशाहीका उपाय”
कहते हैं (Science of Politics by Amos नामक पुस्तकमेंसे
एक नजीर पढ़कर सुनाई) इसके बाद श्री० सिल्वने Exhilaration
Speeches नामक पुस्तकमेंसे एक और नजीर पढ़कर सुनाई।
इनका सारांश यह था कि सर्वजनिक वादविवादकी स्वतंत्रता और
मुद्रणस्वातंत्र्य जो इंग्लैण्डमें न होती तो उस विषयके आन्दोलनका प्रचार
कहासे होता।

“सरकारकी बुद्धि कैसी बहक गई है देखो” इसका भी भाषांतर
गलत है। धर्मगोष्ठोंके कारण समाजमें उलट पलट होनायका यानी

आलोकने लोग 'अनार्किस्ट' हैं ऐसा छुद् सर हर्ष एडमसनने कौन्सिलमें कहा था। यूरोप और हिन्दुस्तानके बमगोछोंमें (Fall of Ozardom) घरती आत्मानका अंतर है-।

सर हर्ष एडमसनने कौन्सिलमें यह खय कहा था कि बमगोछोंके कारण समाजमें उलट पलट हो जन्हेगा अर्थात् बंगालके निवासी मनुष्य "अनार्किस्ट" हैं।

भयमे उदजाने वाले पदार्थ जिस २ कायमें और कारखानों में काम आते हैं वे वे कर्म्य और कारखानें बन्द करना पड़ेंगे यह मत 'एम्पायर' पत्रने प्रसिद्ध करके फहराई।

श्री० तिलक—मेरे छेखोंसे राजद्रोह और द्वेष किसप्रकार होसकताहै! जबकि हिन्दीपत्रोंके विचार मेरे समानही हैं लोकपक्षका सर्व साधारण मत यही है और सरकारभी कुछ २ बातें मानती हैं।

चोरी, खून और डकैतीके समाचार सब पेपरमें छपा करते हैं तो क्या पत्रकारोंके सिर इन गुनाहोंके प्रसारका दोष मढ़ा जा सकता है! बमका सविस्तर वर्णन इन्डोइडियन पत्रोंमेंही अधिकतर दिया है फिर उन पत्रकारोंपर बमके प्रसारको उत्तेजन देनेके दोषमें फौजदारी क्यों न की जावे! अगर यह बात मैं नहीं छिपा सकता कि बमकी उत बातोंके बारेमें कुछसा देनेसे राजद्रोह होता है। बमका असर

बादके मानिन्द होनेसे, बम बन्द नहीं होगा यह कहनेका मेरा उद्देश्य है ।

छन्दन मारिंग रिन्गूके कलकत्तेके सम्वाददाताने औरिएण्टल रिन्गूमें जो लेख लिखा था वह श्री० तिलकने पढ़ सुनाया, परन्तु आ० ज० ग्रान्सनने इसपर हरकत देनेसे न्या० मू० दावरने पृथक् कि यह आपने क्यों पढ़ा ? श्री० तिलकने जवाब दिया कि मेरे समानही कुछ अंग्रेजों-के भी विचार हैं केवल यह दिखलानेके लिये पढ़ा ।

मेरे लेखके विचारोंसे मिलते जुलते विचार फॉटिम्पररी रिन्गूमें दिये हुए Ethics of Dynamite में भी दिये हुए हैं, बम बन्द करनेके लिये नये एक्ट पास करना, गुप्त पुलिसका बढ़ाना, और जुल्मी शासन प्रणाली स्वीकार करना नहीं किन्तु फैलते हुए असतोषको बन्द करनेसे बम नष्ट होजावेंगे इसका अर्थ यह कदापि नहीं हो सकता कि मैंने बमको उत्तेजन दिया है, जो बात मैंने कही है वही सब देशी वर्तमान-पत्रोंने भी मुक्तकंठसे कही है, अगर किसीने गदरके बारेमें पुस्तका लिखा और उसकी आलोचना किसी वर्तमानपत्रमें कीगई तो क्या उस छखबार नवीसको गदरके प्रसार करनेका या गदरको उत्तेजन देनेका दोष दिया जा सकता है ? जिस रोज दोनों कायदे पास हुए उसके दूसरेही दिन टीकात्मक लेख लिखे और बमका सविस्तार वर्णन दिया, इसमें मैंने दोष क्या किया यह मैं नहीं जानता, अब किर्यादी कौ

तरफसे ऐसा कहा जाता कि रेखवत्का गुप्त अर्थ बम फेंकनेका उपदेश करनेका है। यदि यह बात सही मानी जाय तो प्रत्येक छेखमेंसे चाहे उसे गुप्त अर्थ निकालकर यापमूर्ती उन छेखोंको सच्चा दे सकते हैं।

श्री० तिलकने सुबोधपत्रिका, ज्ञानप्रकाश और देवप्रकाश के कई अंक निकालकर दिखलाये कि इन पत्रकारोंके विचार भरे समान ही हैं। लोकप्रशंसा, सर्वसाधारण मत यही है और सरकारसी कुछ कुछ बाते मान्य करती है फिर भरे छेखोंसे गुजटोह अथवा द्वेष किस प्रकार उत्पन्न हो सकता है।

वह्नालियोंके योमें मैंने जिस प्रकारका आपना मत प्रगट किया था उसी प्रकारका मत पायेनियरने रदियामें। बमसे होनेवाले अन्याचारोंके सम्बन्धमें अपना मत दिया था। पायेनियरकी श्रुतिके समानही लण्डन टाइम्सका मत है, इस मतको आधारभूत पकड़कर मैंने बम अन्याचार देख लिखा था।

दादा भाई नौरोजी

के 'प्राक्टिस अण्ड थिअरिअल' नामक पुस्तकमेंसे दामसमनरेकी नजीर उर्हाने पढ़ी "मोगल बादशाहोंके समान न तो अङ्ग्रेज छोरा हैं और मोगलोंके इतना इनका छद्म भी नहीं है" यह बात

कई आदमियों ने लिखा है, और उन्हें वह पसंद भी है, इधियारों के काय-
देके बारे में सर फीरोजशाह मेहताने १८८८ साल के क्रमेण जो वाक्य
कहे थे उसी प्रकार के मेरे वाक्य इन छवों में दर्ज हैं।-राष्ट्र के पौरुषका
वृत्ति इधियारों के कायदेने किया है हमारे पास इधियार न होनेसे राष्ट्र
ताम्रद बन गया, डिसेंट्रालिजेशन कमिशन के आगे, भी मैंने उसी बातका
आन्दोलन किया है हयम वाचार्य के आत्महत्याका जत्र श्री० तिलक टेलिख
कर रहे थे तब मन्सन साहबने कहा कि यह बात कभी हुई या नहीं
इसका निर्णय नहीं हो सकता, इसलिये इसका जिक्र न किया जावे।
न्या० मु० दावरने ऐडवोकेट जनरल की राय कायम रखी और श्री०
तिलकने उस नजीरका फिर उल्लेख नहीं किया।

परन्तु साथ ही उन्होंने यह कहा कि हयम वाचार्य के बारे में मुझे सर-
कारी रिपोर्ट मिल जावेगी तो यह नजीर दावेम में फिर पेश करूँगा,
इसके बाद मेजर इवन्स वेल्की पुस्तकमेंसे एक नजीर पढ़ी और
लार्डमोर्लका स्वीचके कुछ मारा जा सिविट सर्विस दिनरके वक्त हुई थी
पढ़े प्रजाको राष्ट्रमें अधिक अधिकार दिये बिना राष्ट्रशासनका बिना
सूटके चरना अब करना है, इंग्लैंड यह शासन आगे चला नहीं
सकता। "यम एक मंत्र है जलु और टोना है" यमके अयाचारकी
हकीकत देते हुए कलकत्ता और बम्बईके एंग्लोइंडियन पत्रोंने भी इसी
प्रकार यमका वर्णन किया है, एसेक ब्रयोंके विषयमें उन

लियोंका सुन्दर शृंगार कमला तेल



लियाँ चाहे जैसे मण्डे
मण्डे रेशमी और जरीके
चम चमाते हुये कपड़े पहने
दिखानेके लिये चाहे जितना
सोना चाँदीका गहना हीरा
मोती आदि जवाहरातोंसे
जड़ा हुआ पहने पर जबतक
उनके शिरके बाल काले
मुलायम चमकीले सुगंधित
और लम्बे महों तबतक उनका
सब शृंगार फीका है। लि-
योंके शृंगारका महायज्ञ
कमला तेल है हिन्दुस्तान-
में कोई ऐसा तेल है नहीं
जो इसकी बराबरी कर सके
इसके छिपे हुये उत्तम २

गुणोंके कारण हमको बहुतसे सर्टीफिकेट मिले हैं। वाम एक
शीशी सिर्फ ॥) बारह आना थी थी खर्च अलग, मिलनेका
पता-मेसर्स आदम अली आबुल्लाभाई एन्डको-माजी पाल्ले लेन

ववई.

प्रो गज्जरकी सूची मुजब बनी हुई दवाओं.

फीवर डॉप्स.

बहुतही सस्ता और सब वर्तके तापके लिये बड़ा कारगर दवा है

जर्मीसाइड

(जंतु-विष-नाशक)

हैम इत्यादि दवाके वसत उपयोगमें सेम्मे मय नहीं रहता

ब्लडप्युरिफाइंग सोल्यूशन

(रक्तशोधक)

गर्मी इत्यादि खून विच्छादके रोगोंपर बहुत फयदाकारक है

मलेरिया (एन्यु) सोल्यूशन

बड़ी ताप, तीव्रिया ताप चौबीसा ताप इत्यादि इलाके तापपर बहुत कारगर होता है

एन्टीसेप्टिक ऑइन्टमेन्ट

फुनसी, थांसी, जखम इत्यादिपर स्त्रामेसे त्हा माराम होता है.

रिंगवर्म ऑइन्टमेन्ट

दादर पर यह बहुत फयदा देता है

इसके इलावा हर्पेस पर रोगोंकी दवा समती है इस लिये नीचता पतेसे

पूज्य देवा हर एक दुर्गाहके वहां मिलेगी

फो 'खाती-टेकनो-केमिकल लैबोरेटरी, गिरगाव-बर्डी

दत्तात्रय कृष्ण साहू ब्रह्मदर्शन



आर्योपधि बृहत्कार्यालय

स्थापन सन १९०० ई०

[illegible]

वासुदेव कृष्ण सांह.

गंगा रामराय की घाटी-ठाकुरदास, मुंशी-पोद्दार, नन्दा

शास्त्रवेत्ताओंका भी वही मत है। यह मत पुष्पायणने प्रसिद्ध करने
 कुदा है कि स्कोटक द्रव्य जिस जिस काममें या कारखानोंमें काम करते
 हैं वह सब धंधे बन्द करना पड़ेंगे।

लार्ड कर्जनकी सीख अमीर कानुनको मासूम होनेपर बसेगा होगा
 ऐसा लार्ड मोरलेने कहा है फिर लार्ड कर्जनपर कौनशरी क्यों न कीगई।
 इससे यह पायाजाता है कि 'प्रचलित' बातोंका किसी चलेके समय
 विचार स्वातंत्र्यको आजादी दी जाती है। 'पोलिश'के कामों पर ध्यान
 करनेसे सरकारकी इज्जत जाती है ऐसा कुछ लोग समझनेलगे हैं
 अगर यह महज खाम खयाली है। सरकारके कामोंपर नापसंदी दर्शानेका
 हक हमको १२४ अ धारमिही दे दिया है। प्रजापक्षका मत बेवकूफ
 होकर सरकारके कान तक पहुँचनेका हमारा कर्तव्यकर्म है और वह
 फर्ज बजानेमें राजद्रोह नहीं हो सकता।

गुप्तार्थ ।

मेरे ऐंखोंमें छूट छूटकर मग है ऐसी फिलियादीकी तरफसे कदाचित्त
 सूचना होगी परन्तु मेरे ऐंखोंमें स्पष्ट शब्द हैं, यदि उनका ठीक ठीक
 अर्थ एक तरफ रखकर जो जीमें आया वही अर्थ कर लिया तो इसका
 इलाज क्या है गुप्त अर्थ निकालनेका एकदफे आरम्भ होनेसे चाहे जिस
 मेंसे वह सहज निकल सकता है, परन्तु ऐसा करना ठीक नहीं इस
 दशमें पत्रकारको राजद्रोहपर सजा देते हुए कोई दिक्कत न मासूम होगी।

पूरे ऐसे समयमें एक बात याद रखना चाहिये कि प्रचारको कितनी अदमपुरसेतसे अपने लेख लिखना पढ़ते हैं, केवल इसके बुके शायी परसे राजद्रोह ठहरना बड़ा कठिन काम है।

सुबूतमें दिया हुआ कार्ड ।

मेरे जन्म किये हुए कागजातों में किर्यादिने एक कार्ड दाखिल किया है, उसका मैं अब खुल्ला करता हूँ, किर्यादीको यह कार्ड इतने महत्वका मालूम पड़ा कि उसका फोटो लिया गया कदाचित् यह छर्द मोठे साहयके अवलोकनार्थ भी विलायत को चला गया है। इस कार्ड पर स्कोटक द्रव्य सम्बन्धी दो पुस्तकोंके नाम लिखे हैं, इसपरसे ऐसा तर्क किया गया है कि मेरा सम्बन्ध ब्रम, बगैरा बनानेवाले किसी कारखानेसे है यह, कार्ड मेरे उन कागजोंमें मिल्य है जो टेबलके दराजमें पड़े थे, जिसमें साख्य तफ नहीं लगा है यह कार्ड जिन कागजातके साथ पाया गया है उसका आपको अवश्य विचार करना चाहिये। हर रोज काममें आने वाले कागजोंमें यह कार्ड पड़ा था मैंने उसे बड़ी हिफाजतसे साव सहेके अन्दर छिपाकर नहीं रखा था मैं कह चुका हूँ कि स्कोटके द्रव्योंमें मिश्रित सेलका भी समावेश होता है इस लिये इस विषयपर मैं शीघ्र ही एक चर्चात्मक लेख लिखने वाला था इस लिये उसकी व्याख्या जाननेके लिये मैंने एक शास्त्रीय क्वाटलॉगमेंसे इच्छित पुस्तकोंके नाम निकाले और उनके नाम इस कार्डपर सरणार्थ लिख लिये एकदके

उन्हें फाटकर फिर लिखा है, इस कार्डपर पुस्तककर्ता के नाम और कीमतें भी दर्ज हैं (इस समय श्री० तिलकने यह क्याटलगा जूरीको दिख-
 लाया) नहीं मालूम ऐसे सादे कार्डपर किर्यादा अब क्या ब्यूट रचेंगे
 बमकी और भारत वर्ष के सैनिक बल्के विषयमें लिखते समय मैंने
 सरकारी सैनिक बल्का हास्य करनेका प्रयत्न नहीं किया किन्तु यह दिख-
 लाया है कि भक्तसे उड़माने वाले मसालोंका कानून पास होनेसे यह
 अयनकता सिधिल नहीं होगी किन्तु लोगोंको अपने देशके शासनमें
 कुछ भाग मिलनेसे यह गड बड़ी मिट सकती है ।

इस लेखकी वामत कि, "बम सहजमें बनसकता है और उनके
 लिये बड़े कारखानों की आवश्यकता नहीं है" श्री० वि० ने कहा कि
 इससे मेरा यह आशय कभी नहीं था कि, "भारतवासी बम
 बना सकते हैं" मेरा असली आशय यह था कि बम बनानेकी विद्या
 भारतवासी जान गये हैं बम बनानेकी विधि और मिन २ वस्तुओंकी
 आवश्यकता है उनके बनानेके लिये ही मैंने यह राय जाहिरकी थी जो
 टाइम्स ऑफ इंडिया या गवाहोंने अदालतमें माहिर किई है । दूसरे
 खसबार वालोंनेभी अपने २ खसबारों में भी यही लिखा है । जब उनके
 ऊपर अभियोग नहीं चलाया गया है तो मैं नहीं समझाता कि मेरे ऊपर
 क्यों चलाया जाय । मेरा लेख सरकारको बतौर चिन्तापनीके था कि
 अब भारतवासी बमों का बनाना जानगये है इसकारण अब जल्दी शासन

करनेसे काम नहीं चलेगा । मैंने सम्मति दी थी कि भारतवासियों को
बहु अधिकार देदिये जावें जिन्हें कि वह सरकारसे याचना करते हैं
मेरे इस लेखको आशय स्पष्टक दृष्टियोंके कायदे और प्रेस एक्टको
विरोधी है । मैं समझता हूँ कि जब कानून पास किया गया था तब
भारतवासियोंका उसपर सम्मति देने और उसके पारिणामको बुरा
कह देनेका अधिकार था ।

अज—तुम्हारा मागण कबतक समाप्त होगा ।
श्री० ति०—शायद संध्या तक समाप्त हो जाय ।

विधायकमें एक कानून है कि यदि जूरीके सम्पूर्ण मनुष्य मिलकर एक
सम्मति न देवे तो वह मुकदमा फिरसे होता है । यद्यपि भारतका
कानून वहाँके कानूनसे भिन्न है, परन्तु तौमी आपमेंसे एकन कि
मुझको ठीक बतलाया तो मेरे वास्ते यह एक बड़ी मोटी सहायता होगी
मुझे ऐसा ही धृढ़ विश्वास है । मैंने Attempt (कوشिश) शब्दका मूल
प्रकारसे अर्थ समझा दिया है । और अब आप यह विचारते कि जो कुछ
मेरे लेखमें यह भिन्न थे या नहीं ।

इसके बाद अशान्त चलाई मुकदमा दूसरे दिनपर सुलझी होगी ।
मेरे दूसरे लेखपर १९४ अ और १५१ अ इन चारोंके समुचित
मुद्रापर दोष रक्खा गया है, लेकिन यह नहीं बतलाया गया कि लेखमें
'मार्ग' किस चारोंके अंदर आता है इससे मुझे उत्तर देनेमें

बर्षों की अवधि तक पड़ती है। क्योंकि इन बातों की मर्यादा के अन्तर्गत अन्य
 वर्तित है, जो कि जैसा कि मैंने बताया है, प्रत्यक्ष करने का, प्रत्यक्ष करने का
 दोष मुझ पर लगाया गया है। प्रत्यक्ष करने का दोष होने के कारण मैंने
 मर्यादा नहीं रखी, परन्तु प्रत्यक्ष के लिये स्पष्ट, काल, और परिस्थितियों का सबूत
 किरियाने नहीं दिया, तब तक मुझे गुन्हेगार कोई नहीं है। ठहरा
 संकट है ! जाति का यहां क्या अर्थ है, हिन्दू मुसलमान इत्यादिकों तरह
 अधिकारियों की कोई जाति नहीं है, इस लिये यह धारा यहां लागू
 नहीं सकती। मुराद को राजा के मुकदमों में उपरोक्त बातों पर सबसे प्रथम
 ध्यान देना चाहिये।

मैंने यह विषय आप लोगों के समान साफ साफ तौर पर पेश किया
 है उनका विचार न्यायमूर्ति और मुराद की अवस्था ही करना चाहिये जब
 किसी बात में याद खरा हुआ तब उसके उत्तर में लेख लिखने का
 हक होना चाहिये। पिछले कोर्ट की २६ धारा में स्वतंत्रता के ज्ञान और
 मालिक संरक्षण करने का हक सबका समान है, मास में इसमें भी
 शामिल है, एंग्लो इंडियन पत्रों को हमारे समाज को जिस प्रकार गाली
 मारने का अधिकार है, सो क्या हमको उन्हें उत्तर देने का अधिकार
 नहीं ! क्या हम वेद गालियां चुपचाप सहन कर लेंगे ! मैं कहता हूँ कि
 उनके जैसे कड़े लेख होंगे, वैसा ही हमको भी करना चाहिये,
 "मास" पत्र के केंद्र में चचाही सीमा बतलाई गई है, एडिटर और

स्टीफेनसनका मत, मैंने आपको सामने पेश किया है । ऐसे मुकदमों में
 इन धाराओंके स्पष्टीकरणार्थ इन्जलेण्डमें भी मुकदमों में इस प्रकारके
 हुए हैं उनकी तरफ धोखा न्यून देना चाहिये । मेरे जेम्सोंका माफी
 समझपर क्या असर होगा, इस बातका सुवृत्त किर्यादीको देना
 चाहिये था । इन्जलेण्डमें इन मुकदमोंका फैसला किया गया है १-२३ वां
 मय कणवे कौन्सिलमें पास की गयी तब ऐसा कहा गया कि इन्जलेण्डमें
 वर्तमानपत्र जिस प्रकार स्वतन्त्रतासे लिखते हैं उसी तरह हिन्दुस्थानके
 अखबार भी लिखा करें, टीका करते समय लेखमें ब्याक्ति विषयक चर्चे
 जैसे फदेसे कड़े शब्द उपयोगमें लाये जावें परन्तु शर्त यह है कि वह
 लेख प्रबन्धमक होना चाहिये । इस/इसी मापणके अनुसार मैंने लेख
 लिखे हैं और इस अपने कपनको सुधी देनेके लिये मैंने इतनी-मनीरें
 पेश की हैं, यह लेख ब्रह्मालियोंके लिये नहीं लिखे गये थे और आज महापद्म
 की भक्तिके समान हास्य नहीं है, मैंने छोड़ोंको संभारा है इसका
 सुवृत्त सरकारी पक्षको देना होगा । लार्ड सालिस्बरी और बार्ड
 चर्चिल पर दगा करनेके लिये छोड़ोंको उत्तेजन देनेका चार्ज रक्खा गया
 था और इस विषयपर ग्रेवस्टोन ब्राह्मणे प्रालिमेण्टसमामें जो मापण किया था
 वह मैंने आपको पदपर सुनाया है, हेतुके लिये सुवृत्त चाहिये । जिन लेखों
 पर मुक्तिमा चलाया गया है उसके सुवृत्तमें दूसरे लेख पेश किये
 गये हैं, परन्तु मेरी संहितके तैरों परके पहिले मुकदमोंमें यह प्रयाग्यो

म्यः बर्तलाई है। अरिापमें Marathi articles are translated
 ऐसा मैंने सोचने कहा है मैं भी कहता हूँ कि आरोप मेरे मुँह से
 न सुनकर इन भाषाओं पर रखा गया है मिनमें मैंने कई गलतियों
 दिखलाई हैं इन अशुद्धियों के साथ ही पत्रिका की प्रति हमारे जमीन से
 मिला जाती है यदि आपके मनमें विचार हो कि यह बात ठीक नहीं
 तो भी इस संशय का फायदा आरोपों को देना चाहिये।

बुधवार ता० २२ जुलाई सन् १९०८ ई०
 आठवीं पेची

रोजकी तरह आज भी कोर्ट प्रतिष्ठित पुरुषों से भरी थी—(१,१॥)
 बने कोर्ट का काम शुरू हुआ, श्री० तिलकने कहा, स्थायमूर्ति—कलक
 के मायणमें मैंने अपने सब लेखों के विषयमें मुकुत्तिल सारपर सब बातें
 समझाकर फही हैं जिन पर आरोप रक्खा गया है, आपको यह ध्यानमें
 रखना चाहिये कि मैंने बमका निषेध जोरसे किया है, और उसी प्रकार
 सरकार के सख्तों के उपायों का भी निषेध किया है, इच्छामें लोगों ने भूरीकी
 मार्फत ही अखबारों की स्वतन्त्रता कायम रखी है, मैं आपसे भी यही
 निवेदन करता हूँ कि आप भी हिन्दुस्थान के वर्तमान पत्रों की स्वतन्त्रता
 कायम रखें मैंने कैसे समयमें और किस हेतु से यह लिख लिखे हैं
 इसका भी आप विचार करें, यदि आप विचार पूर्वक आज इस मुकदमे

पर, अपना योग्य मत देवो। तो आपको मतें विस्मरण हो जायेगा, क्योंकि यह प्रथम इस देशको सब वर्तमानपत्र सम्बन्धी है। आपने सिरपर बड़ी भारी कवाच धारी है, मेरे लेखोंको पढ़कर लोग बेचिख हुए हैं। यदि नहीं इसका विशेषतर आपको विचार करेना चाहिये, कोठे के बाहरकी सब बातोंको आप भूल जायें। एडवोकेट जनरल आपको शायद कुछका कुछ सम्मम्रावेंगे और न्यायभूमी भी आपको कायदेका अर्थ समझावेंगे परन्तु आप इनकी बातों पर ध्यान न देकर लेखोंके हेतुकी ओर दूर दृष्टि देकर अपना मत प्रकाशित करें, इसमें सरकारकी मर्जी और गैर मर्जीकी तरफ देखना नहीं है। आप कायदेके संबंधों हैं, मुझे आपही पर कुछ भरोसा है, आप अन्याय करें वह मैं नहीं कहता परन्तु सर्वसाक्षी परमेश्वरके न्यायासनके सम्मुख आपको इस बातका उत्तर देना होगा। इस बातको ध्यान देकर आप इस मुकद्दमेके बारेमें अपना मत प्रकाश करें।

मेरे मार्पणके समय एडवोकेट जनरलने कोई बाधा नहीं डाली। मैं उनके सम्मुख कायदेमें कुछ भी नहीं जानता। वह एक बड़े भारी विश्वान् हैं और शक्ति स्वभाव हैं। इसका परिचय इस मर्मिष्ठे मिले है। इस लिये मैं उनका छत्र हूँ। उसी प्रकार जुरी महाशयोंने बड़ी शक्तिसे सौंप मेरे मार्पणकी सुन लिया है। इस लिये आप लोगोंको भी मैं अभ्यवह देता हूँ। मैं अपने लिये बहस नहीं करता परन्तु सब विमुख

नके लिये और मुद्रणस्वातंत्र्य तथा भाषणहितके स्वातंत्र्य कायमा रखने के लिये इतना सिर पटक रहा हूँ। मेरा क्या हित है? मैं पांचवों वर्ष कदाचित् अन्न और जिन्दा रहूँगा परन्तु आजकी बात सार्वभौमिक हितसंबन्धकी है इसीलिये मैंने यह मूकदमा खुद चलाया है। मखारिके व्यापमूर्तिको भी घन्यवाद देकर मैं अपने मायणको पूरा करता हूँ।

इसके बाद सरकारी बेरिस्टर मि० ग्रिन्सनका मायण हुआ।

एडवोकेट जनरलका मायण।

मि० ग्रिन्सन—मैं जुरीसे यह नहीं कहना चाहता कि अभियुक्तको अपराधी ठहराओ या निरपराधी आपलोगोंके सामने मुकद्दमेको—इस प्रकार समझा देनेका मेरा कर्तव्य है, जिस प्रकार कि आप उचित न्याय कहसकें—मैंने, कोई बात, आपके सम्मुख ऐसी—नहीं कही है जिससे कि आप यह कहसकें—कि मैं आपको अभियुक्तके विरुद्ध अन्याय करने के लिये फुसलाता हूँ या प्रयत्न करता हूँ।

जहां तक मुझसे होसकेगा मि० सिन्क्लेक उस अपराध को बचा-उंगा जिसके कि यह एकही बातको बार-बार दुहरानेसे अपराधी हो चुके हैं।

अभियुक्तने पिछले तीन दिन कुछ नहीं किया केवल राजनैतिक विषयों पर ही बाद विवाद किया है। सबूत के लिये मैं माने उंगा कि

पर आपका योग्य मत देखी तो आपको मैं तो बिल्कुल ही प्यारे, क्योंकि यह प्रभु इस देशके सब वर्तमानोंपर सम्बन्धी है। आपके सिस्टर बड़ी भारी श्रमसे दूरी है, मेरे छेलोंको पढ़कर लोग बेरिह हुए हैं या नहीं इसका विशेषतः आपको निचार करना चाहिये। कोई भी बाहरकी सब बातोंको आप, भूत-जाति एडवोकेट-जनरल आपको शायद कुछका कुछ समझावेंगे और न्यायमूर्ति भी आपको कायदेका अर्थ समझावेंगे परन्तु आप इनकी बातों पर ध्यान न देकर छेलोंके हेतुकी ओर दूर दृष्टि देकर अपना मत प्रकाशित करें, इसमें सरकारकी मर्जी और गैर मर्जीकी तरफ देखना नहीं है। आप कायदेके संरक्षक हैं, मुझे आपही पर कुछ भरोसा है, आप अन्याय करें वह मैं नहीं कहता परन्तु सर्वज्ञानी परमेश्वरके न्यायासनके समुख आपको इस बातका उत्तर देना होगा। इस बातको ध्यान देकर आप इस मुकद्दमेके बारेमें अपना मत प्रकाश करें।

मेरे भाषणके समय एडवोकेट जनरलने कोई बाधा नहीं डाली। मैं उनके समुख फायदेमें कुछ भी नहीं मानता। वह एक बड़े भारी विरोध है और शक्ति सम्मान है। इसका परिचय इस मामलेमें मिले है। इस लिये मैं उनका हार्दिक हूँ। उसी प्रकार मुझे महाराष्ट्रने बड़ी शक्तिके साथ मेरे भाषणको सुन लिया है। इस लिये आप लोगोंको भी मैं अभ्यर्था देता हूँ। मैं अपने लिये बहुत नहीं करता परन्तु सब विमुक्त

मैंने छिये और मुद्रणस्वातंत्र्य तथा भाषणहितके स्वातंत्र्य कायम करने के लिये इतना सिर पटक रहा हूँ। मेरा क्या हित है? मैं पांचवीं वर्ष कदाचित् अब और जिन्दा रहूँगा परंतु मानिकी बात सर्वमानिक हितसंबन्धी है इसीलिये मैंने यह मूर्खता छोड़ चलाया है, अखीरमें न्यायमूर्तिको भी धन्यवाद देकर मैं अपने भाषणको पूरा करता हूँ।

इसके बाद सरकारी बैरिस्टर मि० ब्रैन्सनको मार्पण हुआ।

पुडयोकेट जनरलका भाषण।

मि० ब्रैन्सन-मैं जूरीसे यह नहीं कहना चाहता कि अभियुक्तको अपराधी ठहराओ या निरपराधी आपलोगोंके सामने मुकद्दमेको-इस प्रकार समाप्ता देनेका मेरा कर्तव्य है जिस प्रकार कि आप उचित न्याय कर सकें, मैंने कोई बात आपके सम्मुख ऐसी नहीं कही है जिससे कि आप यह कह सकें कि मैं आपको अभियुक्तके विरुद्ध अन्याय करने के लिये पुस्तछाता हूँ या प्रयत्न करता हूँ।

जहां तक मुझसे होसकेगा मि० लिचकेके उस अपराध को बचा-उंगा जिसके कि यह एकही बातको बार, बार दुहरानेसे अपराधी हो चुके हैं।

अभियुक्तने पिछले तीन दिन कुछ नहीं किया केवल राजनैतिक विषयों परही बार-बार किया है सबूत के लिये मैं मानेगा कि

अभियुक्तका विचार सत्य था जो कुछ राज्य विरुद्ध बाने उसने, अच्छी है वह भी ठीक है और कुछ सुनानेकी भी अधिक आवश्यकता थी परंतु इस बातको इस मुकदमे से कोई सम्बन्ध नहीं है आप लोगोंको भी इस प्रसंगसे कोई सम्बन्ध नहीं है कि आपा सुारा होना चाहिये या नहीं।

आपको यह दिखलाता हूँ कि मैं कुछ अपने विचारसे नहीं कहता हूँ बल्कि बंगालके चीफ जस्टिसने भी ऐसा ही कहा है जिनकी सम्मति अभियुक्त के बहुतसे प्रमाणोंकी अपेक्षा नया प्रमाण है आपको इस मुकदमेमें केवल साक्षी के ऊपर ध्यान देना चाहिये और सर्वजन-मैतिक सिद्धान्तों को जो आपने अपने अर्थके सुने हैं भूल जाना चाहिये।

एडवोकेट जनरलने मि० जस्टिस स्टूचीके उस मुकदमेका फैसला दिखलैया जिसमें कि श्री० लिङ्कपट्टा कुछ सम्भव था और इसी कारण उनको कानून चाहिये था।

फिर कहा कि मि० जस्टिस स्टूचीको फैसला किसी कौंसिलसे भीकार हो चुका है। और अभियुक्त राजनैतिक विषय अण्डरी प्रकार जानता है क्योंकि २० वर्षकी वफादतका सज्जुर्ग रहता है। अभियुक्त कानून जाननेवाला होकर वह फौजदारीके व्यवहार करने की अपेक्षा अपना बचाव मुठ्ठीप्रकार कर सकता था वह आपके, मेरे और अभियुक्त

तीनों के लिये अच्छा होता यदि मि० सिल्वे के इन्होमें ऐसी अन-
गिनत मूळ न होती।

अभियुक्त के लिये यह कहना कि उसका मुकदमा न्यायपूर्वक
नहीं हुआ, मूळ है। उसको हर एक बात कहने के लिये
(जो कुछ वह कहना चाहता था) समय दे दिया गया था यदि
अभियुक्तके भाषणमें सरकारकी तरफसे कुछ दखल दिया जाता तो
अवश्य यह कहनेमें आता कि मुकदमा न्याय पूर्वक नहीं हुआ, मैं
जुरीके सामने मुकदमें की असल बात बर्न करूंगा और मि० सिल्वेके
राजनैतिक विषयमें जो कुछ कहा है उसके बारेमें कुछ नहीं कहूंगा।
जुरी जानलेगी कि इसमें केवल तीन बातें विचारने योग्य हैं और
मिनके विचारने में किसी प्रकारकी असुविधा नहीं पड़सकती। पहली
बात जिसका कि उत्तर उन्हें देना था यह थी।

(१) क्या अभियुक्तने इस विद्रोही लेखको छपा, या प्रकाशित
किया है, कि नहीं ? और वह इसका ज़म्मेदार था कि नहीं ?
जिसके उत्तरमें शापकेपास उसका इस्कर नामा मौजूद है और
यही प्रमाण है कि अभियुक्तने उसको छपा, लेकिन इस बारेमें ज्यादा
बहस करना बेफायदा है क्यों कि अभियुक्तने स्वयं इसको अधिकारकर
लिया है। यह देख उसने लिख या नहीं यद्यपि यह कोई बात नहीं है
कि उसने इनको लिख या नहीं, परंतु जब उसने छपा तो उनका
जम्मेदार वह हो चुका।

(२) इन छेड़ोंका मतलब क्या था, आपछोगोंको इसके कह माने नहीं छेने चाहिये जो मि० तिलकने अभी कृतकल्पे से अभियुक्त आपछोगोंकी आंखोंमें धूल डालने का अत्यन्त प्रयत्न कर रहा है छेकन यह बात आपको याद रखना चाहिये कि जो कुछ उसने अब कृतकल्पे से वह कुछ और है, पर यह देखना चाहिये कि छिखते समय उसने किस अर्थमें छिखाया, कोई मनुष्य अशक्तमें ऐसा नहीं कहसकता कि मैंने बेशक कुछ समझिदोही छेल छिखा है । परंतु इसका आशय मेरे विचार से कुछ औरही था । यह आपका कर्पद कि उन छेड़ोंका क्या अर्थ है सोजाने । अभियुक्तने अब यह नहीं छुछ सकते कि उसका क्या आशय छिखते समय था जिसको अभियुक्त श्री के सामने अदालतमें कह चुका है । अभाग्यसे मि० तिलक के वास्ते बहुतसे रामनैतिकोंकी और प्रिद्धों कौंसिज्की सम्मति दीगईर्षी । आपको यह न्याय करना चाहिये कि छिखती समय उसका क्या आशय था । आपछोगोंको अभियुक्तकी यह बात नहीं माननी चाहिये कि उसका आशय कुछ और था जबतक कि छेड़ के शब्दोंसे अर्थ साबित न होजाय ।

(३) उन छेड़ोंका मतलब क्या हुआ ? आपछोगोंको यह देखना चाहिये कि वह छेड़ अभियुक्तकी ११४ की ९ धारा में छेने के साक्षी है या नहीं ।

अभिपुक्तने यह शिक्षायत्त भी है कि संवत् १९११ ई. के सत्र के अधीन ऊपर
 रख दिया है । इस शिक्षायत्त में कानून के प्रदत्त समय अभिपुक्तने बंदी।
 भूलकी है क्योंकि कार्यदेही इस प्रकारका है ।

अपने मापणमें मि० रिक्कने बहुत कुछ समय खूरी और नजके
 सम्बन्धमें बनाये हुये कानून के ऊपर बहस करने में खेराब किया है इस
 मामिलेमें मैं अभिपुक्तने कुछ कहना नहीं चाहता किन्तु इतना ही बत
 देता हू कि जिस किसीमें Lord Erskine छान्द अर्सेकाईनका जीवन
 चरित्र पढ़ा होगा वह इस बातका १० मिनियमें उत्तर देसका है । इस अर्से
 ऊपर मैंने कलकत्ता मन्ड और प्रिन्सीपल सिविल के महुतसे फैसलेंका हवाला दिया
 इस बातके निषयमें कि किसी पुरुषको राजविद्रोही प्रमाणित करने में किर्तनी
 साक्षियोंकी आवश्यकता है । इन छेवों में बुरे विचार और शत्रुता नहीं होनी
 चाहिये मुफदमा फैसल्य करने में जूरीको यह सब छेव ध्यानमें ले आना
 चाहिये और बाहरके सब विचारों को ध्यानसे भुल देना चाहिये ।
 अभिपुक्तने अनुवादमें चार जगह गलती निकाली है । जिसमें
 आजसबरे अभिपुक्तने यह भी कहा कि अनुवाद कुछका कुछ
 कर दिया है जिसका यही अर्थ नहीं कि वह गलत है बल्कि ऐसा
 उसके बाद करने के लिये किया गया, और किसी अनुवाद
 करने वालेपर यह बहुत सख्त इत्जाम है । अगर यह सच होता तो
 विचार अनुवादक नौकरीसे बरखास्त होजाता ।

१. अभिपुक्तने अनुवादमें १८ शब्द अशुद्ध निकाले हैं और यह कहा है कि इसका अनुवाद अशुद्ध नहीं—बल्कि—कुछका कुछ कर दिया है यानी बिल्कुल मतलबही बदल दिया है। इन शब्दों का सुधार है कि मि० सीलकने किया है मेरे ध्यानसे उनके मतलब में कुछ फरक नहीं पड़ता।

२. आरोपी के कहने में ऐसा कहीं नहीं कहा गया कि सरकास्के विरुद्ध किसी प्रकार की घृणा मेरे अलमार पढ़ने वालोंके दिलों पर नहीं धड़े।

३. एडवोकेट अनरलने कई मुकदमोंका हवाला देकर कहा कि अभिपुक्त केशरिका स्वामी और सम्पादकहै इस लिये उसमें जो कुछ छपे वह उसका ज़ुम्मेदार है।

यह काम ज़रीफ़ है कि जो उसके देखकर आशय निकाड़े और उसके देखकेही पढ़कर अपनी राय कायम करे। ज़रीफ़ो यह बात खाना घृणा है कि यह केवल लेखोंसे फैसलादे, बल्कि अपने पासकी हालतोंकी भी ध्यानमें लिये तथा आरोपीका अभिप्राय एक शब्द या एक वाक्यसेही ज़रीफ़ो नहीं देखना चाहिये बल्कि तमाम लेख से।

मि० मन्सन (सरकारी वकील) ने ज़रीफ़े प्रार्थना की कि उस तमाम लेखके और दूसरे लेखोंके सहित (जो साथ में थे)

कस्तूरी पांढरे काले गंगावन ५१।

आमचे येथून नेपाळ, तिबेट व हिमालयची उत्तम खरी कस्तूरी, शुद्ध शिलाजीत, पित्रतर्पण ची लहान मोठी अर्घ्यपात्रे, अगठ्या, पाढरे व काळे गंगावन वगैरे माल योग्य किंमत घेऊन परगावी व्ही पी नें पाठविली जातो

या शिवाय बनारसी, सर्व प्रकारची लुगडी, उपरणें, किनखाव, गोठा, पट्टा, अत्तर वगैरे येथे तयार होणारा माल शेकडा २। रु० ५० पेक्षा कमीवर ४।। व २५ पेक्षा कमीवर ४- प्रमाणे कमीशन घेऊन पाठविला जातो आर्डरी घरोवर कमीत कमी चतुर्थांश रकम पाठविली पाहिजे

पत्ता - हरिशकरलाल रामशकरलाल

नेपाळी कोठी, बनारस सिटी

कस्तूरी सफेद काला चवर

We import real musk pure silajeet, sacred ring and argha (made of unicorn) from Nepal Tibet & the Himalay & supply the same to any part of the countries

We also supply all sorts of Benares products such as saris dappatta, Lenkimb etc at minimum commission 2/4/ p.c under 50/ @ 1/ p.6 Rupees of under 25/ @ 1/ p. Rupees all order should accompany, at least 1/3 of the value

HARI SHANKAR LAL RAMSHANKAR LAL
S. E. TAREK COPY

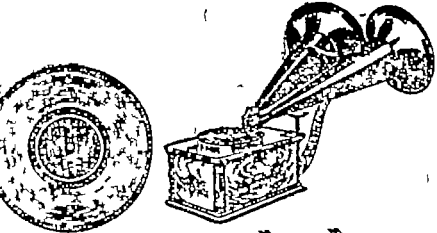
कस्तूरी सफेद कालाचवर

हमारे यहां नेपाल, नीलवत, हिमालय से असली कस्तूरी, शुद्ध शिलाजीत पित्रो के तर्पण के वास्ते गंडे का छोटा बड़ा अरघा अगूठी, सफेद व कालाचवर, मगाया जाता है और उचित मूल्य पर बाहर बजमिये वी पी के भेजा जाता है।

इसके अलावे बनारसी झाल हर किस्म का सोडा, दुपट्टा, कीनखाव, गोरा, पट्टा, अत्र, वगैरह जो चीजें वहां तैयार होती हैं कमिशन २।) सैकडा ५०) के नीचे) ॥ २५) के नीचे -) लेकर भेजा जाता है । आर्डर के साथ कम से कम चौथाई मूल्य भेजना चाहिये ।

पता-हरीशंकरलाल रामशंकरलाल

नेपाली कोठी--बनारस सिटी



मशहूर गानेवाली व गवैया और तमाम
 गायकों के हिंदुस्थानी, मराठी, गुजराती में
 गायन और उसके लिये नव तरहकी मशीन
 तैयार मिलेगी और सीनामटोग्राफ, फिल्मस
 लाइम लाइट, हार्मोनियम, कीटसनलाइट, और
 मोजलीका, हर प्रकारका सामानका तमाम बन्दई
 घरमें बहुत ज्यादा मगवानेवाला और सबसे सस्ता
 बेचने वाला

श्रीमान श्री

कालादेवी रोड मुंबई

विये गये हैं] पढ़ें और फिर आरोपी के अभिप्राय का नताजा निकालें।
 जुरीका यह देखना कर्तव्य नहीं कि इस विषय पर विधायक में क्या
 कानून है जिसकी वजह से आरोपीने जुरीको घोसा देनेकी कोशिश की है।
 आरोपीने कहा है कि विधायक में यह आम कायदा है और उसकी नकल
 हिन्दुस्तान में भी होती है कि जज मुकदमेका फैसला जुरीकी राय
 पर छोटे देता है। जो कि बहुत बेजा है। जुरीका फर्ज है कि वह
 जजसे कानून ले, और यही कानून है। मुझे मि० तिलक की
 इस बातसे आश्चर्य मालूम होता है कि यह एक नया कानून
 बढाते हैं। पिछली जिरहमें आरोपीने किसी प्रकार ठीक कहा है जिसपर
 कि मैं विश्वास रखता हूँ। कानूनके समझानेमें आरोपीने जुरीको खूब
 घोसा देनेका उद्योग किया है अगर कोई कानून न जाननेवाला मनुष्य
 ऐसा करता तो कुछ अचम्भेकी बात नहीं थी। परन्तु मि० तिलक
 जैसे विद्वान की यह बात देखकर आश्चर्य मालूम होता है। दूसरी
 बात जो आरोपीने अपने भाषणमें जुरीको समझाना चाही है यह यह
 है कि, जबतक सरकारी वकील यह साबित न करदे कि 'इन लेखों
 के पढ़ने वालोंके दिलमें नया बुरा असर पैदा हुआ 'जुरी उसकी ओर ध्यान
 न दे' इसके सिवाय Attempt (कोशिश) शब्दका अर्थ मतलबमें
 भी गलती की गई है इस कोशिशमें सफलता हुई है या नहीं यह
 प्रश्न क्या है बल्कि जुरीको यह सोचना चाहिये यह लेख १२४ ए धारा

में आगया है या नहीं ? आरोपीने मुद्रण स्वातन्त्र्य के विषयमें बहुत कुछ कहा है परंतु मैं इस विषय पर इतनाही कहूँगा कि वह सब एक १२४ ए धारामें है इस धारामें सर्व सधारण लेखकों को यह अधिकार दिया है कि वह राजनैतिक कार्यों में उचित आलोचना कर सकें परंतु कठोर शब्दों में नहीं । मुझे विश्वास है कि जनसाहच्र जुरीके ध्यानसे इस मिथ्या विचारको (जो आरोपीने उनके दिलमें घुसा दिया है) निकाल देंगे । आरोपीने उनको समझा दिया है कि उन लेखोंमें उन वादानुवादकी शिकायत थी जो देशके सुधारके विषयमें हुये थे । यह तर्कना निर्मूल आरोपीका यह बचाव कि उसके लेख उन आरोपों के उत्तरमें थे जो उसपर और मरहटों पर इंगरेजी अखबार वालोंने लगाये थे, मैं स्वीकार किये लेता हूँ कि आरोपीका कहना सत्य है और उसकी मनसा इन लेखोंके छिखते समय उन आरोपों के हटानेके लिये ही होगी परंतु जबकि यह लेख १२४ ए धाराके भीतर आगये तो फिर वह अपने आपको बचा नहीं सकता, इस प्रकारका बचाव एक लडकपन है । आरोपीको इस कदर अखबार और कितानों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं, क्यों कि यदि इस बातके सचभी मान लिया जाये कि “अंगरेजी अखबार वालोंने भारतके अंगुओं के ऊपर कुछ कटपट किया” तौमी आरोपी के यत्ने इस प्रकारका लिखना बचाव नहीं ।

इसके बाद एडवोकेट मनरत्ने कुछ आगेजी अस्वभावों में से जज साहब को पढ़कर सुनाया और यह जाहिर किया गया कि यह कट्टर आरोपी पर नहीं थे । और कई विषयों पर कहते हुये मि० ब्रान्सनने यह दिखलाया कि यह गलती जो मि० तिलकने अपने सब भाषण में की है वह यह है कि अगर उनका इरादा अच्छा होता तो ऐसी गलती कभी न करते ।

पोटकार्डकी घामत सरकारी वकीलने जुरिसे कहा कि तर्जुमानी के समय यह कार्ड ऐसी जगह से मिछाया कि जिस जगह उसका साव-रण रखना असम्भव था । फिर एक लेखके विषयमें कहा [जो “केशरी” के किसी अंकमें निकल चुका था और जिसके कारण इस कार्ड के ऊपर संदेह किया गया था] कि यह सामान लेख सरकारको धमकाने के लिये था कि “अगर सुधार नहीं किया जायगा तो बमकाममें छाने पड़ेंगे” यह निचारटना आपका काम है कि—सरकारको इन लेखों में खुशी हुई या छिपी हुई धमकी धमकी दी गई है या नहीं, यदि अवश्य कता होतो मैं इसका सत्य होना साबित भी कर सकता हूँ । फिर ९ जूनके लेखमें से कुछ पढ़कर सुनाया [जिसमें यह कहा गया था कि “मम, एकसदरका हुनर है”] और कहा कि—आप इस लेखके पढ़ने से जानगये होंगे कि सरकारको बमकी छिपी हुई नहीं बल्कि खुली हुई धमकी दी गई है । फिर २ जून वाले अंकने कुछ लेख दिसाये

और कहा कि अरोपीकी सहायुभूति बंगालियों के साथ कुछ मन्दर है इन दोनों खून करने वालेकी हिम्मत और दिलेरी की तारीफ की गई है इसी लेख में आगे चढ़कर खून करने वाले बंगालियोंको निरपराध बतलाया और कहा कि “यह कुछ कायदेके वास्ते क्रम करते थे” इससे जाहिर होता है कि मि० तिलक की रायमें यह एक अच्छा खून करने वाला था । अरोपीने यह भी लिखा है कि “राज्य पद्धति बहुत सरासरी है और जबतक राज अधिकारियों को एक एक करके पुख नदोगे वह शासनप्रणाली कभी न बदलेगी आरोपी इस बात को कहभी चुका है । सरकारने इस काईकी वारदातको याजमीनीमी घात समझी है आरोपीने जो लॉर्ड मॉल्लेको पंडित मॉल्ले करके लिबाई, और यह बात जाहिरकी है कि “मेरी और लॉर्ड मॉल्ले की एकही राय है जैसाकि ‘सिविल सर्विस’ डिप्ट के अगसरपर मि० मॉल्लेने कहा है ” सरकारी रिकॉर्डने कहा कि यद्यपि लॉर्ड मॉल्लेका इरादा हिन्दुस्तानकी प्रजाके कुछ हक बढ़ानेका था परंतु वह हमेशा सखती के कायदे से सहायुभूति रखते हैं । मि० तिलक की दृष्टि विलकुल उचित नही है कि बम फेंके जाने पर फतल होनेपर और अशांति फैलने पर भी सरकार सखती के उपायोंको न करते तो फिर सरकार किस लिये है ? । क्या इसका मतलब है कि अगर सरकार शांति रखने के लिये प्रयत्न

कैसे तो गोया जायतेका भूत उसके शिरपर चढ़ गया जो कि हर दर्शने
 वर्ष घटता है । अगर सरकारने ऐसा किया तो क्या मि० तिलक
 को ऐसा कहनेका अधिकार है कि “जुहमहोताह और राज्यधिकारी इसके
 नरोत्तमों तो हम उनपर बम फेंकेंगे ” असलमें मामला यह है
 और जूरीसे यह घटलाने की प्रार्थना है कि जो यह ऊपर कहा गया है
 राज बिद्रोही है या नहीं । सरकारी वकीलने सब शीघ्रत तिलकके
 भाषणके अंतिम भागकी ओर (जो १५३ ए धारासे सम्बन्ध
 रखताथा) ध्यान दिया और कहा कि मि० तिलक का यह कहना है
 कि यह यह नहीं समझे कि उनके ऊपर कौन कौन से आरोप हैं,
 आरोप भली प्रकार पहिले बतला दिये गये थे उन्होंने स्वयं १५३ ए
 धाराके ऊपर ध्यान नहीं दिया ।

रशिया में “बम” बनेकी बात मि० तिलकका कहना बिल्कुल
 झूठ है, अगर उस लेखको सच मान लिया जाये कि रशियामें “बम”
 से राजनीति का सुधार हो गया तो इसके यह माने हैं कि यहाँ भी
 रशिया के समान करना चाहिये । तमाम लेख से जाहिर होता
 है कि भारतमें दुःखकर कारण अधिकारी वर्ग हैं, जिनके सञ्चलित
 कामों से युवाओंकी बुद्धि फिरे गई और “बम” फेकना राजनीति
 पाने का एक तरीका मान लिया गया । इसमें यह भी दिखलाया गया
 है कि युवाओंने “गोर्ग” फेकने में बड़ी भूलकी है बनेवा और

के लिये और फेंका दूसरे के ऊपर, मिसाल के लिये लिखा हुआ है कि " खुदी राम बोस भी स्वयं इस बात के लिये अफसोस करता है कि मि० किंग्सफर्ड के धोखे दो निरपराध स्त्रियों का खून किया" इसका यह मतलब है कि अगर "बमगोला मि० किंग्सफर्ड के ऊपर पड़ते तो ठीक था इस लेखका यह प्रयोजन है कि "बमगोला" सीधे फेंको मूल मत्करो, और तब मि० तिलक और उनके अनुयायी तुमपर प्रसन्न होंगे। उसमें यह भी लिखा है कि "इमेनी हुकूमतने हिन्दुस्तानी फौजके लिये एक बड़ी भारी बदनामी की बात है क्योंकि हर जगह लड़ाई का मैदानों में इसने अपनी बहादुरी दिखलाई है।

एडवोकेट जनरलने इन लेखोंमें से कुछ और विद्रोही शब्द घटायकर अपना भाषण समाप्त किया ॥

जज साहबका जूरीको समझाना ।

जजसाहब—मैं अब आपका अधिक समय नहीं लूंगा क्योंकि ८ दिनसे आप बरोबर इस मुकद्दमें को सुन रहे हैं इसकी वाचन आप लोगोंने अपने घरपर भी विचार किया होगा और अपने मित्रोंद्वारा बहुत कुछ जानाहोगा। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप उन सब विचारों को मनसे बाहर निकाल दें और आरोपी के उन शब्दोंपर जो उसने फेंके हैं, दया के साथ न्याय करेंगे आप यह न ख्याल करना कि

यह मुकदमा सरकार की तरफसे चलाया गया है, बल्कि जो न्याय हो यही करना मेरी यही इच्छा है कि आरोपीका मुकदमा न्याय से होना चाहिये।

नजने तब नास्ते फौजदारीकी बह दफ्तर पढके सुनई (जिनमें जूरियों का कर्तव्य बतलाया है) और कहा-आरोपीने भी अपना विश्वास आपके ऊपर ज़रूर किया है फिर जब महोदयने सुन्य २ जजों के फैसल किये हुये मुकदमो का हवाला दिया और श्री० तिलकपर जो दफा लगाई गई थी उनका अर्थ भी पढकर सुनाया और कहा कि पत्रकारोंको इस बातका अधिकार दिया गया है कि यह सरकारके कामोंकी लघिन आलोचना कर सकें लेकिन यह अधिकार कदापि नहीं है कि यह सरकारको बे इनाम या बर नियत बतलाय आरोपीने जो कुछ मुद्रण स्वातन्त्र्यके विषयमें कहा है उसको भी विचार लेना यह बात जानने के लिये की आरोपीने लिखते समय यह देख किस नियतसे लिखे थे। आपको यह देख पढ़ने पढ़ेंगे और इस विषयपर आरोपीने जो कुछ कहा है उसपर भी ध्यान देना। (अंगरेजी अनुवाद की बात कहकर कि) आरोपी अंगरेजी अनुवादको अशुद्ध बतलाते हैं नि० गोशिका इजहार अभी आप सुनहीं चुके हैं और यह अनुवाद नि० जोशीके किये हुये भी नहीं है बल्कि हार्डिफोर्टके एक प्रतिष्ठित अनुवादकके किये हुये हैं आरोपीने अपनी कोई दुश्मनी भी अनुवादकसे नहीं दिखलाई है यह सम्भव है कि

अनुवादमें कुछ जोश कम हो गया हो इस लिये मि० तिलकने जो इसमें सुधार किया है वह ठीक मान लिया जाय। लेखककी नीयत, जाननेके लिये और कोई उपाय नहीं है सिवाय इसके कि आप उन लेखकोंको पढ़ें, यह कुछ गवाही से साबित नहीं हो सकता आरोपी यह स्वीकार कर चुका है कि उनके व्यवहारका निकल ज्वादा है अब आप अनुमान कर सकते हैं कि उन लेखकोंका प्रभाव इतने मनुष्योंपर क्या पड़ा होगा? क्योंकि उनको २॥ वंशतक किसीने नहीं समझाया होगा जैसाकि आरोपीने आपको समझाया है। गवाही से यह साबित करना कि आरोपीकी नियत धृष्टता फैलाने की थी निकल असंभव है इस विषयपर आप स्वयं अपनी बुद्धीसे विचारना और यह लेख पढ़ते समय हिदुस्तानी तर्ज और ढंगपर ध्यान रखना चाहिये अगर आपको किसी जगह जगभी सदेह मालुम पड़े तो उसका फायदा आरोपीको पहुँचना चाहिये

(कार्डकी बात कहो) आरोपीका उद्देश्य उचित मालुम होना है श्रुतिमें जगसाहबने यह कहा कि आरोपीने आपलोगोंसे प्रार्थना की है कि आप भिन्न भिन्न रूपों पर तुल्य मेरे आपसे यह प्रार्थना है कि आप सब मिलकर एकही रूपों और इस विषयपर बहुत दयाके साथ विचार करें और बाहरका कोई विषय ध्यानमें न आने दें

“इस समय ८ वक्ते १ मिनट होगये, इस समय नूरी दूसरे कनेर

में निवार करने के लिये 'चली गईं' जिसमें १ घंटा और २०^१ मिनट बैठने के बाद लौटकर अदालतमें आवैली ।

और कहा गया कि ७ अगरेजोंसे २ पारसियों की रयनही मिलती जबके पृष्ठने पर यह कहागया कि उनसब की एक रायहोगी ऐसी आशाभी नहीं है ।

जूरीका अभिप्राय ।

फोरमैन—अभियुक्त को उसपर लगाये हुये तीन आरोपों के लिये २ मत निर्दोष और ७ मत अपराधी ठहराते हैं ।

श्री० तिलक—मैं अदालतसे कुछ विनय करना चाहता हूँ
जज महोदय—वह क्या विनय है ? कहो ।

श्री० तिलक—मेरे ऊपर जो दोष लगाये गये हैं वह कानून के विरुद्ध हैं इस कारण पोछकोडके नियमसे मैं यह मुकदमा पुलबेच के सामने लेजानेकी प्रार्थना करता हूँ (यहांपर श्री० तिलकने कानून के प्रश्नोंका अलग अलग कारण बांचकर सुनाये) लेकिन जज साहबने प्रार्थना अश्वीकारकी और कहा कि फैसला सुनाने के पहिले तुम कुछ कहना चाहते हो ? इसपर श्रीयुक्त तिलक महोदयने कहा कि—

“ जुरीने यद्यपि मुझे अपराधी ठहराया है, तौभी मेरा मन मुझे ग-
वाही देता है कि मैं पूर्ण रूपसे निर्दोष हूँ । मानवी-शक्तिसे अधिक बलवान और ऊंचे दर्जेकी शक्ति संसारके सुत्र दिला रही है, ईश्वरका

ऐसा मनोगत सङ्केत दिखाई पड़ता है कि मैंने जिस कार्यके लिये प्रयत्न जारी कर रखा है उस कार्यको मेरे दुःख और सकटोंमें ही अधिक जोर मिले । ”

नामदार जजका फैसला

बाल्यागावर लिख्य इससमय तुमको सजा देने में मेरा चित्त अत्यन्त दुःख पाता है, मैं नहीं कह सकता कि मेरे चित्तको इससमय तुमको ऐसी स्थिती में देखना कैसा दुःखदायक मालूम होता है । निश्चय तुम विज्ञान तथा प्रभावशाली मनुष्य हो, यदि तुम इस विद्वता और प्रभाव को अपने देशके भलाई के वास्ते भली प्रकार काम में लाते तो तुम उन मनुष्यों को जिनके कि बीचमें तुम रहते हो अधिक सुख पहुँचानेमें कारण भूत होते । १० वर्ष पूर्व जब तुमको सजाहुँगी तब सरकारने तुम्हारे साथ अधिक दयाकी थी ।

बेढ वर्ष की सन्दी सजा भुगतनेके बाद तुम्हारी प्रतिज्ञाओं पर जो तुमने शीघ्र किई थी तुमको छोड़ दिया गया था ।

मुझको मालूम होता है कि वह मनुष्य जो तुम्हारे लेखको नियमानुसार चललावे वह खोई हुई बुद्धिका मनुष्य होगा तुम्हारे देख राज्य विरोधी हैं तुम बमके गोलों से लोगों का मारनाही अच्छा नहीं समझते हो किन्तु तुम यह समझते हो कि बम भारत की उन्नति के लिये पैदा हुआ है जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि वह कोई खोई हुई

बुद्धिका मनुष्य होगा जो यह विचार करेगा कि 'यमका उन्मेषा करना कायदेके अनुसार है और यह भी एक खार्इ हुई बुद्धिका मनुष्य होगा जो तुम्हारे देखते राज बिद्रोही न बसलगा ।

इन पिछले १० वर्ष में तुम्हारी राज करने वाली जानि से घृणा गई नहीं । आर यह देख प्रति सनाहकी सम्पामें तुम ने बड़ी स्थतप्रता क साथ लिखा । जिसके १५ दिवस पिछे दो निरग्रावि नी अवलाओं की हत्या हुई । तुम वमको नराजकतामें योग्यदग समझते हो ऐसा सम्प्राक देगके लिये कष्टशयक है मुझे तुमको सना करने में बहुत रज मालुम होता है मैंने बड़ी गभीरताई से विचार कर लिया है कि अगर तुम अराधी ठहगये जाय तो तुमको क्या सजा देनी चाहिये ? और मैंने जो सजा देना निश्चयकी है यह बहुत हलकी है अपने कर्त्तव्य और तुम्हारे अपराधको सोचकर मैं इससे हलकी सजा नहीं दे सकता और मैं स्याल करता हू तुम्हारी नैसी स्थिती वाले आमीको वह सजा न्यायके अनुसार होगी ।

तुम्हारे पहले अपराधमें तुम यावजीवन काले पानी भेजे जासकते है मैंने विचारकर लिया है कि तुमको कालापानी भेजना चाहिय या जेलखाने तुम्हारी अवस्था और दशावा को । विचार कर मैं स्याल करता हू कि यह बहुत ही उत्तम बात है कि शांति । खनेके लिये और

उस देशकी उन्नति के वास्तु जिसको कि तुम प्यारकाने का दया करते हो कुछ समयके लिये उसके बाहर भेज दिये जाव ।

वर्षा १७४ में मुझे तुमको मिन्दगी भरक लिये देश निकाला देनेका अधिकार है । परंतु मैं तुम्हारे प्रथमके दो अपराधों पर तीन तीन वर्ष के लिये अर्थात् दोनों आरोपों पर ६ वर्ष के लिये देश निकाश, तीसरे आरोप में एक हजार रुपया जुर्माना और चौथे अपराधमें तुमको थिरकुल छोड़े देता हूँ ।

श्रीयुत तिलककी अपील

शनिवार ता० १ अगस्त १९०८ को

१ अर्जी एडवोकेट जनरल महोदयकी सेवामें मि० बी० रावबाया अटरना पटला हाईकोर्ट बम्बई ने श्रीयुत तिलककी तरफसे भेजी थी जिसमें प्रार्थना की था कि हाईकोर्टके एमर्जेंडेटर्स पेटेन्ट की धारा २६ एक्ट २४—२९ बयान १०४ के अनुसार एक मार्टिफिकेट इन विषयका आपदेदे कि मज महोदय मि० जस्टिस बायर ने निम्नलिखित (सवयाकुल) भूँछें इस मुकदमें के फैसला करने में कीं हैं और जुरीको कुछ बहकसायी है ।

(१) जज महोदयने कैदीकी जमानत देनेसे इनकार किया और कहाकि अगर मैं इसका मयब वगुलऊंगा तो कैदीको उससे नुकसान पहुँचागा यह उल्लेख मूलकी क्योंकि पसलमें उसके जाहिर करनेमें ऐसा नुकसान पैदीको न पहुँचता जैसा कि अब पहुँचा ।

बुद्धिका मनुष्य होगा जो यह विचार
करना कायदेके अनुसार है और वह भी ए
होगा जो तुम्हारे लेखको राज बिद्रोही न घस

इन पिछले १० वर्षों में तुम्हारी राज का
गई नहीं। और यह लेख प्रति सनाहकी
स्वतंत्रता के साथ लिखा। जिसके १९ दि
नी अवलामों की हत्या हुई। तुम घमको धारण
ऐसा सम्भावक देशके छिने कष्टायक है तुम्हें
बहुत रंज मालूम होता है मैंने वही गभीरताई
है कि अगर तुम अपराधी ठहराये जाय तो तुमको
और मैंने जो सजा देना निश्चयकई यह बहुत
और तुम्हारे अपराधको सोचकर मैं इसमें
और मैं संयास करता हूँ तुम्हारी ऐसी स्थि
न्यायके अनुसार होगा।

तुम्हारे पहले अपराधमें तुम याद
मैंने विचारकर लिया है कि। तुम
जेल्खाने तुम्हारी अवस्था और
करता हूँ कि यह बहुत ही सत्तम व

मेजना। चा
कर मैं
खनेके छिपे

(१२८)

उस देशकी उन्नति के वास्ते जिसको कि तुम परफने का दाया
करते हो कुछ समयके लिये उसके बाहर भेज दिये नाव ।

दफा १०४ में मुझे तुमको जिन्दगी भरक लिये देश निकाला
कानून अधिकार है । परंतु मैं तुम्हारे प्रथमके दो अपराधों पर तीन
तीन वर्ष के लिये अर्थात् दोनों आरोपों पर ६ वर्ष के देश
निकाश, तीसरे अपराध में एक हजार रुपया जुर्माना
अपराधमें तुमको बिलकुल छोडे देताहूँ ।

श्रीयुत तिलककी अपील

शनिवार ता० १ अगस्त १९०८ को

१. श्री एडवोकेट जनरल महोदयकी सेवामें मि० बी०
अटवनी एटला सर्वोर्टे वगैरह ने श्रीयुत तिलककी तरफसे
निम्नमें प्रार्थना की थी कि हा० के एमॅन्ड्डेडर्टे पेन्ट

२६, एक्ट, २४—२१ वय ०४ के अनुसार एक सत्र

इस विषयका माफदेहें

दिए जाय (सब्याकुल)

आप माफिके कुछ न

२६, एक्ट, २४—२१ वय ०४ के अनुसार एक सत्र

इस विषयका माफदेहें

दिए जाय (सब्याकुल)

आप माफिके कुछ न

नाटिस बाहर

पैसल करने

नहीं

नहीं

नहीं

नहीं

नहीं

नहीं

(२) जन महोदयके खास जूरी नियत करने में कैदने इस वजह से विरोध कियाथा कि जूरीमें ऐसे आदमी होने चाहिये जो मराठी भाषा जानतेहों और मेरे लेखों को समझकर ठीक रायदेसकें । लेकिन जन महोदयने उसके कहनेकी कुछ परवाहनकी ।

(३) जन महोदयने इन १६ और १७ नम्बरवाले दोनों मुकदमोंको एकहीसाथ मिलादेनेमें मूलकी क्योंकि यहदोनों मुकदमें एक दूसरे से अलगथे जन महोदयने चारों आरोपोंमेंसे एक आरोपपर बे कसूर ठहगकर तीनों आरोपोंपर एक साथही मुकदमा खलना चाह्य लेकिन एडवोकेट जनरल महोदयने प्रार्थनाकी कि जबतक मुकदमा खतम नहो जाय इस चौथे आरोपकी बाबत कुछ हुक्म न सुनया जाय मेरी इच्छा आरोपीपर तीनहो आरोप लगानेकी है यद्यपि मुझे चारों आरोपोंके खलाने का अधिकार है तबभी मैं यह वापदा करताहूँ कि चौथा आरोप आरोपी पर नहीं लगाऊँगा । अन्तमें जन महोदने इन दोनों मुकदमें के तीनों आरोपों पर एकसाथही मुकदमा खलाने का हुक्म दिया ।

(४) यह आरोप (जो आरोपी पर लगाये गये हैं) उन शब्दों के ऊपर नहीं लगायेगये जो आरोपीने लिखेथे बल्कि उनके अंगरेजी अनुवाद के आधार पर लगाये गये हैं न। बिल्कुल अशुद्ध थे इस लिये मुकदमों की तमाम कार्यवाही नाजायज होगई ।

मालती अत्तर

और

मधु मालती

इन अत्तरोंमें जोकि पदार्थ विद्याके नये ढंगसे तैयार किये गये हैं सुगंधि देरतक रहती है और मनको लुमाती है फूलोंके माफिक दूरतक इसकी खुशबू फैलजाती है यह बाजारके सब अत्तरोंसे बढ़िया काममें लाने योग्य है । चौथाई तोलेकी बढ़िया एक शीशी छकड़ीके बक्समें बन्दकी हुईका दाम १) डाकमें सहज जुदा. दाम नगदवा बी पी द्वारा

सुगंधी अत्तर और कुन्तल विहार तेल
क
शोधक और बनानेवाके
एकही

दि लाडकेमिकॅल वर्क्स नम्बर ४ बम्बईके
बनाये हुये सब अत्तर भी यहां मिलते हैं ।

मिलनका पत्ता—सोक एजेंट मराठा एजन्सी
नम्बर ४ बम्बई

दि लाडेकामिकेल वेक्स नम्बर ४ बम्बई

की इजादकरी जिन्स

लैमजूस, गिलसपीन, भानू, बालोंमें लगानेका जसमदन तेल, बालोंमें
लगानेका नरियलकसेल, बालोंमें लगानेका माछसीतेल, कुत्तलबहार
कोस्मेटिक [यनाहुआमोम] मस्क, लवेडर, याम, मैथल, पुस्त
सुदार, फूल

अत्तर—माछ्सी, सुरंगी, चम्पाका, कुशुमबिलास, राजबिलास,
गुलाब यौरे, यौरे

बम्बई सुगंधी वेक्सका—सुरंगी तेल (=) बेसिल दाम-

नगद या बी पी. से भाव पत्रद्वारा पूछ लीयिये,

साल एजन्ट—मराठा एजेंसी नम्बर ४ बम्बई
स्वदेशी टोपी छातीके बनानेवाले और स्वदेशी
न के आढ़ती

दि लाडकेमिकेल वक्स नम्बर ४ बम्बई

भानू तेल

यह खास कर घाल और दिमाग के लिये तैयार किया गया है। अगर आपको खूबसूरत रहना है तो वालोंका जरूर ख्याल रखिये क्यों कि यह जिस्मका गहना है। भानू ही एक ऐसा अच्छा तेल है जो घालों की जड़ोंको खूब मजबूत करके दिमागको ज्यादा तर जोर पहुंचाता है, यह शिरके मैल कुचैल को निकाल कर घालों को बड़ी तेजी और मजबूती से बढ़ाता है भानू विद्यार्थी, नौजवान औरतें और जिन लोगोंके घाल गिर जाते हों उनके लिये बहुत ही फायदेमन्द है इसको सब डाक्टरों ने गुण दायक बतलाया है।

मलन का पैता—सोल एन्ट मराठा एजेंसी नम्बर ४ बम्बई

केसर, कस्तूरी अम्बर, आदि देवी बनस्पतियों की बनी.

रायल टानिक पिल्स.

यह गोठियां प्रत्येक प्रकारकी निर्बलता दूरकर पुनर्भव देती है तथा गई जवानी फिर छैठ आती है. स्पम और पेशाबमें बाधबदकर नीर्य विकारका गुप्त दरद मिटाती है। खून साफ कर पाश्च शक्ति को बढ़ाकर धातुको पुष्टकर बढ देती है स्त्रियोंके अनियमित धातुको रोक निरोगकर गर्भस्थानको सुधारती है यह "रायल टानिक पिल्स" खून बढ़ाकर शरीरको मल्लिष्ट करती है भूक बढ़ती है शरीरकी रसा करती है यही नहीं तीन दिन खानेहीसे अपना अमृत शक्ति दिख जाती है इसी तरह शिरदर्द, संधिमें टूटन, आंखेचकरमा, दम आदिको मार भेगाती है और पढ़नेवाले विद्यार्थियोंका मग्न पुष्टकर स्मरण शक्तिको बढ़ाती है और सदा चैतन्य रखती है। किमत १० गोठियोंकी शीशी फा १।)। रजिस्टर नम्बर १८० जांचकर जेना नकली माउसे हुस्यार रहना।

पता:—गोविन्दजी दामोदर कम्पनी थोक तथा फुटकर बेचने वाले ९७ नई हनुमान गल्ली, बम्बई

(९) जज महोदयने उन तीनों आरोपोंका (जिनका एक दूसरेसे सम्बंधभी नहीं था) एक साथ फैसला करने में जाने फौजदारी की दफा २९६ के विरुद्ध किया है और विशेषकर ऐसे अवसर पर जबकि आरोपी ने भी इस पर आपत्तिकी थी ।

(६) जज महोदयने जाने फौजदारी दफे २७३ की परवाह न करके चारों आरोपों में से एक आरोपको मुकदमा आरम्भ होने के पहलेही रोकलेनेका हुक्म दिया ।

(७) जज महोदयने सरकारी वकीलको पहला मुकदमा जिसमें अभियुक्तको १२४ ए धारा वाले अपराधर्म सजा हो चुकी थी साबित करने के लिये परवानगी देदी । यह इस वजहसे किया गया था जिसमें कि मन महोदय अभियुक्तको सख्त सजा देसकें जो जज महोदयके फैसले के शब्दों से साफ जाहिर है ।

(८) अगर यह मानभी लिया जाय कि यह दोनों मुकदमे इस वजहसे मिलादिये गये हैं कि यह सब एक ही मामला है [असलमें आरोपी की प्रार्थना के अनुसार यह सब एक मामला नहीं है] तभी जज महोदयने हर आरोप पर जुदी जुदी सजा करनेमें कानून के विरुद्ध किया है

(९) जज महोदयने तमाम साबूत देनेका बोझभी आरोपी के ऊपर ही रख दिया ।

(१०) जाते फौजदारी की दफा १९६ के अनुसार इस मुकदमे

को खानेके लिये सुभा सरकारकी भावभीनी काफ़ी तौर से नसी
ली गई थी ।

(११) जज महोदयने समाधी बहुत संकटही है ।

(१२) जज म० को यह चाहिये था कि जूरी को यह
समझा देते कि यह लेख अंगरेजी अखबारवालों के उन लेखों के
उत्तरमें था जिनमें कि हिन्दुस्तानी लोगों तथा अंगुओं पर दोष आये
गये थे ।

(१३) जज म० ने और बहुत-सी झुटियाँ जूरी को समझानेमें
की हैं जिनसे यह कहा जासकता है कि अगर जज महोदयने जूरी को
बहकाया न होता तो कदापि अभियुक्त के विरुद्ध प्रतीक बहुत
न होता ।

(१४) आरोपी की नियत (लिखते समयकी) यह कि करने
के लिये " केसरी " के और कई अंक सबूतमें पेशकिय गये थे
और उनपर जज महोदयने जूरी को समझाया था कि इन लेखों
से सरकार की तरफ घृणा बढ़ती है इसी कारण जूरी ने रायदेतेसमय
इनमेंसे प्रत्येक लेखको (जो किसी प्रकार आरोपमें शामिल नहीं
थे) ध्यानमें रखकर अभियुक्तको अपराधी ठहराया इस लेखकी
माध्यत जुरिफ़े यह विचारना चाहिये था कि इन लेखोंसे असलमें
कुछ हानिहुई है या केवल आरोपी ने प्रयत्न ही किया है । यदि
उसने प्रयत्नही किया है तो ऐसी दशा में भी कोई मजबूती समा
देगा किसी कि असल कसूर करनेमें दी जाती ।

२१३

इनके सिवाय जन म० की बहुतसी औरों में मुँह बनाई गई।
कानूनके अनुसार इस ऊपर की अर्जी के साथ एक सर्टिफिकेट
पि० जेफरि बपटिस्टा बार एटर्नी का सही किया हुआ नया
किया गया था जिसमें कि यह लिखा था कि मम महोदयने अपने
कैसके में कुछ गतिवा की हैं और जूरी को कुछ सहकामा भी है।

एडवोकेट जनरल महोदयका जवाब

मह पत्र उसी तारीखका लिखा हुआ मि० बी राघवके नाम पहुचा
इसमें यह लिखा हुआ था कि मैं लेटर्स पेन्ट की २६ वीं धाराके
अनुसार कोई सर्टिफिकेट जिस प्रकार का तुम मांगने हो नही दे सकना
क्योंकि मेरी रायमें मनसाइयने अपने कैसकेमें ऐसी कोई बातें नहीं
छोड़ी है जिसपर कि आगे कुछ विचार किया जाय और न जन
सहोदयने जूरीको किसी प्रकार सहकामाही है नैसा कि तुम लिखते हो।

मंगलवार ता० २५ अगस्त

एडवोकेट जनरल महोदयके दरखास्त नामजूर करने के साथ चीफ
जस्टिस मि० स्कॉट और मि० जस्टिस मैजुलर की इमलस बम्बई
हाईकोर्ट में धीपुत लिखक की ओरसे यह प्रार्थना की गई कि इस
मुकदमे में कुछ कानूनी मुटिया रह गई हैं इससे इसकी प्रिवीकांसिल में
भरील करने की आज्ञा दी जावे।

मि० जेफरिस्टा (जो धी० लिखककी ओरसे बकील थे) ने प्रार्थना
की कि यह मुकदमा प्रिवीकांसिल में जानेके योग्य है।

जज महोदय मि० जस्टिस डीवरने और बहुत सी जजों को है (जो हम पत्रकों को पहले बता चुके हैं) इन मूलों को स्पष्टतः अदालत के दरशाया गया, जिसपर चीफ जस्टिस महोदयने हुक्म दिया कि सरकार को यह बतलाना चाहिये कि कैदी को क्यों न इसमातका सर्टिफिकेट दे दिया जाय कि यह मुकदमा प्रिवीकौंसिलमें जाने योग्य है। क्योंकि इसमें सब आरोपों को एकही साथ संज्ञित करके विचार किया गया और एक लेखके लिये जुदे जुदे दण्ड दिये गये हैं इत्यादि और यह भी कहा कि जुरीके बहकाने की वास्तविक विचार धरके हम उत्तर देंगे।

बुधवार और वृहस्पतिवार ता० २-३ सितम्बर
आज फिर उन्हीं दो जज महोदयों के इन्वेलस में यह मामला पेश किया गया। श्रीयुक्त तिलक के बकीलने कहा, कि इस मुकदमे की कार्यवाही नियमानुसार नहीं हुई है इसलिये इसमें अभियुक्त के साथ अन्याय हुआ है अगर आरोपों का मिछा देना बेकार्यदा है तो ऐसा करना अदालत के अधिकार से बाहर था और मि० जस्टिस फैरन वाले फैसले के अनुसार हर मुकदमा जो अदालतने अपने अधिकारके विरुद्ध किया हो, अथवा अन्याय किया हो, या कानून की कोई कार्यवाही रह गई हो, तो ऐसी दालतमें मुकदमा प्रिवीकौंसिलमें ले जाने के योग्य है।

सरकारी वकील मि० रोवर्टसनने कहाँ कि जबतक यह जाहिर ना-
 किया गया कि अभियुक्त के साथ महा अन्याय हुआ है केवल भाइन
 संघी नुटियां होनेसेहा प्रिवीकौंसिलमें अपील नहीं होसकती ।
 लॉर्ड हॉलसबरीके फैसले के अनुसार जबतक कोई मुकदमा पूर्ण
 तौरसे कानून विरुद्ध न हुआहो तबतक उसकी अपील नहीं होसकती ।
 सजाके बढ़ाने घटानेके लिये प्रिवीकौंसिलमें अपील नहीं होती इस समय
 यह सावित करना चाहिये कि अभियुक्त पर स्पष्ट महा अन्याय हुआहै
 मि० वैपटिस्ट्राने वही शब्द जो पहले कहे थे उत्तर में कहे । इस
 समय जज महोदयाने फैसले को मुलतबी रक्खा ।

मंगलवार ता०८ सितम्बर ०८

छीजिये आज उड़ी दो जज साहबोंने फैसला सुनादिया कि—
 अभियुक्त के साथ इस मुकदमे में बहुत ध्यानदेने योग्य अन्याय
 नहीं हुआहै और इस कारण इस मुकदमे की अपील प्रिवीकौंसिलमें
 होने की कुछ आवश्यकता नहीं जान पड़ती ।

जबलपुर सी० पी० के सुप्रसिद्ध चिकित्सक पांडय
 लक्ष्मीनारायण राजवैद्य श्री धन्वतरि औषधालय गजीपुरा जबलपुर
 की बनाई औषधियां अमृत का गुण रखती हैं एक बार अवश्य
 परीक्षा कीजिये ।

भगवानसे विनय

स्वामी

दुख मारतवरी पै करके कैरा प्रभु जलये इनको सुख तो सही ।
हुआ दुखसे निकल रही जान निकल कुछ अप्रत भूटी पिछ तो
सही ॥ टेक ॥

सब भास्तवासी अनाथ दुखी तुही नाथ इहें अपना तो सही ।
अनुराग अमागोंके मनसे गया उत्साहकी नींव जमा तो सही ॥ सब
ज्ञानकी मूल गलीसी गये दया दृष्टिसे राह बतातो सही । उपकार
परस्पर करते नहीं अकारकी बानि सुना तो सही ॥ दोहा ॥ यतन
कहत हैं बदनको, नहीं त्यागत्रयभिमानी ॥ राम देव चउता नहीं, स्वार्थ
बश अज्ञान ॥ चैत्रोला ॥ स्वार्थ बश अज्ञान प्रभु जी-मृग तृष्णासे
मूले ॥ घरकर घन मण्डार त्यागके तरे पंछे चूले ॥ निरमल जलका
करे नियदर छूटे हाथ बबूले ॥ फैशन बना बिदेशी अपना नहीं समालो
फूले ॥ टूट ॥ बने दास हुलास विनता मंदी इहें देशकी ओर-सुक
तो सही ॥ १ ॥

कभी सिंह थे सुस्तीसे भेहे मये बछ वीर्यकी याद दिख तो सही ।
। गयी बुद्धि कुबुद्धि समाप्त रही प्रभु आलस नींद हटातो सही । कोई
जीभके बश हो अमन्य भले कोई भेषन शुद्ध चखातो सही । बलि-
दानके मंत्रे हो घास चरे इन्हें सोतेसे नाथ जगातो सही ॥ दोहा ॥

मारी मारी दुख भरी, फिरे तड़पती गाय ॥ बिना आपके हे प्रभु, को
करिसकै सहाय ॥ चौबोला ॥ कोकरिसकै सहाय विदेशी आकर
मौम उठावें भारत वासी मुठी अन्नको सौतौ हाहा खावें ॥ मरें भू
कसे बिना अन्नके गैया जार चबावें । तिसपरभी बगली बताकर
भेष्टिल्येन विनावें ॥ दूट ॥ अति आरत भारत योही हुमा इसे
छत्तीसे अबमी छा तो सही ॥ २ ॥

पुनि प्रेगने देश मथन सा किया यह दीनोंकर शूल मिटतो सही
। इन घोर दुकालोंसे अब तो बचा निज दमोंको धीर घरातो सही
॥ अनुकूल समय पैही वृष्टि करें यह इन्द्रको हुक्म सुना तो सही
। इस उनके बगीचेको सम्म करे किसी मालीको चेत करतो सही
॥ दोहा ॥ भारतवासी सुस्त हो काटें सुखकी मूल, मूल दुखको सुख
छे, फिरे फाँकते घूल ॥ चौबोला ॥ फिरे फाँकते घूल घमण्डी ठोकरसे
टुकरावें ॥ एक टुक या दो अक्षरहित सौ सौ नाच नचावें ॥ हानि
लाम अना नहि समझें तनका मांस कटावें ॥ आपसमें मेंढेसे छढते
ताली गैर बनवें ॥ दूट ॥ मझवारमें भारत नैया फँसी प्रभु हाँठ
दयाका उठा तो सही ॥ ३ ॥

निज देशसे प्रेम तनक न प्रभूपर दुखमें मरना सिखा तो सही ।
दुख सहतेही सैकड़ों वर्ष गये अब माग्यका चक्र घुमा तो सही ॥
योही भूले मटकते बहकते फिरे निज कोमल हाँथ गहा तो सही ।

दुसरे दीनोंको कैसे भी उनके मित्र प्रभु दीनोंका नाथ कहा तो सही ।
 दो० ॥ सर्व शक्ति है आपकी, करते वेद बखान ॥ समी प्रकीर्णित आपसे,
 दीनबन्धु भगवान् ॥ चौमोछ ॥ दीनबन्धु भगवान् देशका अब तो मंगा
 अंगादो ॥ आलस बेरखुशामद सुस्ती इनको दूर भगा दो ॥ पुरुषारथ
 ओर बुद्धि षट् कोई ऐसा मन्त्र सिखादो ॥ बीच धारमें उलझ गयी प्रभु
 नैया पार छादो ॥ टूट ॥ छेराछाँका प्रेम समुद्र क्षिपे प्रभु इसमें
 बैठ नहीं तो सही ॥ ४ ॥

स्वदेशी घेत

हिन्दकी दौलत जो यारो, हिन्दके अन्दर रहे । मिले सबको सुख
 कोई भी, हमसे दुख नहि सहे ॥ मत विदेशी माछ लेशो, लाछ
 हो सस्ता चहे । ना उन्हें छूना जो, वेदामों कोई देने, कहे ॥ एकसे
 एक चीजें नई, बनती हैं हिन्दुस्थानमें । फिर उन्हींसे तुम निकाछो,
 काम सब हर आनमें ॥ अब तो हुई उन्नति मिलोकी, चढ़े नो
 सामान छे । प्रेमसे प्रीति बढ़ाओ, यही शिक्षा मानलो ॥

स्वदेशी गजल

अब तो विदेशी माछ भगाना नहीं अच्छा । निज देश भलसे
 हट जाना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥ बनता है अपने देशमें हर किसका
 । हमको विदेशी बख सजाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥ जिसमें

पदे है रक्त औ हृष्टी गऊकी हृत्प । ऐसी विदेशी खाँकको खाना नहीं
 अच्छ ॥ २ ॥ जो हैं नृशंस दुष्ट नर निज देशके देखी । उनसे
 मुहम्मद तार लगाना नहीं अच्छ ॥ ३ ॥ जन्मे हैं हम इस देशमें
 पल्लते हैं हम यही निज देशका उपकार मुखना नहीं अच्छ ॥ ४ ॥
 देखो मरे हैं भूखसे निज देशके बासी । उनका कहो यह कष्ट नागाना
 नहीं अच्छ ॥ ५ ॥ खाते हैं जो भर पेट भखे देख भाईको । उनके
 लिये यह पाप कमाना नहीं अच्छ ॥ ६ ॥ करते रहो धन प्राणसे
 निज देश भलाई । इस पुण्य कमानेसे अवाना नहीं अच्छ ॥ ७ ॥
 जातहै वक्त हाथसे फिर कर नहीं आता । आया हुआ यह वक्त गैवाना
 नहीं अच्छ ॥ ८ ॥ देखो पितृमह भीष्म अर्जुन क्या सिखा गये ।
 करके प्रतिज्ञा फेर फिर जाना नहीं अच्छ ॥ ९ ॥ त्यागी प्रतिज्ञा
 मूखसे करके तो क्या हुआ । पेतो अभी अब इसमें पछताना नहीं
 अच्छ ॥ १० ॥ यह है समय अब धर्मका करिये जो हो सके ।
 करिये प्रतिज्ञा फेर लगाना नहीं अच्छ ॥ ११ ॥ त्यागा है जिसने
 जन्म पर उपकारके लिये । उनके वचनको टार दुखाना नहीं अच्छ
 ॥ १२ ॥ फिरते हैं देश देश लाखों दुख सहते हैं । उनकी मुक्तिरति
 क्यों मला गाना नहीं अच्छ ॥ १३ ॥ करता रहै कर जोरके बिनती
 यही शिवदास । अब तो दया कर नाथ ! सताना नहीं अच्छ ॥ १४ ॥

अन्योक्ति सप्त क

आर्मा निहीन निशि का न पना रहा है । होके हताश तम भी अब
 आरहा है । आई चपा दिन फरेदय आरहा है । हे पम ! क्यों अज
 तू सुरक्षा रहा है । १ । शार्दूल वृन्द ! यदि आपसमें छडोगे । हो खड सेड
 इस भूतल पे पडोगे । होंगे मदांघ फिर तो गज यूय भाई । त्यागो
 सुमित्र इससे निजकी छडि । २ । प्रारब्धने रमि हुआ यदि राहुमास
 होना नहीं तदपि हे कमलो उदास । बैरी विनाश करके, कारकी
 प्रभासे । देगा सुदर्श तुमको सविता त्वरासे । ३ । हे कौश वृन्द ! तुम
 क्यों मनुनारि होते । आजीविका निज वृथा शठ हो चुकेते । कुछो
 विवेक तमि जो रिपुता रखोगे । आस्वाद शीघ्र इसका तुम तो चखोगे
 ४ । पीयूष वृक्ष पय भी तुमको पिलते । तौ भी सुजग तुम हो पिपही बरते
 कुरो । नहीं यदि हलाहलको तजोगे । प्राणांत देव सहके तुमही मरेगे ।
 ५ । हे गर्दभो ! वृषभ हैं हलके चलाते । होनीच नित्य तुम तत्कृत भनखाते
 तौ भी उन्हें दुष्टियां तुमही लगाते । क्या पामरो तुम नहीं इससे
 छजाते । ६ । जगो भृगेन्द्र गण हैं सुखला मनोमें भागो भृगाल अब तो
 न रहो बनोमें । आलस्यसे यदि वहा फिर भी रहोगे । पीछा सुगारि
 नखकी तुमही सहोगे । ७

जनेनी जन्म भूमि—ब्रह्मभूमिको ईशदेव सर्व, पूजा दम्पति मन चितलाय
 तन मन धनसबउसपर अर्पण, केंना चाहिये अति हर्षाय ॥ १ ॥ जन्म-
 भूमि स्वर्गादपि उत्तम, हियमें इसको खूब धरो ॥ दृढ़तासे कर्त्तव्यकरो निज, मातृ
 भूमिके लिये मरो ॥ २ ॥ दान शूरहो यदपि विभव विमल तापसी तपोधनी
 विधि युतकर्म विभव रहेवे, नृपतापसिनर मुकुटमनी ॥ ३ ॥ निज कर्त्तव्य
 करारे पनसे और दलको नीचाकरमो । शुचि आदर्श दिखाय मनुजको
 सहपाता सुरेपुरसो ॥ ४ ॥ तपकरने वाले शुचि तापस, निज
 हित भोग साधते हाथ । दाता बही कहाता जगमें जो देता है धनको पाय
 ॥ ५ ॥ ये सब परमस्वार्थी जगमें निज मोचन हित करते ध्यान । शूर
 सर्व औरोंकोतारें इससे उनका मोनमोहने ॥ ६ ॥ देश कार्य करते २ जो,
 तन देता है तन अपना । वही तापसी कहलाता है, नहिं माला पहता
 जपना ॥ ७ ॥ शत्रुपक्षके गुप्त भेदको भो करता योगी साधन । बालभरण
 सम वह धर्मकेगी जलथल हो चाहे कानन ॥ ८ ॥ शूरवीर जो देशकार्य
 हित, कर देता सिर अम्बुज दान । सब प्रकारके कष्ट दुःख वह सह
 लेता है फूल समान ॥ ९ ॥ ऐसेयाज्ञा योगदानसे स्नय नहीं तरते
 भवसे । दासपक्षसे देशमात्रोंको छेछेते और करते ॥ १० ॥ पुण्यवान
 भगवान साधु नहिं इनकी समता कर सकने ॥ सदा तापसी योगी
 दानी भी इनसे नहिं बढ़ सकते ॥ ११ ॥ पुण्य भूमि है वही जगतमें
 जह माता हित देते जान । तनमन धन कर्त्तव्य शोखता, का सर्वस
 कर देते दान ॥ १२ ॥ नननी जन्मभूमि मेरी यह, सबको यह रटना
 चाहिये । माताभग्न सब चुकता करके, माणिक भीर बना चाहिये ॥ १३ ॥

स्त्री देहसत्त्व

इस ग्रंथमें स्त्रीके दायीर सम्बन्धी अनेक तत्वोंका वर्णन किया गया है विशेष करके स्त्री शिक्षा, स्त्री उपदेश, युवावस्था का वर्णन, अतुरक्षा, गर्भधारणविधि, गर्भरक्षा, सन्तानोत्पत्ति, सन्तानका पालन पोषण, धात्री विद्या और धन्या चिकित्सा आदि अनेक विषय वर्णित हैं। मू० ॥१॥ भा० अ० म० माफ। पता—

जी वी मित्र एण्ड कम्पनी

चौमुखी पुल—मुरादाबाद

पारेकी अँगूठी।



इसको धारण करनेसे बयासीए, झाँझी, बरुव, सब प्रकारके पात रोग, साँसी, श्वास, हिजकी, हृदयशूल, कुक्षिशूल, धातुदौर्बल्यता, प्रमेह, स्त्रियोंके समस्त रोग, बालकोंके समस्त रोग

नष्ट होते हैं। मू० अँगूठी ॥१॥ भा०, अ० म० =)

पता—जी चौमुखी केमिकेलबक्स—मुरादाबाद U, P

ॐ ओ३म् ॐ

दयानन्दचरित्र

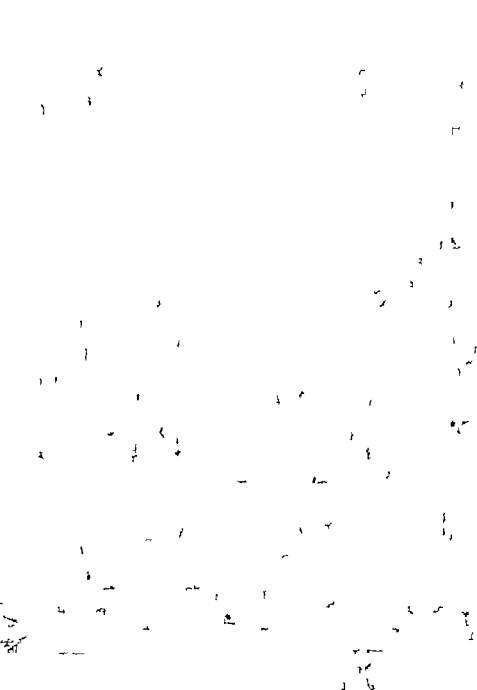
मुरादाबाद निवासी
जगन्नाथदास सकलित

जिसको

शिवलाल गणेशीलाल ने
अपने “लक्ष्मीनारायण” प्रेस
मुरादाबाद मे

छपवाकर प्रकाशित किया

द्वितीयावृत्ति मन् १९६६



परमात्मोजयति ॥ ॐ दयानन्दचरित्र ॐ

इश्वरस्तुति ।

आमाहू शरण तुम्हारी भगवानादा मुनको कृपासे तुम अभयदान ॥
अपराधोंकी मेरे है न गिनती । करताहू सेवाकी तुम से चिन्ती ॥
नहि धर्म अधर्मका ज्ञान मुझको । है एक तेराही ध्यान मुनको ॥२॥
स्वामी है तुई मैं दास तेरा । क्योंकर न करेगो पार बेड़ा ॥३॥
सत्शास्त्र तुम्हें कहेंतैं कृपालु । क्यों मुनपै दिया नही देयालु ॥४॥
रहताहू तेराही राते दिन नाम । है तेरो सिवा किसीसे क्या काम ॥५॥
शिव विष्णु तेरेही हैं चपासक । भक्तोंका सुई है दुःख नाशक ॥६॥
ज्ञान अपना मेरे हृदयमें भरदो । भव सिंधुसे शीघ्र पार करदो ॥७॥
याचक न बनू कभी किसीका । तेराही रहै सदा भरोसा ॥८॥
नहि औरको मैं चपास्य जानू । एक मुनकोही अपना इष्टमानू ॥९॥
सन्मार्ग में तुम मुझ चलाया । दुष्कर्मोंसे मम मेरा हटाओ ॥१०॥

कालिकालवर्णन ।

कालिका लने आगमन किया है । सदम समूह हर लिया है ॥ १ ॥

(२)

विद्याकी हुई है जवसे जानि । सद्धर्मको, होगई है ग्लानि ॥२॥
 चौदोंका हुआ जो राज्य यां पर । गये धर्मकी मूल से हिसाकर ॥३॥
 यमनोंका यही जो नो रोग्य भाया । सद्धर्म उन्हेंने सध मिठाया ॥४॥
 बळ करके चलाया धर्म अपना । निर्बलसे कराया कर्म अपना ॥५॥
 धन देके किसीका छेड़िया धर्म । करने न दिया किसीको सरकर्म ॥६॥
 ईश्वर ने कृपाकी, दृष्टि, फिरकी । इषीपी ये नाब सो पकड़ली ॥७॥
 अंग्रेजों को यांका नृप अनाया । छीवछीव मजापे भिनकी छाया ॥८॥
 मतेसे नहीं देव है किसी के । जो चाहे करे छिखे, सुनावें ॥९॥
 मतेमें न किसी के, हाथ ढाके । हितसे हमें छुत समान पालें ॥१०॥
 फिर यमनोंने फिर जो कुछ चठाया । ईश्वरने उन्हें यही दबाया ॥११॥
 किया इन्द्रमणीने, धनका खडन । निजमतका दिखाया हमको मदन ॥१२॥
 अब धरये हुआ जो एक मतिमदानाम चसका मसिद्ध है दयानंद ॥१३॥
 ज्ञानवृत्तको न दीया, सत्त्वसत्त्वका । अमिमात्रयाजिसको वेदमत्तका ॥१४॥
 सद्धर्मका, यह हुआ है नाशक । अज्ञानकी वद हुआ मकासक ॥१५॥
 विद्या तुम्हें चसकी में दिखाऊ । छेड़ चसके से ही चसे हराऊ ॥१६॥
 देखो, दयानंद का पराजय । जिससे, दयानंदियो हो है मय ॥१७॥
 स्वायीजीकी वां अशुद्धियां हैं । साथ चनके हमारी युक्तियहिं ॥१८॥
 संतोंप चसीका जानो इसकी । दयानंद धर्म माना इसको ॥१९॥

१०॥

(१)

शत्रुकायों सत्य मान लीजें । और घट चुकका स्यागदीजें ॥११॥
 सत्यार्थों का हिय क्यों लिखा है । यंत्रों अर्घमकी लिखा है ॥१२॥
 गोधन जो लिखा कहो तो भाई स्वामीजीकी कुछ देया भी आई ॥१३॥
 सौ बार लिखी मंदोंकी मुक्ति । सुखी फिर उन्हें ये कौन मुक्ति ॥१४॥
 मुक्तिसे लिखी जो लौट आना । श्रुष्यों को लिखा मृपाही जाना ॥१५॥
 'काहिय' तो ये वांछें बुद्धिकी है । स्वामीजीने या अशुद्धि की है ॥१६॥
 मुक्तों के लिये हैं लोक सारों । लिखते हैं ये स्वामी भी तुम्हार ॥१७॥
 फिर कहने लगे वह बात वैसी । कोई न कहै कदापि जैसी ॥१८॥
 मुक्तिमें न हो जो लौट माना हो भीड़का पांकी क्या ठिकाना ॥१९॥
 स्वामीजीको छाया कैसा भटान । दस बुद्धिपै रोवें मयों न विद्वान ॥२०॥
 मुक्तिसे नहीं प्रदापि बंधन । सदृशास्र करे हैं इसका ग्रहण ॥२१॥
 विद्वानोंका त्रास देमेंता है । ह्यास आदि को कमोक्तों लिखा है ॥२२॥
 मृत पुरुषोंका श्राद्ध पहिले माना । फिर शास्त्र विरुद्ध उसको जाना ॥२३॥
 दशपुरुषोंसे जो नियोग बतलाया । फिर और अर्घमसे क्यों धर राखें ॥२४॥

२६-सत्यार्थप्रकाश पहिला मुद्रित सन १८७४ का पृष्ठ १०३ ।
 २४-मुक्तिप्रकाशम दसो । २५-सत्यार्थप्रकाश दूसरा मुद्रित सन
 १८८४ का पृष्ठ ९९ तथा १८८ । २६-सत्यार्थप्रकाश पहिला पृष्ठ ४
 तथा ४७ । २७-अनुवेदादिमाध्वमिका पृष्ठ ११४ और सत्यार्थ
 प्रकाश दूसरा पृष्ठ ११८ ।

जो गर्भवती पति से होवे । कहते हैं, निशोग बंधी करले ॥१॥
 उत्पन्न करे फिर उसकी सत्तान, देखो तागुरुका अपने भवान ॥२॥
 हागम उदर में मिसके प्रहिला । कैसे उसे गर्भ फिर रहेगा ॥३॥
 स्वामीजीन परम कृपा बताया । न्यमिषारका कर्म तुम्हें सिखाया ॥४॥
 इक्षरन दिय है वेद सारो । सर्मादि में भीमजापति को ॥५॥
 क्या कहो अभिजायुका नाम । निकलेगान कुछ भी झटसे काम ॥६॥
 कहना मेरा तुम ये सत्य जानो । स्वताश्वर उपनिषत् को मानो ॥७॥
 जका की है वेद में बड़ाई । कौतु उजकी सद्यः हुआ है भाई ॥८॥
 वे सप्तसे मयम हुए हैं उत्पन्न । कौतु उनमें मयम हुआ है न्युत्पन्न ॥९॥
 अध्या में य कैसे छीछा की है । ईश्वरकी परिक्रपा लिखी है ॥१०॥
 कश्मिरेवदविष्ट है या परिच्छिन्ना या बुद्धिमीस्वामीजीकी कुंछात्म ॥११॥
 स्वर्ग और जरे कौन लोक माने । सुख दुःख यहीं कीमोगमाने ॥१२॥
 कठ बल्ली का माठ कीजे निर्मल । चां लिखता है स्वर्गलोक प्रत्यक्ष ॥१३॥
 अतः प्रपक्वासी सुर्माजी पाठ करको । स्थलीक अनेकवार देखो ॥१४॥
 यदं मुनु इस अतिको भाई । छांदोग्य में उसने जो बताया ॥१५॥
 सो है नहीं उक्त उपनिषत् में । मित्राना के ऐसे लख हो है ॥१६॥

४७-१५-सत्यायमकाश दूसरा पृष्ठ १०० । ४८-स्पष्टयमकाशविधि
 सेवित संवत् १९३४ का पृष्ठ १४३ । ४९-सत्यायमकाश दूसरा
 पृष्ठ ५९० । ४९-सत्यायमकाशपहिला पृष्ठ १४३ ।

गायत्रीको चारों वेदमें जो । संन्यासे लिखा तुम्हारी दिखो ॥ १ ॥
 दिखलाओ व्यर्थ में कहा है । स्वामीजीकी अज्ञाती यहाँ है ॥ ५ ॥
 लिखी है जो सामानार्थको हाल । बहमी दर्या नन्दजीको है जाल ॥ १ ॥
 चुंबक की वहां शिखा लगी थी । आकाश में मूर्ति खड़ी थी ॥ १ ॥
 दिखलाओ तो यह कहाँ लिखा है । घतला आग्रमाण इसमें क्या है ॥ ५ ॥
 स्वामीजीने सुँठ यह बनाया । शकरको किंसीने बिष खिलाया ॥ १ ॥
 फिर उनेके वेदन पै निकल फाँड़े । इस खेदसे प्राण उन्हांने छोड़े ॥ १ ॥
 दिखलाओ तो यह कहाँ लिखा है । घतला अग्रमाण इसमें क्या है ॥ ५ ॥
 जो वर्ण बिषयमें श्लाक मनुका । स्वामीने तुम्हारे घर घसीटा ॥ १ ॥
 देखो तो वहाँ प्रसंग क्या है । स्वामीजीने छल कपट किया है ॥ १ ॥
 प्रह्लादकी जो कथा कहें हैं । स्वामीजीकी है य भागवतमें ॥ १ ॥
 एक स्वर्ग या लोहे का बनाया । अग्नि में उसे बहुत तपायो ॥ १ ॥
 प्रह्लादसे फिर कहा पकड़ ले । देखें तेरा राम किस जगह है ॥ १ ॥
 अम दिलमें जो उसके कुछ समाया ईश्वरने दिखाई अपनी माया ॥ १ ॥
 चिबटी, लगी चलने खम ऊपर । प्रह्लादके मनसे तब गया हर ॥ १ ॥
 ये बात नहीं है भागवत में । स्वामी जीकी सारी कल्पना है ॥ १ ॥

'१'—उक्त पञ्चमहायज्ञविधि पृष्ठ २६ । ५३—सत्यार्थमकाश
 दूमरा पृष्ठ ११९ । १६—सत्यार्थमकाश दूमरा पृष्ठ १८७ । १९—उक्त
 सत्यार्थमकाश पृष्ठ ८८ । ११—उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ १११ ।

अक्षरकी जो कथा लिखी है। स्वामीजीने यह पूरा लिखी है।
 दोष अपना लगाया दूसरों पर। ईश्वरकी प्रीतिनको ज्ञानहीनरक्षक।
 ज्ञान वनको नहीं था। भामयवका। देखो तो लिखा है। अठकेस। १९।
 पृथ्वीको अक्षर का छेद जाता। मैं भगवत्समेतुम दिखाना ७०।
 लिखी है कथा जो प्रवनाकी। नहीं। भागवतमें यह करीमी ७१।
 छ कोश का था। प्रभु कथनसका। सत्वादेतो भागवत्समेतुम दिखाना।
 हेमाद्रि में भागवत् की गाथा। लिखनी है कदा कदा तो आता ७२।
 जयदेव का प्रोपदेन भाई। येतुकी भी। तो येतुकी। मिश्र है ७३।
 इस बातको सिद्ध करके दिखाना। या प्रभु गुरुका अपतेवका ७४।
 जो श्लोक ग्रहण विषय में लिखना। कहते हैं तप्त शिरोमणी का ७५।
 यह श्लोक शिरोमणी में कथ है। स्वामीजीका छेद अठसप्त है ७६।
 पृथ्वी का जो भूवमा लिखा है। यह एक ही लिख स युवा है ७७।
 स्वामीजीने यह श्रुति है लिखनी। जिसमें कि भुवा लिखी है पृथ्वी ७८।

। ६७-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३३४। ६८-सत्यार्थप्रकाश दूसरा
 पृष्ठ ३३३। ७१-उक्त सत्यायमकाश पृष्ठ ३३४। ७२-उक्त सत्याय
 मकाश पृष्ठ ३३५। ७३-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३३६। ७४-उक्त
 सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३३८। ७५-प्रभुदेवादिमायामयमिकोंके पृष्ठ ३३६
 से ३३९ तक तथा हमारे सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ ३३८। ७६-द्वय-
 रीवार की छपी संस्कारविधि का पृष्ठ १२९। पृष्ठ १२९।

पीछे लिखा व्यासजी को विद्वान् पाहिलेखा वन के धिरपै अज्ञान ८० ॥
 सूत्र उनका विकृष्ट वेद नाना। इस बादि का कहिये क्या ठिकाना ८१ ॥
 हे वेद में पद नमः शिवाय। निदक है सुसामी, इसके भावः ८२ ॥
 स्वामीजीने इसकी निंदा की है। मात उनकी विकृष्ट वेद ही है ८३ ॥
 कहते हैं, यह होके द्वैत बावी। ईश्वर का लक्ष्मी का है गिनाती ८४ ॥
 स्वामीजी का ज्ञान अन्यथा है। यह मत कहां द्वैत बाद का है ८५ ॥
 मिथ्या है स्वतंत्रता का अभिमान। परंतु सदा ही जीव को जान ८६ ॥
 जीवों को जो तुमने छान्त माना। गिना हमें प्रदमे दिखाना ८७ ॥
 वेदा में अनंत संह कहा है। सब शिष्टों का मत यही रहा है ८८ ॥
 जब शुक यजु का वेद माना। तो कृष्ण से क्या विराज वाता ८९ ॥
 शाखाओं को वेद तुम न मानो। व्याख्यान संह वेद का बखानो ९० ॥
 शाखाई प्रकटपे सहिता चार। तुम करत हो जिनका वेद स्वीकार ९१ ॥
 इनमें भी तो सत्य वस को जाना। शी जिसको सभीने सत्त्व माना ९२ ॥

८०-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ३२७ तथा ३२८ । ८१-उक्त।
 सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३३९ । ८२-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३४९
 ८४-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३४ । ८६-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ
 ५९० । ८७-अतंतत्त्वप्रकाश देखो । ९१-उक्त सहिता-शाकल
 माध्यान्दिन-कौशुमी-और शौनकीय नामक शाखा हैं । ९२-स-
 त्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ३८२ ।

कहता है तु इसकी वेद मदन । प्रत्यक्ष जो कि उसकी खडन ९३ ॥
 स्वामीजी का होता कुछ भी पुढेला करते न ऐसी वह भुवि ९४ ॥
 अद्वैत में नहीं कभी भलाई । नहीं सत्य में ई कोई धुलाई ९५ ॥
 क्यों सत्यमें तुमको शत्रुता है । अद्वैतका द्वैत समझ लिया है ९६ ॥
 कहना मेरा अब भी तुमको मानो सत्मत्त्वको असत् असत्त्वको जानो ९७ ॥
 पीताया वह भांगमा अमूठी । दाघ खानेस वृमेर दिन उतरी ९८ ॥
 भगवद्कादा, पुसे कैसे, विष्णुम। दिन रात रहे जा भांगका दास ९९ ॥
 गई भांगमे उसकी बुद्धि मारी । लिखी इससे ही ब्रह्मटीघात सारी १०० ॥
 वह साँठ कहाँ है हमको दिखला । जिसमें तरा स्वामी घुम गया था १ ॥
 जब रीछने उसका आ दबाया फहिये उसे किसने वाँचया २ ॥
 दाक्राश से वाँ महायक आये । इस लख में बाल भी हसाये ३ ॥
 गावर्ध जिन्हें भाप करत देखा भोजन किया उनसे लेके सीधा ४ ॥
 भिनकागोंको घुतपरस्त जाना स्वीकार किया न उनका खाना ५ ॥
 राजा से लिया है प्रेम्प्य है दसाक्षिष मूर्ति है जिन का इष्ट मत्पस ६ ॥
 पत्र मास उन्हींका खाना खाया । सच भाँति वहाँ स्वमतगवाया ७ ॥
 पुस्तक जो छपाय व्याकरण के । ये सभी उपाय घन हरण के ८ ॥

१८-दयानन्दजीवनचरित्र

१-वक्तृजीवनचरित्र पृष्ठ १०॥

४-वक्तृजीवनचरित्र पृष्ठ ३३

५-वक्तृजीवनचरित्र पृष्ठ ४५

जीवनचरित्र

२१

धन वं स मे भिन्दो से कृण किर्यो पा। स र्ब क हिये किरन को फिर दियो पा ॥ ९ ॥
 छल वल से टरण किया है पान। छल की नयी दिस को पन में तन मन ॥ १० ॥
 मुशी जी को द्रव्य कैसा मारो। जाने है इसे जमाना साग ॥ ११ ॥
 जो बाल दुष्टा के रस्ते हो पास। कहिये तो फिर वं स को कैसा संन्यास ॥ १२ ॥
 धन भिस का जमा हो मेठ के पास। है पूर्ण वसी का योग संन्यास ॥ १३ ॥
 टाड़ पका सुलजो कर खाता। क्यों छल से न्यून हो खजानी ॥ १४ ॥
 बाई को जा अपन पास घुलवायें। मन्या सी कलि में बहरी कहलायें ॥ १५ ॥
 सब कभी हो जिन के साध दो चारा। संन्यास को उन्हीं को अधिकार ॥ १६ ॥
 धन मेरवा जिन कारा साधु न ध्याना। संन्यासी कहो उन्हीं को धीमान ॥ १७ ॥
 कर बैठे जो वेद का भी खडग। फिर क्या बह करेग और मंढन ॥ १८ ॥
 दण से भी अधिक दुष्टा लहो जेन। परित्राह का पद न क्यों मिले तब ॥ १९ ॥
 मुरदे का उन्होने भीरा लाश। संन्यास के धम को प्रकाश ॥ २० ॥
 वह तेज छुरी करी से आई। मुरद कजा अग पर चलाई ॥ २१ ॥
 कहिय कहीं डाकरी पदी थी। या भाग गुरुजी को चदी थी ॥ २२ ॥

दोहावली ।

लिखा निषेध आपाहि प्रथम, शूद्र वर्ण को वद ।

फिर उसका छल की विधि, हुमा परस्पर भेद ॥ १ ॥

निज कर्मों से मनुज का पाप होय सब नेष्ट ।

२०-वक्त जीवनचरित्र पृष्ठ ८१ । । ।

२-सत्यार्थ प्रकाशद्वय मरामुद्रित सन् १८८४ का पृष्ठ ४४ फिर ७४

- १ निम ग्रंथोंमें आपने, लिखे, बचन में स्पष्ट ॥ १ ॥
- २ फिर क्या मनमें आगाह किस्म में है यह आप
- ३ अथवा सोगे सुनता नहीं किसी सांति कोई पाए ॥ १ ॥
- ४ लिखा समाधि निर्भूत इति वचन वृत्तिपत्रप्रमाण - पाठ
- ५ का दादशमें है नहीं एहसे ना क्यों विद्वान ॥ ४ ॥
- ६ लिखा नाम परमात्मा का नारायण आप ॥
- ७ स्वामीजी को फिर उदय हुआ कौनसा बाप ॥ १ ॥
- ८ नारायणाय नमः इति है यह वद विरुद्ध ॥
- ९ किस्म में कस मछा एसा आप अनुद ॥ १ ॥
- १० लिखा अनुके नाम स मिदयाही प्रीमात ॥
- ११ विविध तत्त्व और स्वर्णवा सग्यासी को ध्यान ॥ १७ ॥
- १२ यनुस्मृति में है नहीं कहीं यह अद्वैतको ॥
- १३ स्वामीजीकी बुद्धि पर महाशोक महोशोक ॥ ८ ॥
- धन सग्रह के हेतुओं कहीं रचो यह जाऊ ।

१-सत्यायमकाश इमरा पृष्ठ ११३ ॥ ७८ ॥

८-उक्त सत्यायमकाश पृष्ठ १८७ ॥

९-उक्त सत्यायमकाश का पृष्ठ-१९ ।

६-उक्त सत्यायमकाश पृष्ठ २६ ॥

७-उक्त सत्यायमकाश पृष्ठ ८८ ॥

संयासी का दोष क्या है, पापी फलिकाल ॥ ९ ॥

युद्धे चाप्यपलायन का प्रसा किया अनर्थ ॥ १० ॥

एसे मिथ्या कथन की किसको हुई समर्थ ॥ १० ॥

पोखा दान भागन से होती होनीत ॥ ११ ॥

तो ऐसाही कीजिये दयानंद की नीत ॥ ११ ॥

यद्धे चाप्यपलायन काहे सीधा अर्थ ॥ ११ ॥

नहीं भागना युद्ध से और कथन सब व्यर्थ ॥ १२ ॥

शिव्वा सुभ्र जिसके नहीं वह इसाई समान ॥ १३ ॥

स्वामीजी यह लिख चुके है सत्यार्थ प्रमान ॥ १३ ॥

शिव्वा सटित छदन करो यहभी उनका लेख ॥ १४ ॥

को सत्यार्थप्रकाश में दोनोंही को देख ॥ १४ ॥

शिव्वा (सूत्र का त्याग व कर बैठे ये आप ॥ १५ ॥

सत्य कहो किस कर्म से हुए पुन निष्पाप ॥ १५ ॥

सष्टि वर्ष गत शपकी लिखी व्यवस्था मूल ॥ १६ ॥

दो किरोट से अधिक है स्वामीजीकी भूख ॥ १६ ॥

११-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ९१ ।

१२-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १७६ ।

१४-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २५५ ।

१५-श्रुतवेदादिभाष्यभूमिका के पृष्ठ २३ । २४ ।

करे आर्याधर्म में जो सधर्दिन से वास ।
 वही आर्य जो धर्म में निशिदिन करे प्रयास ॥ १७ ॥
 कही आर्यो की पुनः तिष्ठत में उत्पत्ति ।
 वहा से यां आकर यस ऐसी पदी विपत्ति ॥ १८ ॥
 स्वामीजी के लख से मकट हुई यह बात ।
 आदि सृष्टि के श्रापे मुनि य अनार्य विख्यात ॥ १९ ॥
 नहि सत्यात् इसवचनको वचन उपनिषत् बताय ।
 स्वामीजी ने सुदिष्ट अपनी दिया दिखाय ॥ २० ॥
 कहे तदैसम भुक्तिको तैसैस्यकी आप ।
 वह उसमें कहीं है नहीं कहिये किसका पाप ॥ २१ ॥
 स्वामीजी की अज्ञता नेत्र खोलकर देख ।
 व्याक्षणस्य विज्ञानत नहीं वह की लख ॥ २२ ॥
 लिखा मुक्तिको आपने कारागार समान ।

१७-आर्योद्वेगपरत्नेमोक्षा पृष्ठ ११ सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५८० ।

१८-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २१४ ।

१०-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५८९ ।

२१-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २१४ ।

२२-उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १२६ ।

(१३)

सदृश-आपकी, है, नहीं कोई नास्तिक मान, ॥ २३ ॥
जिस मत में, ताहों, पुरुष ब्रह्मटा, नहीं, होय, ।
जो ब्रह्म, वसका, करे-जाता ब्रह्म, साथ, ॥ २४ ॥
स्वामीजी, निज छत्र, से, उभरे ब्रह्म, आप, ।
मुसलमान ईसाई सब, सब और, निष्पाप, ॥ २५ ॥
स्वामीजी ने, वेदकी, शाखाही, ज्ञा मान, ।
महामाध्यसे, चारका, उन में अंतर, जान, ॥ २६ ॥
आरीरक सक्षप का, जीषशी, सह भूक
दयानंदजी ने लिखा महाशोक, महाशोक, ॥ २७ ॥
जिस मत के, चरु, हुए रह, नहीं, दिन रात, ।
वस मतकी, जानी, नहीं, एक ब्रह्मही, बात, ॥ २८ ॥
फिर आरीरक माध्यका कहा, जा, उक्त शोक, ।
उस में भी, ब्रह्म है नहीं, देख, सज्जन, लोक, ॥ २९ ॥
रूप रूप यह प्रचल, मुदक, का, वतलाय, ।

२१-उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ २४१ ।

२४-उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ २४६ ।

२६-उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ २८७ ।

२७ । २९-सत्यार्थ मकाश दूसरी पृष्ठ १९

स्वामीजी ने अङ्गुली अर्पने की दिखलाई ॥ १० ॥
 ईश्वर का आदेश मने बिना स्वामीजी नार्ने ॥ ११ ॥
 उनके मत में होगया परिच्छिन्न भगवान् ॥ १२ ॥
 हे अमावसंतान में जो नियोग स्वीकार ॥ १३ ॥
 तो दश संतति का पुनः कैसे किया विचार ॥ १४ ॥
 स्वामीजीका कयन है जो न मांस कोइ खाये ॥ १५ ॥
 मत्स्यादि जल जंतु की भाविष्यदुत्पद्ये ॥ १६ ॥
 फिर मनुष्यगणको वही मार मारकर खाये ॥ १७ ॥
 धान्य न चपन स्वतम सब मनुष्य मर जाये ॥ १८ ॥
 धन्य आपकी बुद्धि को धन्य आपका धर्म ॥ १९ ॥
 क्याहि प्रसन्न पुक्ति लिखी मिहट न आईये ॥ २० ॥
 नृपमाविक को यप सिखा वह यम के कार्य ॥ २१ ॥
 हाय हाय कष्टकाल में चपन ऐसे आये ॥ २२ ॥

- १०—उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ १९० ।
 २१—संस्कारविधि सुद्धि १९१२ पृष्ठ १४७ ।
 १२—ऋग्वेदादिभाष्यश्रुमिका पृष्ठ २१४ सत्यार्थमकाश
 दूसरा पृष्ठ ११८ ।
 १३—सत्यार्थमकाश सुद्धि सन् १८७५ पृष्ठ २०२ ।
 १४—उक्त सत्यार्थमकाश पृष्ठ ३०१ ।

मांस आदि से होम की विधि की दोनों काष्ठ ।

रचा वेदके नामसे कैसा मिथ्या जाके ॥ १७ ॥

नहीं मांस के पिढी देने में कुछ पाप ।

स्वामीजी का लेख है करले निमेष आप ॥ १८ ॥

स्वामीजी के लेख में है बहु साक्ष विरुद्ध ।

येने दिखलाया यहां किंविन्मात्र अनुद्ध ॥ १९ ॥

इतनेही से सिद्ध है जब उनका अज्ञान ।

बुद्धिमान कैसे कह फिर उनको विद्वान ॥ २० ॥

योद्धामी जिस ग्रंथ में लो असत्य तुम देख ।

छोटा उसका सत्य भी स्वामीजी का लेख ॥ २१ ॥

उन के ग्रंथों में दिया हमने अनृत दिखाय ।

नो कुछ उन में सत्य हो सो भी बला विहाय ॥ २२ ॥

केवल तुमको सहिता है प्रमाण जो चार ।

तो अपने मतव्य को करो वेद अनुसार ॥ २३ ॥

स्वामीजी ने जो लिखा पुर्णार्ण विचार ।

दिखलाओ वह वह में हमको वसी प्रकार ॥ २४ ॥

२०-सत्ता सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५ । १ । १ । १

२८-सत्ता सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २४९ । १ । १

२१-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ७२ । ७२ । ७२

- सब मनुष्य सब देश से लो, ली का दान ।
 स्वामीजी के लख में दीजे श्रुति प्रमान ॥ ४५ ॥
- कल नदी पबत, अही वृषादिक परताम ।
 एसी कन्या से उचित नहीं निवाह का काम ॥ ४६ ॥
- स्वामीजी का यह कथन करा बदे से सिद्ध ।
 नष्टितो धन की अमिता है सर्वत्र प्रसिद्ध ॥ ४७ ॥
- कहाँ लिखा निज गोत्र में कर विवाह न आर्य ।
 और सपिंद माता क में नहीं उचित यह कार्य ॥ ४८ ॥
- आठ प्रकार क बदे में लिख विवाह कहाँ मिल ।
 दिखलाओ लक्षण सुद्धित, सब हो आप प्रविष्ट ॥ ४९ ॥
- मत्यसादिक आठ है स्वामीजी क मान ।
 जार वेद में नाम का वृत्तक नहीं निशान ॥ ५० ॥
- जो आहुति मलिनैव में है तुम को स्वीकार ।
 फटो कौनसी संहिता क है वे अनुसार ॥ ५१ ॥

४५-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ॥ ४७ ॥

४६-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ८० ॥

४८-सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ १०८ ॥

४९-वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ९२ ॥

५०-वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १४ ॥

पचयःविधि में लिखो जो जो क्रिया विधान ।
 दिखलावे तो वेद में हमको कोई बिद्वान् ॥ ५२ ॥
 संस्कारविधि में लिखा जा जो कुछ व्यवहार ।
 नहीं वेद में वह कहीं हूँ तुम्हारी हार ॥ ५३ ॥
 गुण लिंग की शिष्य के कर गुरु क्या श्राद्ध ।
 यजुर्वेद के भाष्य में देखा गुरु की बुद्धि ॥ ५४ ॥
 नीलगाय बघरी लिखो ओम्ना जिमने आर्ष ।
 कहा देया उस में रही कैसे वह निष्पाप ॥ ५५ ॥
 बकरे का घों दूध भी लिख बैठे महोत्तम ।
 महा असमर्थ लख सं जाई कुछ भी लाज ॥ ५६ ॥
 माता समस्तुस्ववर्द्धिनी पनी को हा प्राप्त ।
 दयानन्द का लिख है इसे न क्यों फिर आप्त ॥ ५७ ॥
 गध और बल्लूके को पाछे क्यों नहीं ओर्य ।
 वदभाष्य में लिख गया जब उनके आचाय ॥ ५८ ॥

- ५४-दयानन्दकृत यजुर्वेदभाष्य अध्याय १ मंत्र १४ का पदार्थ
 ५५-उक्त भाष्य अध्याय १३ मंत्र ४६ का भावार्थ ।
 ५६-उक्त भाष्य अध्याय २१ मंत्र ४१ का पदार्थ ।
 ५७-उक्त भाष्य अध्याय २० मंत्र ४० का भावार्थ ।
 ५८-अध्याय ९ मंत्र ३२ का पदार्थ तथा अध्याय २४ मंत्र
 २९ का पदार्थ ।

स्वामी जी विद्वान् को बड़े जमाई समान ॥ १७ ॥
 कर समाजगण कथनपर अपने गुरु के ध्यान ॥ १८ ॥
 दयानन्द की प्रार्थना देखे तो व्युत्पन्न ॥ १९ ॥
 ह परमेश्वर कीजिय 'सर्पों' को उत्पन्न ॥ २० ॥
 ह जगदीश्वर मच्छियों से जीवों जो लोंग ॥ २१ ॥
 उन को भी उत्पन्न कर यह क्या कथा प्रयोग ॥ २२ ॥
 बहुपशु वाला होमकर और हुतशेष जा खाय ॥ २३ ॥
 दयानन्द यह लिख गये सोई प्रशंसा पाय ॥ २४ ॥
 परम ऐश्वर्य निमित्त हा कर बैल से भोग ॥ २५ ॥
 दयानन्द के लेख को समझे सबजन लाग ॥ २६ ॥
 चिकने पशुओं के प्रति वस्तु पचाने योग ॥ २७ ॥
 ग्रहण करें यह क्या लगा दयानन्द को रोग ॥ २८ ॥
 माने वाले सुभर सम हे नानन्द यह लेख ॥ २९ ॥
 यजुर्वेद के भाष्य में गुरुजी का लो देख ॥ ३० ॥

-
- १७-अध्याय २४ मंत्र ३४ का पदार्थ । ॥ ३१ ॥
 १८-अध्याय २० मंत्र ३१ का पदार्थ । ॥ ३२ ॥
 १९-अध्याय २० मंत्र ३६ का पदार्थ । ॥ ३३ ॥
 २०-अध्याय १९ मंत्र १० का भाषार्थ । ॥ ३४ ॥
 २१-अध्याय १९ मंत्र ६० का पदार्थ । ॥ ३५ ॥
 २२-अध्याय १६ मंत्र ६२ का पदार्थ । ॥ ३६ ॥

'दयानन्द ने दैश्य को लिखा है उंट समान ।
 चले गुरु के वचन को धरे अवश्य प्रमान ॥ ६६ ॥
 करें परिक्षा परस्पर कन्या पुरुष सप्रीति ।
 फिर विवाह अपना रचे दयानन्द की रीति ॥ ६७ ॥
 सेना तियगणकी करे सभोपति स्वीकार ।
 स्वामीनी की आज्ञा चले लें शिर धार ॥ ६८ ॥
 पशुहानिकारके जो हों चनको मारे दख ।
 दयानन्द ने क्या किया हिंसारत यह लेख ॥ ६९ ॥
 सद्भाषण सत्सुआचरण यही धर्म की मूल ।
 धर्म निकट उसके नहीं जो इन क प्रतिकूल ॥ ७० ॥
 जा अपना चाहे भला कर सब सद् व्यवहार ।
 सत् से है जय सर्वदा और असत् से हार ॥ ७१ ॥
 एक पुरुष का क्यों बने अनुयायी धीमान् ।
 वृथा पराये दास को शिर न धरे विद्वान् ॥ ७२ ॥
 पयको पीवे प्रीति से इस नीर तन देय ॥ ७३ ॥

६६-अध्याय १४ मंत्र ९ का पदार्थ ।

६७-अध्याय १५ मंत्र ९३ का भावार्थ ।

६८-अध्याय १७ मंत्र ४४ का भावार्थ ।

६९-अध्याय १३ मंत्र ४८ का भावार्थ ।

तू असत्य को त्याग दे सत्य ग्रहण करलेख ॥ ७३ ॥
 काम, क्रोध, मद, लोभ से शस्त्रों, मनको रोक ॥ ७४ ॥
 ये सुखदाता के नहीं देग, दारुण शोक ॥ ७५ ॥
 पशुधन और परदार में कभी न कर अनुराग ॥ ७६ ॥
 परद्राही तू मत बने परनिंदा को त्याग ॥ ७७ ॥
 किसी मांस में भूलकर कभी न कीजे प्रीति ॥ ७८ ॥
 निरपराधियों का इनन है प्रत्यक्ष अनीति ॥ ७९ ॥
 कन्याप्रिया का करे जो पापी व्यवहार ॥ ८० ॥
 दंड नहीं उनके लिये कैसा धर्मप्रचार ॥ ८१ ॥
 त्याग दिया चपनयन को और द्विमत्त्वक मान ॥ ८२ ॥
 मनुस्मृति को देखलो है ये शूद्र समान ॥ ८३ ॥
 करा यज्ञ सपुत्री का अर्घ्य भी शीघ्र प्रचार ॥ ८४ ॥
 और धर्म का है नहीं विन इसके अधिकार ॥ ८५ ॥
 गायत्री प्रवर्ण की सिखी शास्त्र में एक ॥ ८६ ॥
 कोई विरुद्ध इसके वही जिनको नहीं विवक ॥ ८७ ॥
 ब्राह्मण सत्रिय वैश्य में रहे जो वेद विहीन ॥ ८८ ॥
 हो सब शूद्रत्व को प्राप्त शीघ्र ये तीन ॥ ८९ ॥
 मबल आका वेदकी लिखी जिन्हें ऋषिराज ॥ ९० ॥
 क-ख-ग-जाने नहीं प्राय खन में आन ॥ ९१ ॥

एव वण को आज कल है सबका अभिमान ।

पयो हमको कर्तव्य है इसको नहीं कुछ ज्ञान ॥ ८३ ॥

मय मोस करने लग ग्रेहण दिमाती लोग ।

पेश्या और परपोत्ति से करे अन्न संयोग ॥ ८४ ॥

करो प्रतिज्ञा यो सफल सुखसे कहे बिचार ।

जो बाणी मिथ्या हुई ता जीवन बिकार ॥ ८५ ॥

परब्रह्म परमात्मा एक उपास्य ले जान ।

वने उपासक अन्यका सा है पशु समान ॥ ८६ ॥

सत्य बात जो रिपु कहे सो भी लीजें मान ।

अनिश्चित्य मुरु कथन को मुरा समान ले जान ॥ ८७ ॥

जगन्नाथ जगदीश्वर को भदा नवाधा शीश ।

सकल मनोरथ सफल हो रहे बात इक्कीस ॥ ८८ ॥

॥ ८८ ॥ इति ॥

॥ ८८ ॥

स्वर्गसिद्धि ॥

आजकल दयानदानुयायी लोग कहते हैं कि स्वर्ग नरक काई
 एक विशेष नहीं है किंतु सुख विशेषका नाम स्वर्ग और दुःख
 विशेषका नाम नरक है अतः समय में उनके गुरु ऐसा ही उपदेश
 र गये हैं (विनाशकाले विपरीतबुद्धि) देखो दूसरी धारका ।

छपा हुआ सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ५९० स्वर्ग नाम सुख विशेष भाग
 और उसकी सामग्रीकी भासिका है—नरकजो दुःख विशेष भाग
 और उसकी सामग्रीका भास इना है दयानंदजीका यह कथन सर्वथा
 शास्त्रविरुद्ध है क्योंकि सत्शास्त्रों में स्वर्ग नरक लोक वि
 श्रुती माने हैं अथ—इम दयानंदजीके मत वाच्योंका प्रथम—उनके
 गुरुजीके लखस स्वर्ग नरक लोक विशेष दिखाते हैं और उनका
 स्वामीका परम्पर निरुद्धकथन बतलाते हैं देखा; पूर्व—सत्यार्थप्र
 काश पृष्ठ १३७ ब्रह्मका चही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक
 अथवा परमानंद परमेश्वर को प्राप्त करदता है पृष्ठ १८९ शूर
 वीरतासे, सत्साह पूर्वक निरभय समय में देहका जो छद्मता, सोई
 स्वर्ग जानका कारण है पृष्ठ १९७ जो, राजा, अयाय करनेवाले
 को दह नहीं देता और अतपराधीको दह देता है उसकीबही
 अपकीर्ति होती है और नरक को भी यह जाता है पृष्ठ २०४ कुमी
 पाकादिक दुःख रूपी लोक पृष्ठ १०७ जो राजा आर्ष नाम दुःखी
 लाग गाली तकमी दें तोभी सहन करेता है—सोई राजा स्वर्गमें
 पहुँचोता है और जो ऐश्वर्यके आभिमान से किसीका सहन नहीं
 करता—इसी से वह नरकको जाता है पृष्ठ ११० बह—रामा अत्र
 लोक अर्थात् स्वर्गके राज्यका प्राप्ति होता है पृष्ठ २२१ सोई पर
 मेश्वर पृथ्वी से छेके स्वर्ग पर्यन्त आगत की रचके धारण करता

मया पृष्ठ २१३ जीव स्वर्ग नरक जन्म और मरण इत्यादिकोंमें
 भ्रमण करता है पृष्ठ २१४ प्रश्न स्वर्ग और नरक लोक हैं या नहीं
 उत्तर—सब कुछ है क्योंकि परमेश्वर के स्वे असंख्य लोक हैं। उन
 में से जिन लोकों में सुख अधिक है और दुःख यादा उनको स्वर्ग
 कहते हैं तथा जिन लोकों में दुःख अधिक है और सुख थोड़ा है
 उनको नरक कहते हैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य
 हैं उनको मर्त्यलोक कहते हैं इस प्रकार के स्वर्ग मर्त्य और नरक
 लोक बहुत हैं इत्यादि—पृष्ठ २६७ स्वर्गादिक सबलोक संयोग से
 बने हैं पृष्ठ ३११ उसको स्वर्गवास मिलता है यहाँ स्वर्ग शब्द बहि-
 स्तके पर्याय में लिखा है जो मुसलमानों के मत में स्थान विशेष है—
 मत्कार्यप्रकाश मुद्रित सन् १८८४ का पृष्ठ १४८ गिनाक्रिय कर्मों
 के सुख दुःख मिलते हैं तो आगे नरक स्वर्ग भी न होना चाहिए
 क्योंकि जैसे परमेश्वर ने इस समय बिना कर्मों के सुख दुःख
 दिया है वैसे मर पीछे भी जिसको चाहेगा उसको स्वर्ग में और
 जिसको चाहे नरक में भेज देगा इत्यादि यहाँ स्वर्ग नरक लोक
 विशेष स्पष्ट मान लिये आर्याभिविनय पहिला पृष्ठ ४७ स्वर्ग
 सुखसाधन लोक पृष्ठ ११ पृथ्वी से लेके स्वर्ग पर्यंत जगत् का
 कर्ता है पृष्ठ १६ स्वर्ग सुख विशेष स्थान और भूमि मध्य सुखवा-
 ला लोक तथा दुःख विशेष नरक सबलोकोंको रचा है सत्कार

विधि सुदृष्टः सत्तत् ॥ ६३३ पृष्ठ १९ हेवाङ्क भूकोक अतरिसहा-
का और स्वर्गोक्त अर्थात् सौनः लोकोका मो एद्वय सो तुममे
धारण करताई पृष्ठ १६ स्वर्ग पृष्ठिर्षी पृष्ठ १४२ स्वर्गाय लोकाय
स्वाहा पृष्ठ १४२ हे ईश्वर कृपा से प्रभाका सुखरूपमाप्त दाय तथा
इस जीव को स्वर्गाके समीप सुखोको प्राप्त करे जेमेदादिभाष्य
भूमिका पृष्ठ १०२ सत्य पर पर सत्य सत्येन न स्वर्गलोका
चक्षुषन्ते पृष्ठ १२४ तमे मनुष्य स्वर्गलोकमजसा वेदासौ नैस्वर्ग
लोकमजसा वेद ० १० का ० १ १ अ ३ धा ० १२ कर १ पृष्ठ २२८
ता उभौ चतुर पद सप्तसारयाव स्वर्गलोके मोर्णवाया वृषावा
जीरेतो धारेतो दधातु यजुर्वेदा अध्याय २९ मंत्र १० सत्याया-
ता उभौ चतुर पद सप्तसारयावेति मियुनस्यावरु ये स्वर्गोकाक
प्राणुवाया मिल्येपवे स्वर्गोलाकायवा पथ सप्तपयन्ति तस्मा
देवमाहवृषा वाजीरता धारेतो दधात्विति मियुनस्यैवावरुध्वै
० १ १ १३ भा ० १ ३ धा ० १४ लक्त मुति ये स्वर्ग लोके स्पष्ट
और दयानदमी भी अपन भाष्यमें लिखते हैं कि स्वर्ग सुखविशेष
लोक द्रष्टव्य भाक्तव्य मियानदस्मा स्थिरत्वाययेन सर्वाभ्याजिन
मुखैराच्छादयेव हि भाषार्थ यह है कि दोनों को अत्यन्त सुखरूप
स्वर्गलोकमें मिय आनंद की स्थितिके किये जिसमें हम दोनों पर-
स्पर तथा सब प्राणियों को सुखसे परिपूर्ण करद्वे इत्यादि वद

ब्राह्मण और मनु के वचनानुसार हमने स्वामी जी ही के लेख
 से स्वर्ग, नरक, लोक विशेष सिद्ध करा दिया । और इस विषय में
 हमारे और दयानंदानुयायियों का मतभेद में इतना ही अन्तर है कि
 हम स्वर्ग, नरक, लोक विशेष मानते हैं और अमर्त्यलोक ही में
 जो सुख, दुःख का भोग विशेष है उसको स्वर्ग, नरक कहते हैं
 यह भी ध्यान करना चाहिये कि जो कोई अमर्त्यलोकान्तर्गत
 सुख दुःख ही को स्वर्ग, नरक मानेगा उसके मत में संपूर्ण मनुष्यों
 को एक क्षण में स्वर्ग और द्वितीय-क्षण में नरक का भाग सिद्ध
 होगा क्योंकि अत्यन्त मनुष्य का एक क्षण में सुख होता है और
 द्वितीय क्षण में दुःख वहिष्कृत संपूर्ण मनुष्यों के लिये सर्वकाल
 स्वर्गभोग मानना पड़ेगा और संपूर्ण मनुष्यों के लिये सर्वकाल
 नरकभोग क्योंकि एककी अपेक्षा एकका सुख भोग होता है
 और एककी अपेक्षा उसीको दुःख भोग है । दयानंदानुयायियों
 हम तुमका भेद उपदेश करते हैं कि इस मिथ्या मतभेद का
 छोटा और सत्य ज्ञातको ग्रहण करो तुम्हारे स्वामी नादस्र जगद-
 चक्षु ब्राह्मण और मनु के प्रमाणसे स्वर्ग, नरक, लोक विशेष माना
 है और एक दो जगह केवल अपनी कपोलकल्पनासे सुख, दुःख
 विशेषका नाम स्वर्ग, नरक लिखा है अब यदि तुम लोग उनकी
 कपोलकल्पना ही पर दृढ़ दुराग्रह करते रहोगे तो उनके लिख

हुए सक्त वचनों का क्या अर्थ करोगे। तुम्हारे स्वामी पर परस्पर
 विरुद्ध लेख का दोष आया। हर कोई उनको अज्ञानी ठहराया।
 तुम लोग वेदादि सत्शास्त्रों के विरोधी बनोगे और नास्तिकता का
 भार अपने शिर पर धरोगे अतएव तुमको यही अधिकृत है कि
 वेदादि सत्शास्त्रानुकूल और अपने स्वामी के लेखानुसार स्वर्ग
 नरक लाक विशेष मानो और तन्हीन जाकि एक दो जगह
 सुख दुःख के भाग ही का स्वर्ग नरक लिखा है उसे सर्वथा मिथ्या
 जानो वा उन वाक्यों का अर्थ सत्शास्त्रानुकूल बनाओ और
 अपने गुरु का शास्त्रप्रतिकूल तथा च परस्पर विरुद्ध लिखने
 के दोष स प्रचारों अतः मैं और भी स्वर्ग लाक प्रतिपादक वचन
 प्रतिवेदन करता हूँ और दयानदानुयायियों का अज्ञान भूल
 सहित करता हूँ। यथा हि योवा एतामेव वेदाप्रहृत्य पाप्मानमनन्त
 स्वर्गे लोकेऽयं प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति तत्र लूकारापनिषदि
 स्वर्गलोके न भय किंचि नान्ति न तत्र त्व न जराया विमति न म
 तीर्त्वाऽधनायाऽपिपासे शाकानि गोमोदते स्वर्गलोके ॥१॥ अर्थात्
 स्वर्गलोके कुछ भी भय नहीं है (हे मृत्यु) तू धरा नहीं है और
 न धरा कोई घृणापका भय करता है भूख पिपासे दोनों से वशीर्ण
 होकर और धाकका अधिक्रम करके स्वर्गलोक में आनन्द भोग
 करता है ॥२॥ हे बुद्धिमानों विचार करो कि यदि मर्त्यलोकात्तर्गत

सुख विशेषदर्शको। स्वर्ग माना जाय तो यहा ऐसा कौन पुरुष है
जिसको बुढ़ापा और मृत्यु नहीं और जिसने भूख पियासको जीत
लिया और देखो तत्स्वर्गलोक यत्-स्वर्गलोक समाप्नुवत्/स्वर्ग
लोकप्रपद्यते-स्वर्गलोक समभुत-देवा प्रीता स्वर्गलोकमभिवर्द्धन्ति
यद्गन् स्वर्गलोकं समाप्नुवत्-शतपथब्राह्मणे स्वर्गलोके बहुसैन्ये
पाम् ॥ ११ ॥ स्वर्गलोके मधुगतिपन्वमाना ॥ २ ॥ अजं पक्वं
स्वर्गलोके दद्याति ॥ ३ ॥ स्वर्गलोकाकशति य ददति ॥ ४ ॥
स्वर्गलोकमभिरोहयैनम् ॥ ५ अथर्ववेद ।

वेदानि सत्शास्त्राणि मे स्वर्गलोक प्रतिपादन के और भी बहुत
वचन हैं यहाँ बिस्तार भय से नहीं लिखे जिनको सत्य का
निर्णय करना है उन के लिये वेद का एकही वचन बहुत है
और जिनको वाचावाक्य प्रमाण है व सत्सर्व वचनों से भी
अपना हठ दुराग्रह न छोड़ेंगे ॥

॥ इति ॥

संपूर्ण दयानन्दियों से निर्वेदन ।

शास्त्रों समस्त त्रिदानों ने, ११, २, १ शास्त्राओं को वेदही
है शास्त्राओं को वेद से भिन्न नहीं जाना और दयानन्दजी
शास्त्राओं को वेद नहीं माना किंतु उन को ब्रह्मादि मह-

पिपों के बनाये बंदों के व्याख्यानरूप ग्रंथ जाना है परंतु उन्होंने
 न गिनः ऋगादि चार साहिताओं को ईश्वरप्रणीत वेद माना है
 वास्तव में वे भू-११११ शाखान्तर्गत चार शाखा ही हैं शाखाओं में
 पृथक्-पृथक् कदापि नहीं जिसका आप लोग ऋग्वेद मानते हैं वह आ-
 श्वलायन श्रुतमूत्र और कात्यायन मुनि कृत ऋग्वेद सर्वानुक्रमानि
 का क लेखानुसार शाकल नाम शाखा है जिस को आप यजु-
 वेद कहते हैं उसका प्रत्येक अध्याय की इति श्री में उसका मा-
 ध्यान्दिनशाखा लिखा है उक्त वद का असपथ ब्राह्मण है उसका
 पृष्ठगुरु वद को यजुर्वेद माध्यान्दिन शाखा का ब्राह्मण लिखा है
 महीषर, उवट, भाष्यकारों ने अपनी भूमिका में उसको माध्यान्दिन
 शाखा लिखा है कात्यायन महर्षि ने अपने बनाये प्रतिष्ठा सूत्र और
 सर्वानुक्रम सूत्रों के प्रारम्भ में उनको माध्यान्दिन शाखा ही लिखा
 है जिस का तुम सामवेद कहते हैं वह कौथुमी शाखा है इसकी
 व्याख्या चरणव्यूह में स्पष्ट है आप लोग जिस को अथर्व वेद
 मानते हैं माध्ववाचार्य ने अपने भाष्य के प्रारम्भ में उसको श्रौतकी
 यशाखा लिखा है इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध है कि उक्त
 ऋगादि चारों साहिता जिनको आप मूळ वेद मानते हैं वे ११११
 शाखान्तर्गत चार शाखा हैं उनसे पृथक् कदापि नहीं और यदि
 आप लोग स्वामीजी के लेखानुसार इतें दुराग्रह से श्रोताओं

को वेद न मानें तो उक्त चार साहिताओं को भी वेद न जानें
 किंतु उनको ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये वेदों के व्याख्यानरूप
 ग्रंथ बतलाये और अन्य चार वेदों का पता लगाये जबतक आ-
 पक मतानुसार प्रबल प्रमाण पूर्वक वेदों का पता न लगे तबतक
 आप लोग मत विषयक चर्चा में किसी के स मुख किसी प्रकार
 जिहा न दिखायें किंतु सर्वथा मौन होजायें क्योंकि आपको भ
 र्माधर्म के निर्णय में केवल वेद ही प्रमाण हैं और उनका पता न-
 हा जिन को आपके गुरुने वेद माना था वे शाखा सिद्ध होगई
 और शाखा आपके मत में बर्द हैं नहीं अब उक्त ऋगादि चार
 साहिताओं को ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये वेदों के व्याख्यानरूप
 ग्रंथ बतलाइये और वेद क्या पदार्थ हैं इसका सम्यक् पता लगाइ-
 य अथवा पूर्व विद्वानों के मतानुसार ११३१ ब्राम्हणों को वेद
 मानिय और स्वामी जी के सिद्धांतको उनका कपोलकल्पित
 सर्वथा मिथ्या और त्याज्य जानिय यदि आप बड़ात्कार
 उक्त चार शाखाओं को ही वेद मानें तो स्वामी जी का जिन्हा
 श्रुत्या सपूर्णविधिनिषेध उनही में दिखाइये अथवा वसस राध
 बताइये, इत्यलम् ॥

विज्ञापन ।

विद्वान् से लेकर साधारण भाषामात्र जाननेवाले पर्यंत
महाशयों के लिये

श्रीमद्भागवत

मूल अन्वय और भाषा टीका सहित ।

यह पुस्तक बहुत उत्तम चिकने सफेद कागजपर बम्बई के
निर्णयसामरी नये सुधाक्षय टाइप में छपी है, जिनका
नमूना देखना हो हम को पत्र लिखें, हम जानते हैं इसका नमूना
देखकर आपका चित्त बहुत ही प्रसन्न होगा, कीमत भी इसकी
केवल ९ रुपया मात्र रखी है यदि आपको अधिक कीमत
वाली बम्बई की छपी वा कम कीमतवाली अन्यत्रकी छपी भा
गवत को खरीदने का इरादा हो तो पहिले इसका नमूना मंगा
देखो क्योंकि—हम देव के साथ कहते हैं कि आजतक हिन्दी
स्थान भर में भाषाटीका सहित इसके मुकाबलेकी दूसरी पुस्तक
नहीं छपी, इसीलिये हम आग्रह करते हैं कि—एकवार नमूना
तो मंगाही देखिये, मूल्य ५) डा० स्व० १) कुल ६)

पता—शिवलाल—गणेशीलाल

लक्ष्मीनारायण व्यापारखाना मुरादाबाद.

श्रीनिकुञ्जविहारिणेनम ।

अजब कृष्णलीला.

अर्थात्

नानाप्रकारके तबदील पलटकर दिखला-
नेके विषयका किताब

यह पुस्तक

जाबूके खेलोंका मामान तयार करनेवाले
वेचनेवाले तथा खेल सिखलानेवाले

प्रोफेसर-जी एम् कारलेकरने
निर्माणकर

बंबईमें "विश्वभर" छापखानेमें मुद्रित कराय प्रगट किया
संवत् १९६६, शके १८९७

यह पुस्तक सरकारी कानूनके मुताबिक रजिस्टर करके
पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार प्रगट कर्ताने अपन स्वाधीन रक्खा है

मूल्य १ रुपया

प्रस्तावना

इस पुस्तकको यदि मोटी नजरसे देखनेपर इसमें कोई कुशलता न माझम होकर कदाचित् दर्शकोंको इसका मूल्मयी अधिक माझम होगा किंतु सूक्ष्मरीतिसे देखनेपर माझम होगा कि, इसके तयार करनेमें कितना परिश्रम और तयारी करनी पड़ती है, अर्थात् फीतके अनेक टुकड़े हर एक पट्टीपर कैसे नटल पलट लेजाकर उनके कितनेही सिरे, बड़ी खबरदारीसे मिलाने पड़ते हैं और चित्रकी पट्टिया कितनी होशियारीके साथ बैठाना पड़ती हैं कि जिसका केवल विचार करनेसे उसकी खूबी सहजहीमें ध्यानमें आवेगी। यह इतनी पट्टी जोड़नेमें जो कुशलता की है वह इतनी खूबी की है कि, एक पट्टीका एक ही किनारी उठानेसे पिछला सब भाग आगे आना और आगेका पीछे होजाना उसी प्रकार एक पट्टीके फिरानेसे सब पट्टियोंके टुकड़े गिरकर दृश्यस्थितीमें बदल होना इत्यादि बातें क्या कम कुशलता की हैं ? सारांश—उसकी रचना, मिलावट, रूपांतर दिखलानेके प्रकार इत्यादि देखकर विचारवान् मनुष्योंको उसकी रचना और कल्पकता की महती समझे बिना नहीं रहेगी। उपरोक्त बातोंपर ध्यान देनेसे इस नये तर्जुकी ईजादके लिये दी हुई कौमर्त बहुत नहीं है ऐसा ही हर किमीको माझम होगा।

तयार करनेवाले,

जी एम् कार्लेकर

अजब कृष्णलीला.

और

उसके रूपांतर कर दिखलाने की रीति

पुतले की रचना

यह पुतला कुल आठ पट्टियोंकी मिलावटसे तयार किया गया है उसकी तप खोलकर खड़ी पकड़नेसे एक और मुरलीधर श्रीकृष्ण महाराजका पुतला दृग्माधर होता है और उसके सिरपर मराठी भाषामें हमारा नाम, ठिकाना लिखा है और पैरके नीचेकी पट्टीपर मराठी भाषामें खेळ सबधि सूचना लिखी है इसके दूसरी ओर सीधा श्रीराधाजीका पुतला दिया है जिसके माथेपरकी पट्टीपर हिन्दुस्तानी भाषामें हमारा नाम ठिकाना धौरे लिखा है नामके माथेपर मध्यभागमें (१) यह शरीर एक लिखा है और पतेके नीचे मध्यभागमें " गिरगाव " इस शब्दके नीचे (२) का एक डाक है उसी तरह राधाजीके पैरके नीचेकी पट्टीपर हिन्दुस्तानी भाषामें खेळके सामानके विषय सूचना लिखी जाकर उसपरकी पहिली पत्तिके छेकर " इस शब्दके माथेपर (३) का एक लिखा है और नीचेकी पत्तिके नीचे मध्यभागपर (४) का एक दिया गया है इस प्रकारसे आठ पट्टियोंपर एक ओर राधाजीका पुतला दूसरी ओर श्रीकृष्णजीका पुतला दिया जाकर, इन आठों पट्टियोंकी रचना तथा मिलावट दोनों ओर के किनारेपरकी कपड़ेकी फीतसे इस धुन-

शायताके साथ की है कि जिससे निम्नलिखित रीतिसे इस पुतलेके पृथक्पृथक् रूपांतर सरलतासे दिखलाई दिये जा सकते हैं

(१) मुरलीधरका पुतला दिखलाना

यह दिखलानेके समय जैसी हमने उसकी तयपर तय जमा करके भेजी हैं उसी तरह अर्थात् नीचेकी पट्टीपर हिंदुस्तानी सूचना नीचे रहकर, बाकी की पट्टियां कमसे एकपर एक रखकर ऊपर से सबसे यह बड़ी पट्टी रखवो जिसपर कि हिंदुस्तानी नाम बाहरकी ओर स्पष्ट नजर आवे इस प्रकार तय जमानेसे ऊपर (१) व नीचे (४) यह अंक अपने बदनकी तरफ कलाईकी ओर रहेंगे और ऊपरके (२) तथा नीचेके (३) यह अंक सामने बैठे हुए दर्शकों की ओर अर्थात् अपनी उगलियोंके अग्रभागकी ओर रहेंगे, इस तरह अपने बाँये हाथका पजा फैलाकर सीधा करके उसपर यह पूरी तय आडी रखना चाहिये इसको बाद अपने दर्शकों मंडलीको कहना चाहिये “ प्रेक्षक महाशयो ! श्रीकृष्ण भगवान् समयानुसार बाण, तरण, विराट, स्त्री, मोहिनी इत्यादि अनेकरूप धारण करते थे, इस प्रकार पुराणमें कथा कही है उसीके अनुसार मैं तुमको मुरलीधर श्रीकृष्णके रूपांतरोंको इस कृत्रिम पुतलेपरसे दिखलाता हू, वह ध्यान पूर्वक अवलोकन करिये ” इसपर मुरलीधर, श्रीकृष्णजीका पुतला है वह आपको दिखलाता हू सावधान चिन्ता से देखिये “ एक-दो तीन ” इस तरह मुँहसे कहकर हाथके पंजोंका थाप ऊपरकी पट्टीके बने हुए भागपर मारकर दिखलाते

हुए ऊपरकी पट्टीका (२) का अकवाला मझ्झीकी ओरका किनारा सहिने हातकाँ अँगठा तथा उसके पासकी उँगली इन दोनोंके बीच पकड़कर शीघ्रतासे ऊपर खींचकर सीधा रखना चाहिये और नीचेकी पट्टीका (३) के अकके ओरका किनारा बायें हाथपरही रहने देना, जिससे सब पट्टियाँ खुलकर दर्शकोंकी ओर श्रीकृष्णका कुछ पुतला दगोबर होगा वह दर्शकोंको दिखाने हुए कहना चाहिये कि “ देखिये, यह मुरलीधर श्रीकृष्णका सरल पुतला है ” ऐसा कहकर फिर से वह पट्टियाँ एकपर एक रखकर पूजात लिखे अनुसार फैले हुए पत्रपर तब रखे चाहे सो फिर ऊपरकी पट्टीपर सहिने हाथ की थाप मारकर (२) अकके ओरका किनारा दो उंगलियोंके बीच में पकड़कर पहिले की तरह झटसे ऊपर खींचकर पकड़ रखना चाहिये और एक बार कहना चाहिये कि, “ जग देखिये, यह श्री कृष्णजी काही पुतला है और उसके महनकसे पैर तक शरीरके सर्व भाग क्रमानुसार समान हैं इसका काँइमी भाग उलट पुलट नहीं है अब जैसी यह तब उठाई थी वैसीही फिर रखना हू इसकी आगकी बाजू पाछे अगा पीछेकी बाजू आगे बिठकुछ न हगते हुए, वैसी पहिले थी वैसीही अब रख देताहू, यद्यपि इस तब में कोई हेरफेर कुछमी नहीं किया है तथापि इस श्रीकृष्णके कैसे रूपांतर होने से अवलोकन करिये ”

(२) कृष्णके घदले श्रीराधाजीको दिखाना

यह दिखाने हुए दर्शकोंको कहना चाहिये कि “ इस पुतलेकी

३ श्रीकृष्णजीके शरीरके टटे बाँके भाग

दिखलाई पढ़ते हैं

इस समय तब हाथपर इस प्रकार तय जमाओ कि, ऊपरकी बड़ी हुई पट्टीपरका (१) व नीचेकी पट्टी परका (४) ये अकवाला किनारा अपने हाथकी तरफ अर्थात् कलाईकी तरफ जो था वह अब दर्शकोंकी ओर घुमाकर, उपरकी पट्टीपरका (२) तथा तल्लकी (३) यह अकवाली बाजू अपनी ओर अर्थात् अपनी कलाईकी ओर करना चाहिये और इस प्रकार पट्टियाँ हाथपर किये बाद प्रेक्षकोंसे कहना चाहिये कि, “ देखिये इसीपर आपको श्रीकृष्ण तथा श्रीराधानी दिखलाई पड़ीयों, परंतु अब देखिये कि क्या होता है, “ एक—दो तीन इस तरह कहकर अपना दहिना हाथ तयके ऊपर मारकर नर्वे की ओरका (१) बाली पट्टीका किनारा दोनों तंगलियोंके बिच प्रकटकर खींचो और उसे सीधा खड़ा करके प्रकट रखों जिससे मसगसे पेरतक श्रीकृष्णके शरीरके सीधे तया आठे भाग दिखलाई देंगे इसके बाद पहिलेकी तरह फिर तय करके फिरसे एकवार उसी प्रकार किनारा प्रकटकर खींचो और कहो, कि, “ पूर्वमें आपको दिखलाये हुए दोनों राधाकृष्णके सीधे पुतले अतर्धान होकर अब यह टेढ़ा बाँफा कृष्ण अचानक कैसा बनगया यह देखिये, लेकिन इतने हीसे अभी कुछ नहीं हुआ है आगे औरभी देखियेकी क्या होता है, “ इस तरह कहके फिर तय पूर्वप्रकारके रख देना चाहिये

४ श्री राधाजीके शरीरके टेढ़े बाँके भाग दिखलाई पढ़ते हैं

इसके बाद फिर अपने दहिने हाथकी धाप तयपर मारकर उस-
का अपनी ओरका (२) का अक वाला किनारा दो अंगुलियोंमें प-
कड़कर झटसे ऊपर खींचकर पकड़ रखो जिससे उल्ट पुल्ट कृष्ण-
के बदले उल्ट पुल्ट भाग वाली राधा दिखलाई देगी अब अपने
दर्शकोंसे तुमको कहना चाहिये कि, “ मैंने आपको अभी टेढ़े बाँके
अवग्रसवाले श्रीकृष्णजीको दिखलाया था वह अचानक गुप्त होकर
उसकी जगह राधाजी उत्पन्न हुई है सो देखिये आपकी शक्तानुसार
केवल दोही तरह इस पुतलेकी दिखलाई देना चाहिये थी परंतु उस-
के एवजमें अब आपको चार प्रकार दिखलाई पड़े इसपरसे
आपकी पहिली शक्तका तो समाधान होगया है अथवा आपकी
वही कल्पना सत्य समझ लेवें तो एकही तय परसे चार प्रकार पृथ-
क्पृथक्से अचानक दिखलाई देते हैं यह कितने भारी आश्चर्यकी बात
है ! इस बातका आप ही विचार करें अब उपरांत दिखलाई हुई
रीति से चार प्रकार दिखलाई देते हैं, इसके सिवाय इन्हींपरसे अचा-
नक और भी कैसे रूपांतर होते जावेंगे, उसकी रीति दूसरी है
वहभी आपको दिखलाई जायेगी

५ देखते देखते दुकड़े पढ़कर श्रीराधाजीसे श्रीकृष्णका बनना,
यह करने के लिये यह पुतला बनी हुई पड़ीपरके “ क-क-”

बड़ल नदर ७—मनमें धारण किया हुआ अंकको बतला देने वाले पत्ते (पत्ते ६)

इससे किसीने अपनी समरफा या और कौनसाभी अंक मना सोचा हो सो आप बिना पूछे तरत कहसकते हैं

इस रीतके खेल यह ७ बड़लोंसे हो सकते हैं वह देखते तमाशबीन आश्चर्य चकित होते हैं यह खेल इन बड़लोंसे किस रीतिसे कर दिखलाना इसके खुलासे की एक पुस्तकमी यह मंडलोंक साथ मिलती है वह बांधनेसे ऊपरके सब खेल कोई भी आदमी तरत कर दिखलाता है इसलिये बड़ल साथ यह पुस्तक प्रत्येक कुटुम्बमें अवश्य संग्रह रखना चाहिये

यह पुस्तक मय ऊपर लिखित ७ बड़लोंके पन्नों सहित दाम मूल्य २॥ ६० है

परतु २ माहिनके अंदर लेनेवालेको मूल्य केवल रु १॥। ग्ही पी चाकम्यके दो आने अधिक पड़ेगे यह ताश पुस्तक हमारे पास मिल सकता है

म्याजिक प्रोफेसर—जी एम् कार्लेकर

जादूके खेलोंका सामान तयार करने वाले, बेचने वाले और खेलें सिखलाने वाले

ठिकाना:—ठकनरोडपर दुर्गादेव्याके पासका घर २ रा मजला—बम्बई

पॉष्ट नं० ४१

॥ श्री. ॥

प्राचीनभजनमाला



जिसको

दुर्गाप्रसाद शर्मा ने

संग्रह किया

उसीको

शिवलाल गणेशीलाल ने

अपने "लक्ष्मीनारायण" प्रेस में

छपाकर प्रकाशित किया

मुरादाबाद



द्वितीयवार सन् १९०४



॥ श्री ॥

❀ प्राचीन भजनमाला ❀

॥ प्रभाती गणेशजीकी ॥

जयगणेश जयगणेश सकलविघ्न हारी ।

दुःखहरणसुखकरणआनंदउरमोदभरण

ऋद्धि सिद्धि सगलिये भक्तन हितकारी ॥

धूम्रकेतु गणाध्यक्ष भालचन्द्र सर्वरक्ष वि-

घ्नराज हरो विघ्नली शरण तुम्हारी । मैतो

अतिदीन नाथ तुमहौ प्रभु दीनानाथ कीजै

अब मोहि सनाथ सकल कष्ट टारी ॥

प्रथम सुमर वक्रतुड शिवसुत सुखदाई ।
 मंगलके करन हार, सोहत शुभ मुजाचार,
 मृषक असवार, नाथ भक्तन वरदाई ॥ १ ॥
 जय जय जन रक्षपाल, सोभा अद्भुत वि-
 साल, सकटको हरत हाल, गवरलाल धा-
 ई ॥ २ ॥ एकदंत देयावत, विघननको करत
 अत, गावत नितशेषसत्त, महिमाहर खा-
 ई ॥ ३ ॥ राजत दृग लाल लाल, सेंदुरको ति-
 लक भाल पुष्पनकी गलेमाल, अद्भुत व-
 विद्याई ॥ ४ ॥ राजत तिरशूल हाथ, ऋद्ध
 सिद्ध सदा साथ, बुद्धि शुद्ध देत नाथ, मोद
 मन बडाई ॥ ५ ॥ आनंदके आदि मूल,
 शुण्ड साहि कमल फूल, जनपर अनुकूल,
 ७ भक्तके सहाई ॥ ६ ॥ वरके दाता गुण

की खान, दूजो नहीं तुम समान, अंगम
निगम करै गान, तुमरा गणराई ॥ ७ ॥
ललितदेर गुण निधान, चरणन रज देओ
दोन, शभुसुवन जनकी आन, त्रासदो
मिटार्ई ॥ ८ ॥

—प्रभाती महादेवजीकी—

शकर सुख करन सदा सन्तन उद्धारन ।
पंचवदन अति विशाल, जय जय जय
शिवदयाल, सोहत दृग लाल लाल भक्तन,
भय हारन ॥ १ ॥ प्रेत नार्थ प्रणतपाल,
राजतुंगलमुडमाल महा ज्योति महाका-
ल, दक्षमद संहारन ॥ २ ॥ बालचद्रलमत
भाल, मूषण मुजदिपै व्याल, भस्म अग-
कर कपाल, भस्मासुरजारन ॥ ३ ॥ सैन
सग अति विशाल, सोहत वैताल ताल,

भाल चक्षु अति कराल, त्रिपुरासुर मारन ४
 शूलपाणि विश्वभर, विश्वनाथ गगाधर,
 रक्षत हर सत्तराचर, सर्व तेरन तारन ॥ ६ ॥
 नैक तोर भूमरोर, नाशत वसुधा किरोडे,
 करत प्रलय महाघोर, प्रभुहो सबकारन द
 हरहर पद त्राहि माम, भक्त बल दमन
 काम, महिमा श्री शम्भु नाम राम की उ-
 चारन ॥ ७ ॥ ज्ञान भक्ति मुक्ति हाल, देत
 ललित विप्रवाल, नाशत कलिके कुचाल,
 काल चक्रटारन ॥ ९ ॥

शकर महादेव देव सेवक मुरजाके ।
 भस्म अङ्ग शीसगङ्ग वाहन अति बल प्र-
 चण्ड गौरी अर्धग सङ्ग भंग रंग छाके ॥
 ग्पाटि झपाटि जात व्याल ओढे तन मि-

रगछाल मुण्डमाल चन्द्रमाल दृग विशाल
 बाँके ॥ ध्यावत सुर नर मुनीश गावत गि-
 रजा गणेश पावत नहि पार शेष ब्रह्म आदि
 थाके । वर्णत जन तुलसीदास गिरजापति
 चरणआश ऐसेवर भेषनाथ भक्तहेतु राखे।
 प्रभाती श्रीकृष्णजी की ।

मोहन ब्रजराज श्याम लाजके रखैया ।
 नदनन्दन भक्तवन्दन कस के निकन्दन
 हो कालिनाग नाथ्यो बलदेवजू के भैया ॥
 गोपीमनहरण चरण जमलादिक तारण ।
 सन्तन सुखदेन रमारमण हो कहैया ॥
 वार वार हेरत हो वंशी मुखटारत हो, आयो
 में शरण तेरी वंशी के बजैया ॥ तुमही लेव
 ठौर और तुमहीं कहैं जेहो, कृष्णलाल भोर
 भयो लागत हो पेयाँ ॥

मेरे तो गिरधर-गोपाल, दूसरो न कोई
 असुवन जल सींचे प्रेमबेलबोई जाको शिर
 मोरमुकट मेरे पति सोई ॥ आई हों भक्ति
 जान जगत देख मोई, तात मात भाई
 बन्धु अपना नहि कोई ॥ साधुन संग
 बैठे २ लोकलाज खोई, अब तो बात फैल
 गई जानै सब कोई, छोड़दई कुलकी लाज
 क्या करेगा कोई, दास मीरा शरण आई
 होनी हो सो होई ॥

जय जय जय जय मुकुन्द नन्दके दुलारे।
 शीश मुकुट तिलक भाल, कानन कुण्डल
 विशाल, कण्ठ माहि गुञ्जमाल, मुरली
 कर धारे ॥ ग्वाल वाल लिये संग,
 रचत सदा रासरग, बजत वाँसुरी मुचग,

जमुन के किनारे ॥ काहू को फोरत घट
 काहू की पकरत लट, काहू को घूघट
 झट खोलत ठिग आरे ॥ ३ ॥ धन धन
 धन श्रीमुकुन्द काटहु दुखा हरहु दन्द,
 हे गोविन्द श्री गोविन्द रूपाये ॥ ४ ॥ कृपा
 सिन्धु विश्वनाथ, माँगत चरजोरहाथ, बसहु
 सदा रमासाथ, हृदय में हमारे ॥ ५ ॥
 ॥ देखो सी-यह कैसी बालक रानि यशो-
 मति जायो है ॥ सुन्दर बदन कमलदल
 लेचन देखत चन्द्र लजायो है ॥ पूरण-
 ब्रह्म अलख अविनाशी प्रकट नंदघर
 आयो है ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै के-
 शर तिलक लगायो है ॥ कानन कुण्डल
 गलविचमाला कोटिकाम छविछायो है ॥

वनियाँ ॥ सूरश्याम देखि सब भूली गोप
 धनियाँ ॥ प्रातः समय ब्रजेनारि सकल मिलि
 घट जमुनाजल भरि नचली ॥ ओर पास
 तारागण सजनी बीच चन्द्रमुख भानुलली
 पगनूपुर कटि किंकिणि बाजें पूरि रही
 ध्वनि कुंजगली ॥ इत उत तक्त चलत ना
 रायण आय न जावें श्याम छली ॥

छोड दे गल बहियां श्याम मोर भयो लल-
 ना ॥ बटहारी वाट जात, पंछी जात चुगता,
 पतिहारी पत्तघट को जात, हम हू जात ज-
 मुना ॥ मुख के तंवूल गये नयन नहूँ के अं-
 जना ॥ दीप ज्योति फीकी, ओ चन्द्र हूँ के चँ-
 दना ॥ बाँह सोहै बाजू वन्द हाथ सोहै कं-

गाना, भाल तिलक शीस सो है गोद सो है ल-
 लना । उठियो तुम सुघर नारि, झारि डारो
 अंगना ॥ सूरदास द्वारे ठाढ़े नन्दलू के
 ललना ॥ ३७ ॥
 अधिके मतवारे कन्ह, खोलो प्यारे पल-
 कै । शीश मुकुट लटा छटी और छटी अल-
 कै ॥ सुरनर मुनि द्वारे ठाढ़े, दरश देख किल-
 कै । नासिका में मोती सो है, बीच लाल लल-
 कै ॥ कटि पीताम्बर मुरली कर में श्रवण
 कुण्डल झेल कै ॥ सूरदास प्रभु मदन मोहन
 दरश देहु भल कै ॥ ३८ ॥
 जय जय श्रीगङ्गादेव जय महेशरानी । गौर
 वरण तन विशाल, मकरासन कण्ठमाल,
 सेवत सुर लोकपाल, चतुरफल निदानी ॥ ३९ ॥

पावन आनन्द निदान दूजो को तुम समा-
 न, कविजन गुण करत गान श्रुति पुराण
 वानी ॥२॥ रवि कुल नृप धन्य हेत, प्रघटी
 भव सिन्धु शेत, विष्णुपदी सुख निकेत,
 विधेसुरेशमांती ॥३॥ निरमल वर वहत
 नीर, भजन भवे अमित मीर, हरविलास
 वास तीर, देओ दनि जानी ॥४॥
 प्रमीती शिवजी की ॥५॥
 जय जय जगदीश ईश शंकर गुण
 खानी ॥ स्वेत अग सीस गङ्ग लिपटे गल
 में भुजङ्ग नन्दीगन लिये सग, गिरजा
 महारानी ॥६॥ ज० ॥ इन्दुभाल नेत्रज्वाल
 सोहै उर सुण्डमाल रत्नत्रिकाल, शिवद-
 याल सेवक सुखदानी ॥७॥ ज० ॥ उमा
 शान्तिभुवन दोषदमन शोकशमन

गावत गुन सहस बदन शौरद बर बानी
॥ ३ ॥ ज० ॥ विश्वकरन विश्वहरन विश्व-
भरन विश्वधरन निश दिन रह चरन शरन
गुरु गणेश ज्ञानी ॥

शङ्कर संसारसार वं व वं भोला शीश
गंग चन्द्रभाल चिताभस्म चोला । ली-
चन विशाललाल जटामुकुट मुण्डमाल
नीलकण्ठ कर सुमाल इमसान टोला ॥
राजत भुजङ्ग अङ्ग लीन्हे प्रभु गौरि संग
प्यावत घन घोटि २ भरें भग झोला ॥
चरण पद्म वृष विमान डमरू कर करत
गान गावत अति ललित राग सुनि सुनि
मन डोला ॥ निशिदिन करि २ प्रणाम
सुमिरत शिवरामनाम रटत शेष वेद भेद

जिन को नहीं खोला ॥ नारद शारद सु-
 रेश शिवगुण गावत गणेश चितुरानन विष्णु
 करत अस्तुति मृदुबोली ॥

भजन ॥

राधे कृष्णा क्यों नहीं जपते पीछे प-
 छताओगे । जाने तोको जन्म दियो ताको
 नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही
 वन्दे फेरि नहीं पाओगे ॥ तिरियाँ और
 कुटुम्ब की खातर पच पचके कर्माओगे,
 आएँगे वे जम के दूत पकरले जायगे मज-
 बूत, तुमसे माँगेंगे हिंसा व फेर क्या बता
 ओगे । सूर प्रभु की शरण आओ, आवा-
 गमन की मिटाओ, ठाकुरजी को ध्यान
 धरलो पार लग जाओगे ॥

राग धनाश्री-प्रतिम जान लैहु मन-

माँहीं । अपने सुख से सब जग वाँध्यो
 को काँह को नाहीं ॥ सुख में आय सभी
 मिल बैठत रहत चहूँ दिशि धेरे । विपति
 परे सब ही संग छोड़त कोऊ न आवत नेरे ॥
 घर की नारि बहुत हित जाँसों सदा रहत
 संग लागी । जवहीं हसत जी यह काया
 प्रेत रे कर भागी ॥ या विधिको व्योहार
 वन्यो है जिसों नेह लगायो । अन्त काल
 नानक विनहर जी कोऊ काम न आयो ।
 राग वरवा हरि नाम लाहा लेत रे तेरो
 जन्म वीतियो जात । जैसे वृक्ष पक्षी आन
 बैठे उठ चले परभात ॥ गयो श्वास न बहु-
 रियो तेरी पलक लखियो न जात । जुए
 जुआरी धन हाँन्यो मन खेलने दे चाँडा ।

खेलकर पछ्तायगारे तू हार, क्यों घरजात
 बनजारे, ने बैल जैसे, टांडा लदियो, जाय
 लाहे कारन आयो प्रानी चलयो, मूल गँ-
 वाय । आछे दिन दिन पाछे गए तैं हरिसों
 कियो न हेत । अव पछ्ताये होत क्या
 जब चिडिया, चुगगई खेत ॥ काच्चीकाया
 कांचकीरे, समझ देखो लोय । सगुरे को
 समझत परत है निगुरा जावे खोय ॥ जब
 लग तेल दीवे, में वाती सूभत है सब कोय,
 जलगया तेल निकस गई वाती ले चल रहोय
 रल मिल सखी सागर, चली शिरफूट गा-
 गर परी । पछ्तायँगी-पनिहार-जिउकर
 रीतधर-क्योंजात ॥ फटी सुरनाही फूक-
 जायसुनी अवधेहि । कहे नानक

दास प्रभू का तेरी अन्त हो । जाऊ खेहि ।
 रा० कान्हरा-दिन नीके बीते जाते
 हैं । सुमरन कर श्रीरामनाम, तज वि-
 षय भोग सब और काम तेरे संग न
 चलसी एक दाम जो देते हैं सो पाते
 हैं ॥ कौन तुम्हारा कुटुम्ब-परिवार
 किसके तुम और कौन तुम्हारा किस के
 बल हरिनाम विसारा सभजीते जीके
 नाते हैं । लख चौरासी भ्रम के आया
 बड़े भाग्य मानुष तनपाया तापर भी
 नहीं करी कमाई फिरपाछे पछताते हैं ।
 जो तूलागे विषय विलासा मूरख फँसे
 मौजकी फांसा क्या देखे श्वासन की
 आशा गए फेर नहीं आते हैं ॥

ऐसी चतुरता पर द्वार । दृथा बाद

विवाद जित-तित हित न नन्दकुमार
 मातपितु सुत भ्रात मरगए-और स-
 कल परिवार ॥ जानते हैं हमहु मरेंगे तऊ
 न तजत विकार ॥ काम क्रोध और लोभहु
 व्यापो मोहमदहंकार ॥ सूरप्रभुकी शरण
 गहु सतसङ्ग बारम्बार ॥ ६ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ नाचत हरि थिरक थिरक उरग शीश
 आली । नटवर वरभेसकरे, मुक्ता-फल
 माल गरे, मोर मुकट शीशधरे अखियन
 कुछ काली ॥ १ ॥ नूपुर पद दहत मान,
 तोरत अहि शीश तान, चरन परत गिर-
 समान, रुधिरवमत काली ॥ २ ॥ कद्रु सुत-
 गति अधीन, पाहि रेकरत दीन, मैं जड
 खल भक्ति हीन, चृथा देह पाली ॥ ३ ॥
 ॥ वतौ प्रभु समझ दास, कीजे मोह जन

निरास, सरणागति हरिविलास, सुधले
वनमाली ॥ ४ ॥

भयो प्रभात कहत कौशल्या जागो-
राम पियारे, ऊगेभानु कमल दल खोले
मधुकर करत गुजारे । चरणकमल मुख
निरखि रामके हर्षत नयन हमारे । जननी
बचन सुनत उठि बैठे नयनन पलक
उधारे, गावै गुण मुनिजनगधर्व मिलि
द्विजवर निगम उचारे, शिव सनकादि
भेष धरि आये दर्शन हेतु तुम्हारे, अनुज
सखा सबद्वारे ठाडे सोहत न्यारे न्यारे,
करि अस्नान दान नृप दानो भूषन वसन
अपारे, तुलसीदास आश रघुवर की ले
सतन उरधारे ॥ ५ ॥

प्रातसमय कौशल्यारानी अपनो पुत्र

विवाद जित तित हित न । नन्दकुमार
 मातपितु सुत भ्रात मरगए-और स-
 कल परिवार ॥ जानत हैं हमहु मरेंगे तऊ
 न तजत विकार ॥ काम क्रोध और लोभहु
 व्यापो मोहमदहंकार ॥ सूरप्रभुकी शरण
 गहु सैतसङ्ग बारम्बार ॥ ६ ॥
 नाचत हरि थिरक थिरक उरग शीश
 आली । नटवर वरभेसकरे मुक्ता फल
 माल गरे मोर मुकट शीशधरे अखियन
 कुछ काली ॥ १ ॥ नूपुर पद दहत मान,
 तोरत अहि शीश तान, चरन परत गिर-
 समान, रुधिरवमत काली ॥ २ ॥ कद्रु सुत-
 गति अधीन, पाहि २ करत दीन, मैं जड
 खल भक्ति हीन, वृथा देह पाली ॥ ३ ॥
 अवतौ प्रभु समझ दास, कीजे मोह जन

निरास, सरणागति हरिविलास, सुधले
 वनमाली ॥ ४ ॥
 भयो प्रभात कहत कौशल्या जागो-
 राम पियारे, ऊगेभानु कमल दल खोले
 मधुकर करत गुजारे । चरणकमल मुख
 निरखि रामके हर्षत नयन हमारें । जनेनी
 बचन सुनत उठि, बैठे नयनन पलक
 उधारे, गावै गुण मुनिजनगधर्व मिलि
 द्विजवर निगम उचारे, शिव सनकादि
 भेष धरि आये दर्शन हेतु तुम्हारे, अनुज
 सखा सबद्वारे ठाडे सोहत न्यारे न्यारे,
 करि अस्नान दान नृप दीनो भूषन वसन
 अपारे, तुलसीदास आश रघुवर की ले
 सतन उरधारे ॥ ५ ॥

प्रातसमय कौशल्यारानी ५

जगावै, नीलअंगपर पीत झिंगुलिया हारि
 निरखि पहिरावै, सुदर श्याम कमल-दल
 लोचन निरखि परम सुख पावै, नेत नेत
 कह वेद बखाने ब्रह्मा ध्यान लगावै, सोइ
 करुणामय राम दयानिधि दशरथ पुत्र
 कहावै, कबहु पालना घालि झुलावै कबहुं
 गोदखिलावै, कबहुं पाँवन चलन सिखावै
 मातु सबै सुखपावै, धन्य धन्य रानी कौ-
 शल्या दशरथ धन्य कहावै, धन्य अयोध्या
 नगर निवासी तुलसी दर्शन पावै ॥६॥

दशरथ सुत देख देख जनक सुता मोही
 मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गरे वैज-
 न्ती माला सोही, पीताम्बर की कछनी
 काट्यै, धनुष बाणालिये ठाढे दोई, सुन्दर
 दन राम लज्मण को, सब साखियां सी-

ताकी मोही, जनकपौर में गये लाडिले,
दशरथ ढोटा दोई, तुलसीदास कृपा कर
आये, जनक के यज्ञ सुधारे दोई ॥ ७ ॥

पीलेरे हो अबध मतवाला प्याला प्रेम
हरी रसकारे, पाप पुण्य दोउ भुगतन आ
ए कौन तेरा है तू किसकारे, जो दम जीवै
हरिगुणगाले धन जोवन सुपना निशिकारे
वाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारी
वश कारे, वृद्ध भयो कफवाई घेन्यो खाट
पडा नहिं जाय मसकारे, नाभि कमल में
है कस्तूरी कैसे भिरम मिटै पशुकारे, वि-
नसतगुरु ऐसे दुख पावै जैसे मिरग फिरै
वनकारे, लाख चौरासी उबन्यो चाहै छोड
कामिनी का चसकारे, प्रेम मग्न चरणदास
कहत है नख शिखरूप भन्यो विषकारे ॥ ८ ॥

प्रभाती द्रौपदीजीकी ।


हे गोविन्दराखो लाजआयके हमारी,
 दुस्सासन चीर खींचले आयो सभाविच
 मानत नहिं अधम नीच मोहि कर उधारी,
 गहे केश अटकत है शीश मोर चटकत है
 नयन नीर टपकत है दर्द ना विचारी, अव-
 लापर करत जोर हाहाकर करत शोर
 तुम विन को सुने मोर श्यामजी हमारी,
 कटि ऊपर चीर रह्यो तनपर दुख बहुत
 सह्यो, धीरजनहिं जात गह्यो द्रौपदी पुका-
 री, फटजा तू धराणि माय तामें जाऊ
 समाय, जासोंये प्राण जाय पतरहेखरारी
 सिंहगाय घेर लई नाथ में अनाथ भई,
 हारी तव टेर दई हेरिये बिहारी, दुःशास-
 भयो खेंच खेंच हार गयो, द्रौप-


दीने नाम लयो गोवर्धनधारी, सुनिये ब्र
 जराज आज शंकर की राखो लाज, चरण
 शरण आयो भाज, आस रख तिहारी ॥९॥
 साहिबकी यादकरो बाबा यकदिन उस
 घर जाना होगा ॥ टेक ॥ किस कारन पाप
 करे निश दिन माया में पैसा रहे छिन
 छिन, शिर धर यह भार तुझे एक दिन
 संग अपने लेजाना होगा ॥ मुख से कहो बन्दे
 राम नाम न हिलागे तेरा एक दाम फिर
 पिंजरा आवै कौन काम जब हस यह रवा
 ना होगा ॥ कोई यहां न रहने पावेगा जो
 आया है सो जावेगा, जो नहि हरिके गुण
 गावेगा आखिर को पछताना होगा ॥ बंद
 कहाया जो बंद काम हुआ नेकीसे किसी
 का नाम हुआ पण्डित यह कारमुदाम


हुआ अव नित हरिगुणगाना होगा ॥
 राधाकृष्ण रटाकर छूटे लख चौरासीका
 खटका॥टेका॥काम क्रोध मद लोभ मोह में
 फँसा फिरे भटका भटकारे राम कथा सुन
 आलस आवै कैसे खुलै तेरे पट घटकारे॥
 टेढ़ा बांका बना फिरै क्या बांध जरकंसीका
 पटकारे॥ कलकल दूट जाय तेरी जिस स-
 मै काल देगा झटकारे॥२॥ झोंटे खाय अघाय
 नहीं अज्ञान रूप रजु में लटकारे । कैसे छूटे
 विन राम कृपा शठ लग रहा डर डर झट
 कारे ॥३॥ छोड़ मोह माया ममता कर
 वास सदा बसी वटकारे ॥ श्यामा सहज
 तरै भव सागर भजन तु कर नागर नटकारे


इति समाप्त ॥

हमारे यहा की छपी पुस्तकें इन२ पतोंपर मिलतीहैं

 पं० नीलकण्ठ-द्वारकाप्रसाद
अमीनावाद-लखनऊ

 मुंशीस्वामीदयाल
ताजरकुतब-निवारघाट
पटना सिटी

 बाबू गोकुलचन्द
ताजरकुतब-अलीगढ

 लक्ष्मीनारायण प्रेस
मुरादाबाद

॥ श्री ॥

अनारकली उपन्यास



मुरादाबाद निवासी—

प०—बलदेवप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित

जिसको

शिवलाल-गणेशीलाल ने

अपने “लक्ष्मीनारायण” प्रेस

मुरादाबाद में

छपवाया

प्रथमवार सन् १९०५

समर्पण.

परम मित्र, विख्यात उपन्यास लेखक वाचू देवकीनन्दनजी खत्री महादेय !

आपके चंद्रकान्ता उपन्यासने उपन्यासश्रेणी में अच्छा नाम प्राप्त किया है; आपकी लेखमणालीने गद्य-साहित्य का मुख एक नए मार्ग की ओर फेर दिया है। आजकल बहुत से लेखकगण आपकी भाषामणाली का अनुकरण करने लगे हैं, इसी रीति के अनुसार यह अनौरकली आपको समर्पण है इसको भी चंद्रकान्ता की सहेलियों में बिठलाकर विमला से कुछ धातोलाप कराइये ॥

चिरप्रसिद्ध

पं० बलदेवप्रसाद मिश्र

दीनदारपुरा मुरादाबाद

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अनारकली उपन्यास ।

१ परिच्छेद ।

सवेरेसेही वर्षा होरही थी । घर पर कुछ कामथा, इस लिये शीघ्रता से दफ्तर का सब काम पूरा करके चलने का विचार करने लगा । मुझे तो घर पर कामथा, परन्तु मालूम होताहै कि राजा इन्द्र के मकान पर उस दिन कोई भी कार्य नहीं था, यही कारण था जो वह सुरादावाद के मार्ग घाट में निश्चक होकर जलकी वर्षा कर रहे थे । जब कीचड़ उडाता हुआ भीगे कपडोके साथ स्टेशन पर पहुचा, उस

समय इन्द्र देवताका क्रोध कुछ अधिक बढ़ गया सा जान पड़ता था । 'क्योंकि उस समय से उन्होंने मूसलधार पानी छोड़ना आरम्भ किया । मैंने अपने बड़े भाग्य से रेलगाड़ी का एक खाली कमरा पालिया इसही कारण से लोक लाज का कुछ भय न करके भीगे हुए कपड़ों को सिंग में टांग जूतों को छोड़ मुँह मोड़ कर बेंच पर लेट रहा गाड़ी छूटनाही चाहती थी कि-टिकट कलक्टरने एक भीगे भीगे जेनीटिलमैन को उस कमरे में लाकर बिठला दिया कि जहाँपर मेरा विस्तर लगा हुआ था । दरजे में उस समय गाढ़ा अंधियारा था । मन्हीं मन में कहने लगा कि जो कोई भी हो

अब तो गीले कपड़े नहीं पहरेगा। भीगे हुए जनटिलमें नने भी चोगा उतार कर एक ओर को फेला दिया। स्टेशन को छोड़ कर गाड़ी उजाले में आई, उस समय मैंने अचानक अपने पुराने मित्र बालमुकुन्द जी को अपने पास कमरे में बैठे हुए देखा।

बालमुकुन्द जी बम्बई को गये थे, उन का आना मुझको विदित नहीं था। आज अचानक इस घटादार अंधेरे उजाले वर्षा के दिन में अपनी ही समान उनको भी भीगा हुआ देखकर मैं कह उठा, "क-व-आये मित्र ! तुम तो बम्बई गये थे न ? मित्र जी ने इसका उत्तर न दिया, और शीघ्रता से मेरे हाथ को शेक हेड से मुलायम करते हुए बोले ।

“इस बार तुम्हारे मासिक पत्र में छापने को बहुत सी सामग्री इकट्ठी कर लाया हूँ, क्या कहूँ, हिन्दी लिखना मुझ पर नहीं आता नहीं तो मैं भी आज हिन्दी का एक विख्यात लेखक गिना जाता” ।

मित्र के स्वभाव को मैं भली भाँति से जानता था, जबकि उन्होंने सामग्री शब्द कहा, मैं उस ही समय समझ गया कि इस वक्त यह कोई अद्भुत कहानी सुनावेंगे । मित्र के कमरे में आने से पहिले मैंने समझ रक्खा था कि अकेले चुपचाप जाना पड़ेगा, इस समय कहानी सुनते हुए जाना विचार बहुत ही प्रसन्न होकर मित्र से कहने लगा । “बहुत अच्छा । आपकी सामग्री लेकर उस को काम में लाने के

लिये मैं तइयार हूँ, लेकिन इस तरफ की खिड़की तो लगादीजिये, हवा बहुत ठंडी आती है। चारों तरफ से कमरे को बन्द करके जरा गरम होजावे ॥

“गरम होगे ? अबतक क्यों न कहा।” यह कहकर बालमुकुन्दजी न मनीबेग मे से एक जोड़ा सिगरेटके साथ दियासलाई निकाली। मैंने भी सिगरेट को मुँह से लगाया और शीशा लगाहुई खिड़की मे से देखने लगा कि मूसल धार पानी गिर रहा है। पवन अपने पूरे बलसे वृक्षोंके गल्ले पकड़कर कीचड़में फेक देना चाहता है वृक्षभी अपनी शाखाओंको हिलातेडुलाते हुए, “नहीं नहीं” कहकर खड़े होनेकी काशि

श कर रहे हैं वृक्षों का यह तड़फड़ाना देख कर वायु "शन शन" शब्द करके उनकी बड़े जोर से भक भोरने लगा। यह देखकर कुछ कवितासूत्री और चट कह उठा कि:-
 भातिरीति कीजेताहीसों। बुधिवलजीतिसकै जाहीसों।
 आज सबरेके समय यही पवन इन्हीं वृक्षों के पत्तों से भांति भांति के खेल कर रहा था-धीर समीर, नवीन कोपल-मित्र बीच मेही बोल उठे कि "अनारकली की कहानी सुनी है?"

"अनारकली" अवसक बहुत सी अनारकली तोड़ ताड़कर फेंक दीं, तुम एक ही अनारकली की कहानी लिये फिरते हो ॥

"वृक्ष की अनारकली नहीं, लाहौर की अनारकली ॥"

। फिर उस अनारकली की कहानी सुनाइये, तब सब हाल मालूम होजायगा ॥
 'बालमुकन्दने' सिगरेटमें एक लम्बादम लगाकर कहानीका आरम्भ किया ।

दूसरा परिच्छेद ।

पूर्णिमाके दिन एक समय लीचीके बाग में टहलने को गया। शाम होगई थी । पूर्व में एक और चन्द्रमा भी उदय होगया था । परन्तु बाग में रहने के कारण चन्द्रमा का गोल और कमनीय मुखमण्डल भली भाँति से दिखलाई नहीं देता था ।

आकाश का उजाला, पृथ्वी का अधरा, दक्षिणी पवन, गुलशब्बो (रजनगिन्धा) की सुगन्ध और कई एक पपड़े एक साथ

मिलकर कुछ कपट जाल फैलारहे थे। मैं अनमना होकर इधर उधर घूमरहा था, कि—इतने ही मैं किसी नें पीछे से आकर पुकारा—“पंडितजी।”

फिर कर देखा कि निकट के लीची वृक्ष के नीचे गलीचे के ऊपर एक बूढ़ा मुसलमान बैठा हुआ है। मैंने उसके पास जा बंदगी कर के कहा। “आप मुझको पुकारते हैं?”

‘मुसलमान ने बंदगी का जवाब देकर कहा’ हा, मैंने ही आपको पुकारा है, आज इस-चादनी रात में मुझको एक पुरानी कहानी याद आती है, दिल चाहता है कि किसी को सुनाऊं, अगर आप-

को फुरसत हो तो बराहे नवाजिश इस गरीब के पास बैठ जाइये।

खूब कही, यह बूढ़ा पागल तो नहीं है । नजाने कौनसी कहानी सुनावेगा, यह सोचकर उसके पास गलीचे पर बैठ गया । पाव धरतेही समझ गया कि गलीचा ईरान का बना हुआ अधिक मूल्यका है, परन्तु इस समय पुराना होजाने से बीचरे में छेद हो रहे हैं । जिस समय मैं बैठा उस समय वृक्ष के पत्तों के बीच में होकर चंद्रमा की किरणें बूढ़े के मुखपर पड़ रही थीं । उसकाल मुझे जो जान पड़ा कि गलीचे की समान गलीचे का अधिकारी भी 'आली खान्दान', प्राचीन और बूढ़ा है । एक ओर हु-

क्काभरा हुआ रखवा था, जिस के कस्तूरी
दार तम्बाकू से मीठी २ मेहक आ रही थी
बैठते ही मैंने बूढ़े से कहा ॥

“फरमाइये जनाब”

“आप इस बाग की तवारीख जानते हैं”

“जो कुछ यहाँ की तवारीख किताबों में
पढ़ा है वही जानता हूँ ज्यादा कुछ नहीं।”

“किताबों में पढ़ा है। शायद अंगरेजी
किताबों में? उसको मालूम होना न होना
बराबर है। क्या किताब में तवारीख
होती है? किताबों में तो गुरुर होता है,
परार्द्ध बदनामी, बुराई से आज कल
की किताबें भरी रहती हैं, हमारी तवारीख
को वह लोग कहाँ से लावेंगे?”

“किताबों पर बूढ़े की सम्मति जानकर”

मुझको हसी-आई, परन्तु उस के निकट
 असभ्यता का प्रगट करना अनुचित जान
 कर सँभल गया, मनहीं मनमें कहने लगा कि
 क्या यह भी कोई बात है कि आज कलके
 इतिहासों से सत्य बात नहीं रहती। प्रगट
 में कहा, “अच्छा तो अब अपनी तवा-
 रीख कह डालिये।”

चन्द्रमा की चटकीली चांदनी में देखा कि
 बूढ़े ने कुछ शोकाकुल होकर धीरे-२ अपने
 नेत्रों को उंगली से पोंछा और कुछ देर
 पीछे कहा

“करीब २ चारसौ बरस की बात है कि
 यहां पर शहनेशाह सलीम का एक दोलत
 खाना था। इस वक्त जहां पर यह बाग नजूर

आता है ठीक यहीं पर किला था, आज
 जिस जगह पर हम और आप एक साथ
 गलीचा बिछाकर बैठे हुए हैं, पेस्तर यहा
 कसीर पानी था, शाहजादा सलीम इस मु-
 काम पर अपने दोस्त अहवाब और बी
 वियो के साथ डोगी में चढ़े हुए सैर कि-
 या करते थे और दूरपर जो वह संगमर-
 मर की कन्न दिखाई देती है, उसही के
 अन्दर शाहनशाह सलीम की प्यारी
 बेगम अनारकली आराम कर रही है ।-
 पंडित साहब शायद आप कहते होंगे कि
 सलीम की बेगम नूरजहाँ की कन्न तो आग
 रे में बनी हुई है, फिर यह दूसरी अनारकली
 कहासे आई लेकिन जिस वक्त नूरजहाँ का

नाम नूरजहा नहीं था उसवक्त अनारकली की खूबसूरती पर बादशाह लोटपोट हो रहे थे। क्या इन बातों को भी आपने अंगरेजी किताबों में पढ़ा है ॥ ”

“नहीं ।”-

इसही सबबसे गुजारिश थी कि दूसरे मुल्क के वाशिन्दे इन बातों से महज नावा-किफ होते हैं । अनारकली को सलीम ने मोल लिया , उसके नाम को भी कोई नहीं जानता था । ईरान के बाजार से एक आफताबेहुस्न लौंड़ी खरीदी जाकर हिन्दोस्थान के होनहार बादशाह की खिदमत के लिये खाना की गई बादशाहो मे पुराना रिवाज है के कोई

लौंडी-जबतक के वह जवान नहीं होती-
 शाहके सामने नहीं लाई जाती। बाद-
 ज़ाँ एक दिन-उस दिन भी शायद इसही
 तरह का पूरा चाद अपनी चांदनी से हुस्न
 परस्तों की आतिश इश्क को भड़का रहा
 था-शाहजादा सलीम 'यहां' जहां 'यह
 कब्र दिखाई देती है, उस वक्त यहां सग-
 मरमरे का एक चबूतरा बना हुआ था-
 उस चबूतरे पर तकिये के सहारे बैठा हुआ
 कुछ सोच रहा था। फीरोजी रङ्गका ओ-
 ढना ओढे हुए दो लौंडियां शाहजादे के
 पावदेवारहीं थीं, उनको देखनेसे ऐसा मा-
 लूम होता था कि गोया वहिश्तसेंदा परिया
 उतर आई हैं। इतनेही में एक लौंडी एक

नाजुक अदाम नई लौंड़ी को साथ लियेहु-
ए शाहजादे के पास आई, और दस्तूर के
मुआफिक को निसकरके अर्ज किया ।

“क्या ईरान की लौंड़ी पर बादशाह की
मेहरबानी होगी ?”

‘शाहजादे ने कहा ‘कहा है वह नाजनी ?’

लौंड़ी आहिस्ता २ आगे बढ़ी और शाह-
जादे की कदमवोसी हासिल की । शाहजादे
ने उस शरमीले बदन को इस तरह देखा
कि गोया चादका टुकड़ा उतर आया है ।
पहिले तो एक नज़र से उस परी को देखते
रहे फिर उसका हाथ पकड़कर पास बिठ-
लाया । उस परीतिमसाल के वह गुलाबी
गाल, कि जिन पर-से हुस्न व जमाल

टपका पड़ता था,—आहूचश्म और घूँघरवाले काले २ बाल शाहजादे की नजरो में खुदाई नूर का नमूना थे । बड़ी खातिर से ईरानी लौंडी की ठोड़ी पकड़ कर उसका मुँह अपनी तरफ़ को फेरा और देखते २ आहिस्ता २ बोले “ नाज़नी ! तुम्हारा नाम क्या है ? ”

नई लौंडी ने आखे नीचीकर लीं—इसका सबब यह था कि इतने दिन से जिसका नाम बराबर सुन रही थी जिसका दिल खुश करने के लिये इतने दिन से नाचना गाना सीखा, कई तरह की कारीगरी सीखी, क्या आज उस ही शाहजादे से आंख मिलाकर बात कर सकती है ; यही सबब था जो शिर झुकाकर आहिस्ते से बोली

“नाम तो याद नही है । सरकार बहुत छोटे पन में वालिदेन से अलहदा होकर हजूर की खिदमत करनेको हिन्दोस्तान में आई; सिर्फ इतनाही मालूम है कि— शाहजादे की कनीज हूँ ।”

“तुम बादशाहकीभी बादशाह होगी, तुम्हारा नाम मैं बतलाता हूँ ।”

वह लौंढी जो इस नई कनीजको साथ लाईथी दस्तवस्ता अर्ज करने लगी—

“शाहजादेसाहब ! गुस्ताखी मुआफ हो, इस परी का रंग गुल-अनारसा है, प्रस ऐसाही कुछ नाम रखदिया जावै ।”

सलीमने हँसकर कहा “वेशक! तुम्हारी राय ठीक है, आजसे इनका नाम अनामकली हुआ” शाहजादेने यह कहकर उठ

खुबसूरत लवेमुवारकपरं मुहब्बतकीमुंहर
करदी। लाहौरकी अनारकली इसही परी
के नाम को आजतक रोशन कर रही है।

तीसरा परिच्छेद।

बाद छै. वर्ष के एक दिन—शायद वह
गत भी पूरेबादकी थी, इस ही तरह से
हरसू पपड़ये बोल रहे थे और इसही बाग-
से सवेरे के गुलाबोंकी महक आकर भीगी
हुई हवा को खुशबूदार बनारही थी—
बादशाह इसही बाग में टहलने को आये
थे। अब उनको कोई भी शाहजादा सली-
म नहीं कहता अब तो वह जहांगीर
बनकर दिल्ली के तख्तपर बैठे हैं। साथ
में कोई नहीं, अकेले ही बाग में घूमते
हैं। मालूम होता है कि—उस दिन बाद-

शाह का मिजाज शरीफ नहीं था । क्योंकि कुल हिन्दोस्तानके बादशाहका मिजाज शरीफ रहना जरा मुश्किल बात है । बादशाह के दिल पर किसी रजने असर किया था इसही लिये वह नाखुश होकर अकेले टहल रहे थे । दो साल तक जगोजदल में मुव्तला रहकर इस वक्त आराम करने के लिये लाहौर के दीलतखाने में आये हैं ॥

हुजूर आली टहलकर महल को वापिस जा रहे थे कि उन्होंने एक तरफ से कानाफूसी की आवाज सुनी । जैसे कोई बड़े खोफ के मारे किसी से कुछ कह रहा हो बादशाह को खटका हुआ और वह आहिस्तासे उस आवाज को ताके हुए उस संगमरमर के घवूतरे के नजदीक जाकर देखते

हैं कि-वैसा-वैसा या घर-घेराना हो गया। देखा कि-अनारकली बेगम एक जवान आदमी का हाथ पकड़े हुए मुहब्बत से कह रही है,

“नाउम्मेद मत हो, मैं तुमको भूली नहीं हूँ। हमेशा बादशाह के पास रहने से इतना वक्त नहीं मिलता कि-किसी वक्त तुमसे मिलूँ, यही सबब है जो इतने दिन तक तुमसे नहीं मिल सकी, आज जरा फुरसत पाकर यहाँ आई हूँ, अगर बादशाह को मालूम हो जाय तो—”

बादशाह पर अब चुप नहीं रहा गया और गुस्से से बोल उठे “उफ! फाहशा!” बादशाह को देखते ही वह जवान अनारकली का हाथ छोड़ कर इस तरह भागा कि जैसे हिरन का चच्चा शेर की

देखकर चौकड़ी भरता है। दरख्तों के बीच होकर वह एक लहमे में गायब होगया और अनारकली बेहोस होकर बादशाह के कदमों में गिरपड़ी। गुस्से के मारे बादशाह की आँख जातीरही। तमाम हिन्दोस्तान का फतह करने वाला शहंशाह जहागीर। उसकी बेगम का यह चालचलन ?

बादशाह दीवाना होगया म्यानसे तलवार निकाली, लेकिन फौरन उसको छोड़कर खुद व खुद कहने लगा।
 - इस नापाक के खूनसे मैं अपने हाथ लाल नहीं करूंगा, यह बेहतर होगा के कोई नापाक ही इस बढतमीज को दुनिया से दूर करदे।
 - जहागीर ने अनारकली को देखा।

नहीं और महल में पहुंच एक ख्वाजे-सरा को पुकार कर कहा;

“उस सगमरमर के चबूतरे पर एक औरत पड़ी हुई है, उसको अभी इसी हालत में चबूतरे के नीचेही जमीनदोज कर दो।” दिलही दिल में कहा, जहापर हम दोनोमें सुहव्वत पैदा हुई थी, अब उस ही चबूतरेपर इसका खातमा होना चाहिये”।

पूनोंकी शवका चाद उसवक्तभी अनारकली के सरपर अपनी किरनोंको डालरहाथा।

चौथा परिच्छेद ।

बाद दो दिन के एक रुक्का बाद-शाह को मिला । इसको अनारकली ने अपने हाथ से लिखाथा । मौत से कुछ ही देर पहिले उस बदकिस्मत ने आव-

दीदा होकर शौहर जहांगीर को लिखा है,
 “शौहर जिसके चलन पर शकीदा होजाय
 उसका मरनाही बेतरह है; एक मर्त्तव जिस
 का यकीन जातारहा, फिर किसी तौर उस
 पर यकीन नहीं होता । उस कुल दुनिया
 के मालिक से जाकर मैं अर्ज करूंगी के
 मेरे शौहर को हमेशा शादी रहे ।”

बादशाह रुक्केके मतलबको अच्छीतरह
 नहीं समझ सका। क्या वाकई मे अनारकली
 फाहशाथी ? नामुमकिन । लेकिन आंखोंसे
 कुल बात देखी और कानों से सुनी है फिर
 क्यों उसका यकीन न किया जाय ।

श्याम होतेही जहांगीर वहा गया
 जहा पर उस परी पैकर की कन्न बनाई
 गईथी, उस वक्त क्या देखता है के एक

नौजवान हाथों में फूल लिये हुए उस कन्न की तरफ को चला आता है जवान को देखते ही बादशाह आग बबूला हो गया । यह वही था कि जिसने पौशीदा तौरपर अनारकली से बात की थी ।

लेकिन जवान ने किसीका कुछ खोफ न माना, बलके आहिस्तासे नजदीक आकर आदाब के लिये कुछ एक सर झुकाया, बादअजा उन फूलों से अनारकली की कन्न का सिंगार करने लगा । बादशाह उस जवान की यह हालत देखकर हैरत में आया और चेसब्रीसे दरियाफत किया "कोन है"

जवान ने चुपचाप रहकर कन्न को पूरी तौर से सजाया और फिर घुटनों के बल बैठ गया । बादशाह ने बेताव होकर कहा,

“तुम कौन हो ?” बादशाह की तरफ मु-
खातिब होकर जवान ने साफ-रे कहा, “वे-
कुसूर सिर्फ शकही के जरिये जिसको इस
दुनियां से रुख्सत कर दिया है, जिसका
लायक चाहनेवाला इस सरायफानी में
मिलना मुशिकल है, आपकी उस अना-
रकली बेगमका मैं हकीकी भाई हूँ मेरा नाम
शफीउद्दीन अहमद है मैंने सुना था कि वह न
जहापनाहकी बेगम हुई है, यही संभव था
जो उसके पास से कुछ लेने के लिये
आया था, अब हज़ूर से यही गुजारिश
है कि मुझको सताइयेगा नहीं, मेरी उस
हकीकी वहनको के जिसका जिस्म फूलों
से भी ज्यादा मुलायम था तुम्ह सगादिल
ने पत्थरों से दबा दिया लेकिन मैं तेरी नाम

वरी को फूलों से ढकने के लिये आया हूँ,
 अब ज्यादा सलीमपर नहीं सुना गया ।
 आसमान के तारे, महल दुमहलोके बुर्ज,
 बाग के दरख्त उसकी आखों के सामने
 से गायब होगये ।

“अफसोस प्यारी अनारकली” कहकर
 बादशाह शफीउद्दीन की छातीपर गिरपड़ा
 कहानी सुनने में अत्यन्तही मगन हो-
 गया था । अचानक घंटी की टंटननन
 टंटननन सुनाई दी । मेरे उतरने का स्टेश-
 न आ गया । शीघ्रता से भीजीहुई अचक-
 न और चादर जूतेको सँभालता हुआ
 गाड़ी से उतरपड़ा ।

समाप्त ।

